

वीरंगना



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा पत्रिका - 75वाँ अंक
वर्ष 2024-25

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, मध्य प्रदेश, लेखा
भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002



वीरांगना पत्रिका के 74वें अंक का विमोचन करते हुए उप-महालेखाकार/प्रशासन एवं महालेखाकार

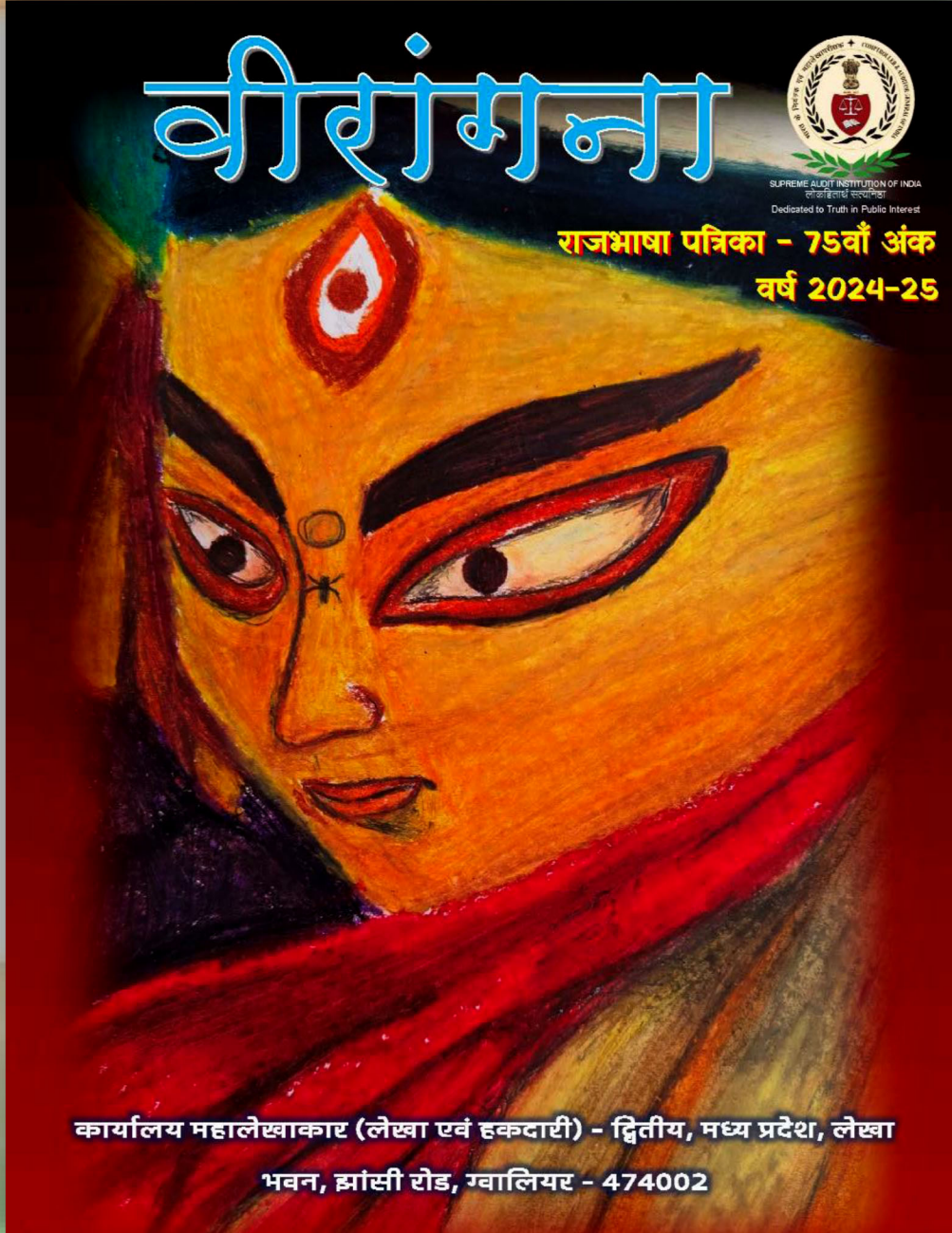


नराकास, ग्वालियर द्वारा वर्ष 2024 के लिए वीरांगना के 74वें अंक का प्रथम पुरस्कार, शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए उप-महालेखाकार/प्रशासन

वीरंगना

राजभाषा पत्रिका - 75 वाँ अंक

वर्ष 2024-25



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002

ई-मेल : agaemadhyapraesh2@cag.gov.in

वीरगंगा पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सिद्धार्थ बोन्डाडे
महालेखाकार

संरक्षक

श्री हरजिन्दर सिंह
उप-महालेखाकार/प्रशासन

परामर्शदात्री समिति

श्री परमानंद आर्य, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
सुश्री नसरीन हनफी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री अतुल भार्गव
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन

संपादक

श्री नीरज कुमार
हिंदी अधिकारी

सह संपादक एवं पत्रिका अभिकल्पन

श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री दीप्ती वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ - कु. वास्तविक कौशल, पुत्र श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा चित्रित

-: अस्वीकरण :-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक, परामर्शदात्री समिति तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	संदेश	संदेश देने वाले अधिकारी का नाम	पृ.सं.
01	हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश		01
02	महालेखाकार का संदेश	श्री सिद्धार्थ बोन्डाडे	03
03	उप-महालेखाकार/प्रशासन का संदेश	श्री हरजिन्दर सिंह	04
04	प्रधान संपादक की कलम से	श्री अतुल भार्गव, वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन	05
05	संपादकीय	श्री नीरज कुमार, हिंदी अधिकारी	06
06	आपके पत्र		07

गद्य संकलन

रचना	रचनाकार	
07	लंगड़ा चश्मा	हास्य-व्यंग्य श्री जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति', पर्यवेक्षक, से.नि. 09
08	भाषाओं का मजेदार सफर	लेख श्रीमती पुष्पा, पत्नी श्री रूपेन्द्र कौशल 13
09	यह रावण कब मरेगा?	कहानी श्री विनेश कुमार, पिता, श्री हेमंत कुमार 18
10	महिमा की राहें मृत्यु तक जाती हैं	लेख श्री नीरज नायक, सहायक लेखा अधिकारी 21
11	पीछे छूटती किताबों की दुनिया	लेख सुश्री दीप्ती वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक 23
12	Content या Content	लेख श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक 26
13	संस्कृति संरक्षण की आवश्यकता	लेख श्रीमती अनीता करकरे, अतिथि रचनाकार 31
14	हवाबाजी	हास्य-व्यंग्य श्री रितेश कुमार सविता, एम.टी.एस. 34
15	समझदारी का सफर	कहानी कु. वास्तविक कौशल, पुत्र श्री रूपेन्द्र कौशल 35
16	उलझनें	लेख सुश्री श्रुति पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी 37
17	हादसा	लेख श्री नवीन कौशिक, सहायक लेखा अधिकारी 39
18	आत्म-विश्वास	लेख श्री विद्या प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी 42
19	मंगल गीत	कहानी श्रीमती अर्चि शर्मा, पत्नी श्री नवीन कौशिक 44
20	महाबोधि	यात्रा- श्रीमती स्वीटी कुमारी गुप्ता, पत्नी श्री विद्या 46 संस्मरण प्रकाश
21	मित्रता की पात्रता	लेख सुश्री आकांक्षा सिकरवार, अतिथि रचनाकार 49
22	बाबा वैद्यनाथ धाम	यात्रा- सुश्री पुष्पा साहू, कनिष्ठ अनुवादक 50 संस्मरण
23	सोशल मीडिया का जाल	व्यंग्य श्री निखिलेश कुमार रजक, वरिष्ठ लेखापाल 53

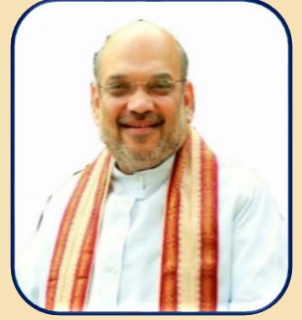
पद्य संकलन

23	क्षुब्ध	श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल 56
24	प्रेम के दो बोल	श्री विवेक सिंघल, सहायक लेखा अधिकारी 58

25	विज्ञापनों का अंधाधुंध प्रसार	सुश्री ज्योति यादव, लेखापाल	60
26	कुछ लोगों की भीड़	श्री राहुल मैत्रेय, वरिष्ठ लेखापाल	61
27	कानून की सैर	श्रीमती पुष्पा, पत्नी श्री रूपेन्द्र कौशल	62
28	सफर	श्रीमती रिचा देवी, पत्नी श्री अमित यादव	64
29	दिखावा	श्री विद्या प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी	65
30	नारी की व्यथा	श्रीमती सौ. अन्नपूर्णा नगरकर, अतिथि रचनाकार	66
31	जिंदगी की अजीब उलझन	श्री प्रदीप यादव, सहायक लेखा अधिकारी	67
32	बीड़ी-सिगरेट	श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	68
33	उछल कर आसमां छू लो	सुश्री काजल वर्मा, सहायक लेखा अधिकारी	70
34	फेक न्यूज़	श्रीमती वंदना अग्रवाल, पत्नी, श्री विवेक सिंघल	72
35	संघर्ष	श्री अमित यादव, सहायक लेखा अधिकारी	73
36	मेरी बेटी के लिए एक प्रार्थना	श्री नवीन कौशिक, सहायक लेखा अधिकारी	74
37	कभी कहा नहीं मैंने	सुश्री पुष्पा साहू, कनिष्ठ अनुवादक	75
38	संकल्प	श्री विनेश कुमार, पिता, श्री हेमंत कुमार	76
39	भोपाल-मेरा घर	सुश्री ज्योति यादव, लेखापाल	77
40	प्रकृति	कु. वास्तविक कौशल, पुत्र, श्री रूपेन्द्र कौशल	78
41	रेल-यात्रा	सुश्री पुष्पा साहू, कनिष्ठ अनुवादक	80
42	तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो	श्री कृष्ण कुमार जांगिड़, सहायक लेखा अधिकारी	82
43	दफ्तर की कहानी	श्री आविद खान, एम.टी.एस.	83
44	जब कॉल तुम्हारी आती थी	श्री जय प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी	84
45	शिक्षा व्यवस्था	सुश्री दीप्ती वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक	86
46	हिंदी हमारी शान	सुश्री नसरीन हनफी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	87
47	प्रभु का अंश	सुश्री वर्षा कंवर, बहन, श्री गौरव प्रताप सिंह	88
कार्यालयीन गतिविधियां			
48	खेलकूद प्रतिस्पर्धा	कल्याण अनुभाग के सौजन्य से	89
49	स्वतंत्रता दिवस-2024		91
50	हिंदी पखवाड़े - 2024 की झलकियां		93
51	ऑडिट सप्ताह - 2024		99
52	नराकास, ग्वालियर में कार्यालय की उपलब्धियां		111

हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

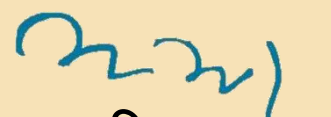
साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

संदेश

श्री सिद्धार्थ बोन्दाडे

महालेखाकार
एवं मुख्य संरक्षक



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'वीरांगना' का 75वां अंक प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका का यह अंक न केवल हमारे प्रयासों का प्रतीक है, बल्कि यह दर्शाता है कि हम सभी मिलकर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी जिम्मेदारी सतत रूप से निभा रहे हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का जुड़ाव बढ़ाना और उसे प्रोत्साहित करना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। इसमें प्रकाशित रचनाएँ - चाहे वह लेख हों, कविताएँ हों, या कहानियाँ - हिंदी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए यह भी बताती हैं कि हम किस तरह अपनी भाषा को सम्मानित करते हुए उसे समृद्ध कर रहे हैं।

इस अंक में कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों की रचनाएँ शामिल हैं, जो पत्रिका के प्रकाशन की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं जोकि निश्चित रूप से पाठकों को रुचिकर और प्रेरणादायक लगेंगी। मैं सभी रचनाकारों को उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए बधाई देता हूँ।

साथ ही, मैं सभी पाठकों से यह आग्रह करता हूँ कि आप पत्रिका को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव अवश्य साझा करें जोकि भविष्य में इस पत्रिका को और भी रोचक और समृद्ध बनाने के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

'वीरांगना' के 75वें अंक की सफलता में संपादक मंडल का महत्वपूर्ण योगदान है। संपादक मंडल ने इस अंक को व्यवस्थित और सशक्त रूप से प्रस्तुत करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनके समर्पण और मेहनत के बिना यह संभव नहीं था। मैं संपादक मंडल और सभी सहयोगियों को उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूँ।

आशा है कि हम हिंदी भाषा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के संकल्प को और मजबूत करेंगे और इसे भविष्य में और समृद्ध बनाएंगे।

शुभकामनाओं सहित।

महालेखाकार
कार्यालय (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय,
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

संदेश

श्री हरजिन्दर सिंह
उप-महालेखाकार/प्रशासन
एवं संरक्षक



हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'वीरांगना' के 75वें अंक का प्रकाशन पर मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। किसी भी 75वें अंक का अपना ही अलग महत्व होता है और जिस तरह से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने अपनी रचनाओं का योगदान इस पत्रिका में दिया है उससे पत्रिका के 75वें अंक होने की झलक पत्रिका के इस अंक में साफ झलकती है। इस योगदान को देखकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

वीरांगना के 75वें अंक के साथ ही इस वर्ष 2024 में हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुए भी पचहत्तर वर्ष पूर्ण होना भी इस पत्रिका को विशेष बनाता है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा पत्रिका की राजभाषा के कार्यान्वयन में अपनी एक विशेष भूमिका होती है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानियां एवं कविताएं न सिर्फ अपनी रचनात्मक सोच को विस्तार देते हैं बल्कि राजभाषा हिंदी से जुड़ाव का स्पंदन भी महसूस कराते हैं।

वर्ष के दौरान कार्यालय में बहुत सी गतिविधियां होती हैं, इन सभी गतिविधियों की झलकियां पत्रिका के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा पाठकों को अन्य कई रुचिकर विषयों पर भी सामग्री पढ़ने को मिलेगी।

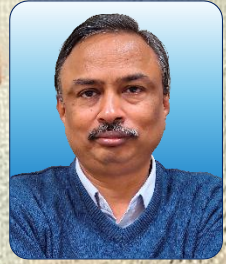
वीरांगना के 75वें अंक की सफलता में कार्यालय के रचनाकारों तथा संपादक मंडल का महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिका की अभिकल्पना एवं प्रकाशन प्रक्रिया में जुड़े अधिकारी, कर्मचारी एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। साथ ही आशा करता हूँ कि भविष्य में भी सभी के सहयोग से पत्रिका और भी रोचक और समृद्ध बनी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

उप-महालेखाकार/प्रशासन
कार्यालय (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

प्रधान संपादक की कलम से

श्री अतुल भार्गव
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन



राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष सादर निवेदित है।

प्रत्येक मनुष्य में विचारों का निरंतर मंथन चलता रहता है जिनके संप्रेषण के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। कार्यालय की पत्रिका वह सुंदर माध्यम है जो कार्यालय के कर्मियों की आंतरिक सृजनशीलता के प्रस्फुटन हेतु मंच प्रदान कर उनकी अभिव्यक्ति को मुखर और स्पंदनशील बनाती है।

'वीरांगना' का प्रस्तुत अंक साहित्य की विविध विधाओं यथा-लेख, कविताएँ और व्यंग्य से अलंकृत एक सुंदर संग्रह है जो पाठकों के हृदय को स्फुरित करेगा। पत्रिका में विविध विषयों को सहेजा गया है जो रोचक और मनोरम के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी है। सुश्री दीप्ती वर्मा के लेख "पीछे छूटती किताबों की दुनिया" में ज्ञान का भंडार कहे जाने वाली किताबों में लोगों की रुचि किस तरह कम हो रही है उस पर प्रकाश डाला गया है, इसी प्रकार श्री नवीन कौशिक के लेख "हादसा" में आधुनिकता एवं पौराणिकता का समावेश दर्शाया है। जहाँ एक ओर श्री जे.जे. श्रीवास्तव ने "लंगड़ा चश्मा" से स्वयं पर व्यंग्य किया है वहीं दूसरी ओर श्री निखिलेश रजक ने "सोशल मीडिया के जाल" से आज समाज में सोशल मीडिया पर चलाई जा रही भ्रान्तियों पर तंज कसा है। इसी प्रकार श्रीमती पुष्पा के लेख "भाषाओं के मजेदार सफर" से विभिन्न भाषाओं में पाई जाने वाली समरूपता से परिचय कराया है। कविताओं में एक से बढ़ कर एक रचनाएँ लिखी गई हैं जहाँ श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा की कविता "क्षुब्ध" हृदय को झकझोर देती है वहीं श्री रूपेन्द्र कौशल की कविता "बीड़ी-सिगरेट" गुदगुदाती है। इसी प्रकार, अन्य सभी रचनाएँ भी अप्रतिम हैं एवं पाठकवृंद का ध्यानाकर्षित करेंगी।

पत्रिका के नूतन अंक के प्रकाशन पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने विभागीय दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए राजभाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि वीरांगना के विगत अंकों की तरह ही इस अंक को भी आप सभी का स्नेह प्राप्त होगा। पाठकों के अमूल्य सुझाव पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में पाथेय सिद्ध होंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अतुल भार्गव



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥

हिंदी साहित्य के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चंद्र की ये पंक्तियां पढ़कर सहज ही हृदय के तार झंकृत होने लगते हैं, राजभाषा हिंदी के सागर में मन गोते लगाने लगता है। इसी समृद्ध परंपरा के क्रम में कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'वीरांगना' के 75वें हीरक जयंती अंक के प्रकाशन पर मन आंदोलित हो रहा है। देश को जोड़ने वाली अपनी हिंदी के संवर्धन में हमारे कार्यालय के इस प्रयास पर कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को शुभकामनाएं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं बहुरंगी एवं भावविभोर कर देने वाली हैं। संपादक मंडल के सहयोग एवं उच्चाधिकारियों के संरक्षण एवं मार्गदर्शन हेतु मैं हृदय से आभारी हूं। आशा है कि पाठकगण 'वीरांगना' के इस अंक पर भी हमेशा की तरह अपना भरपूर स्नेह बरसाएंगे एवं अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें लाभान्वित करेंगे। इसी आशा से ये अंक आपको सौंपते हुए मैं उल्लासित हूं।

शुभकामनाओं सहित।

आपके पत्र

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74वें संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक का व्यंग्य-संस्मरण, “कालः क्रीडति-समय का खेल” श्री लाल मणि शर्मा, सेवानिवृत्त टीआई का लेख “संगति का जीवन में महत्व” श्री कृष्ण कुमार जांगिड़, सहायक लेखा अधिकारी की कविता “अंतर्मन” तथा श्रीमती रंजना ठाकुर अतिथि रचनाकार की कविता “स्त्री” प्रशंसनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। श्री रूपेंद्र कुमार कौशल की अभिकल्पना, संपादन और पत्रिका की मुद्रण गुणवत्ता उच्च कोटि की है, हम पूरे संपादक मंडल और रचनाकारों की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं और भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- श्री योगेश कुमार मिश्र, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) असम, गुवाहाटी

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74वें अंक की ई पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च श्रेणी की हैं। विशेषकर मंजिल, तुम, हिंदी से पहचान हमारी, मेरी माँ, आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्च श्रेणी की हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- श्री शैलेन्द्र नाथ, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार लेखा परीक्षा, झारखंड, रांची

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका “वीरांगना” का 74वां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय हैं। पत्रिका का डिजिटल स्वरूप आकर्षक है। श्री जे.जे. श्रीवास्तव की रचना “अनोखा इंटरव्यू” मनोरंजक है तथा पत्रिका में प्रकाशित श्रीमती पुष्पा की रचना “मंजिल” प्रेरणादायक है। श्री रूपेंद्र कौशल की कविता “तुम” आनंददायी है। राजभाषा के प्रचार व प्रसार के लिए आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। भविष्य में इस पत्रिका की संवृद्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, चेन्नै

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट रोचक एवं सराहनीय है। गद्य रचनाओं में सुश्री दीप्ति वर्मा द्वारा लिखित लेख कृतज्ञता, श्री लालमणि शर्मा द्वारा लिखित लेख संगति का जीवन में महत्व, श्री मदन गोपाल शर्मा द्वारा लिखित लेख बयानों के थप्पड़ तथा पद्य रचनाओं में देवेंद्र कुमार मिश्रा द्वारा रचित ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी एवं श्री कृष्ण कुमार जांगिड़ द्वारा रचित कविता अंतर्मन विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। शेष रचनाएँ भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ का विवरण रोचक है। पत्रिका की आंतरिक साज सज्जा में कार्यालयीन गतिविधियों एवं रचनाओं से संबंधित छायाचित्र आकर्षक हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74 वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं। एक सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय हैदराबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी की पत्रिका वीरांगना का 74वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद, इस अंक का आवरण पृष्ठ, साज सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से समृद्ध छायाचित्र अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट मनमोहक एवं रोचक हैं। श्री जे.जे. श्रीवास्तव की रचना “अनोखा इंटरव्यू”, श्रीमती अनीता करकरे की “रंगोली-भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत”, श्री लाल शर्मा की “संगति का जीवन में महत्व”, श्री देवेन्द्र कुमार मिश्र की “ग्लोबल वार्मिंग” की चेतावनी एवं श्री विवेक सिंघल की “बिटिया” रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्री रूपेंद्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा किया गया पत्रिका अभिकल्पन उत्कृष्ट है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

- सुश्री वानी वैसालक्षी पीजे, हिंदी अधिकारी, कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) मुंबई

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज सज्जा सुंदर एवं अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ विशेष रूप से सुश्री प्रीति सिंह की रचना “हिंदी के प्रचार प्रतिष्ठा में अहिन्दी भाषियों की भूमिका”, श्रीमती पुष्पा द्वारा रचित रचना “मंजिल”, श्री रूपेंद्र कौशल की स्वरचित रचना “कालः क्रीडति”, सुश्री ब्यूटी अंकिता की रचना “हाशि ए पर बैठी हूँ” एवं श्री विद्या प्रकाश की रचना “पेंशन” अभूतपूर्व हैं। अन्य सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

- हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखंड, रांची

आपकी राजभाषा हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74 वें अंक के ई संस्करण की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। वीरांगना उत्कृष्ट रचनाओं का सुंदर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रम ओके चित्र अत्यंत सुखद एवं अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएं पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण हैं। इनमें से अनोखा इंटरव्यू, बयानों के थप्पड़, हिंदी से पहचान हमारी, हाशि ए पर बैठी हूँ और चार लोग विशेषकर अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी। पत्रिका के संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

- श्री सुदर्शन साहू, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री प्रीति सिंह की “हिंदी के प्रचार-प्रतिष्ठा में अहिन्दी भाषियों की भूमिका”, श्री गौरव कुमार पाण्डेय की “दुर्भाग्य”, श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा की “ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी” एवं श्री दीप्ति वर्मा की “कृतज्ञता” उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिये हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

- सुश्री प्रियंका गोस्वामी, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका वीरांगना के 74वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- राजही पट्टनायक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद

लंगड़ा चश्मा

हास्य व्यंग्य

श्री जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'

पर्यवेक्षक (सेवा निवृत्त)



मेरे नजर के चश्मे की एक टाँग क्या टूटी कि लोगों ने मेरा जीना हराम कर दिया। कार्यालय के सभी कर्मचारी, आगंतुकों के पूछने पर बताते थे - "आप कमरा नम्बर तीन में चले जाइए, वहाँ आपको "एक टाँग का चश्मा लगाए हुए एक सज्जन मिलेंगे, बस वही, श्रीवास्तव साहब हैं।"

मेरे धैर्य की सीमा तब समाप्त हो गई, जब एक आगंतुक ने मुझसे ही आकर पूछा- "क्या एक टाँग का चश्मा लगाने वाले श्रीवास्तवजी आप ही हैं?" उसने यह प्रश्न ऐसे किया जैसे मैं पैदा ही एक टाँग का चश्मा पहने हुए हुआ था।

मैं अपने सभी काम छोड़कर सीधा अपने अधिकारी के पास पहुंचा और उनसे

अपने "इकलौते दुश्मन" चश्मे की मरम्मत कराने के लिए एक घंटे का अवकाश लिया। पाँच मिनट बाद मैं अपनी बारह वर्षीय एवं हॉर्न को छोड़कर सभी पुर्जे बजाने वाली लूना के कान अपने पुत्र संदेश के कानों की तरह उमेठता हुआ 'सूरदास मार्ग' पर, पन्द्रह-बीस किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से 'जीवाजी चौक' की ओर जा रहा था। लूना की आवाज सुनकर कोई अंधा व्यक्ति यही समझता कि लूना में सायलेंसर नहीं है और वह कम से कम पचास किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चल रही है।

अपने उस लंगड़े चश्मे को लगाकर लूना चलाने में मुझे इतनी अधिक परेशानी हो रही थी, जितनी शायद किसी लंगड़े व्यक्ति को कंधे पर बैठाकर चलने से भी नहीं होती। मैं बड़ी सावधानी से अपने टेढ़े-मेढ़े चश्मे को एक हाथ में सम्हालता हुआ, शहर की गड़बड़ेदार सड़कों पर, सामने देखते हुए चला जा रहा था। उस समय मेरी स्थिति कुछ ऐसी दिखाई दे रही थी, जैसे कोई भिखारी अपनी लूना पर, अपनी खोई हुई अठन्नी ढूँढ़ने निकला हो। मेरा ध्यान अपनी

लूना तथा सड़क पर दौड़ रहे अन्य वाहनों पर कम, अपने प्राण प्यारे चश्मे पर अधिक था। यही कारण था कि मैं उस चश्मे के कारण सामने अचानक रुक गए

चश्मा लगाकर मैंने ज्योंही लूना पर नजर डाली, मुझे लूना कई टुकड़ों में दिखाई दी। मैं घबरा कर विचार करने लगा कि छोटी सी दुर्घटना के कारण "लूना" के इतने टुकड़े कैसे हो गए? मैंने अपना 'केस' आँखों से लेकर, दिमाग को सौंप दिया।

चौपाये (कार) को नहीं देख पाया और एक पल में ही मुख्य-मुख्य बीस-पच्चीस देवी-देवताओं को स्मरण करने के पश्चात भी मेरी 'खटारा' लूना उस चौपाये को छू भर गई और कार में बैठे हुए आदमी जैसी चीज ने, अपना चौखटा खिड़की से निकालकर मुझे ऐसे खतरनाक तरीके से देखा, जैसे रात को घर दर से पहुँचने पर मेरी बीवी मुझे देखती है। मेरी टाँगें ऐसे कंप गई, मानो किसी ने मेरे सिर पर एक क्विंटल की बोरी रख दी हो। मेरे हृदय की धड़कन कुछ समय के लिए 'पॉज' ले गई। मैं बेहद घबरा गया और मुझे घबराया हुआ देखकर चौपाये के मालिक को मुझ पर तरस आ गया। शायद वह यह विचार कर रहा होगा कि इस अंधे

को क्या पीटना। कहीं गुस्से में कनपटी पर जोरदार हस्त रेखा छप गई तो कानों का बल्ब भी फ्यूज न हो जाए। उसने अपना चौपाया आगे बढ़ा दिया किन्तु इस हल्के से झटके के कारण मेरा लंगड़ा चश्मा लड़खड़ा कर धरती माँ की गोद में आ गिरा। चश्मा गिरते ही मेरी दृष्टि की ट्यूबलाईट बुझ गई। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सामने रंगीन टेलीविजन एकाएक श्याम श्वेत हो गया हो। पेड़ों के पत्ते हरे से, काले रंग के हो गए। गुब्बारे बेचने वाला एकाएक काले सफेद गुब्बारे बेचने लगा। जो दो मिनट पूर्व तक रंग-बिरंगे गुब्बारे बेच रहा था।

मैंने अपनी 'स्टेण्ड-हीन' लूना को लाकर, सड़क के किनारे के एक वृक्ष से टिका दिया और 'दुर्घटना स्थल' पर बैठकर दोनों हाथों से अपना चश्मा ऐसे ढूँढने लगा जैसे कोई भिखारी जमीन पर फैल गया आटा, अपने दोनों हाथों से बटोर रहा हो। जैसे-तैसे मुझे

अपना लंगड़ा चश्मा खोजने में सफलता मिल गई। मैं ऐसे प्रसन्न हो गया, मानो मुंबई पुलिस ने किसी बड़े आतंकवादी को खोज लिया हो। मैंने चश्मा उठाया और खुशी-खुशी उसे वहाँ रख दिया, जिसे लगाने के बाद मुझे यह ज्ञात होता था कि दुनिया में मेरे अतिरिक्त कुछ अन्य जीव-जंतु भी हैं और श्याम श्वेत रंग के अलावा कुछ अन्य रंग भी होते हैं।

चश्मा लगाकर मैंने ज्योंही लूना पर नजर डाली, मुझे लूना कई टुकड़ों में दिखाई दी। मैं घबरा

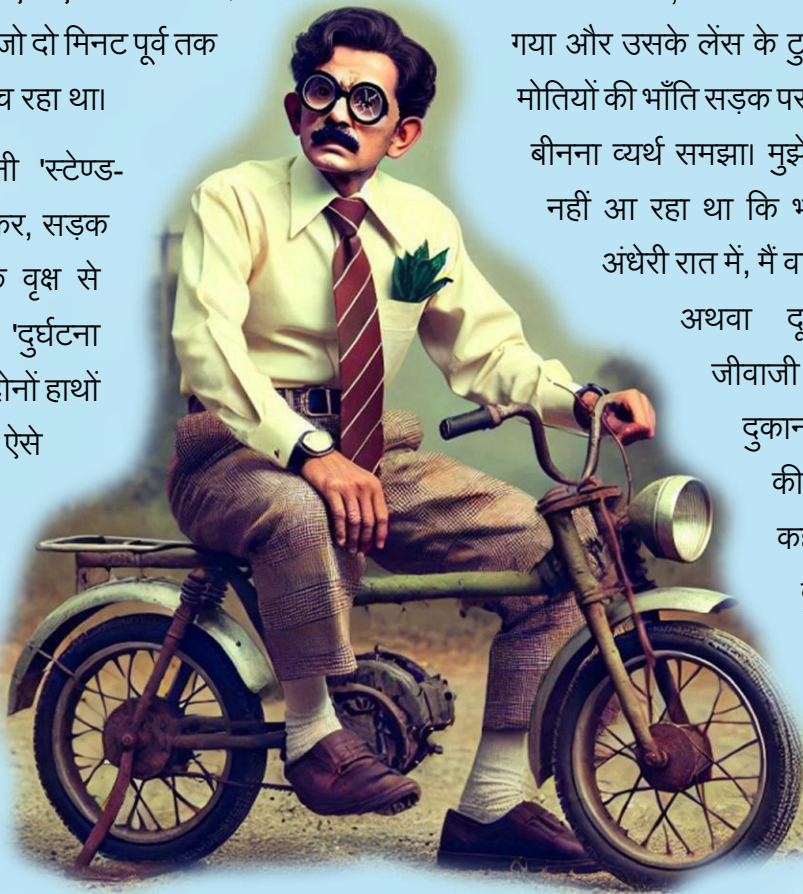
कर विचार करने लगा कि छोटी सी दुर्घटना के कारण "लूना" के इतने टुकड़े कैसे हो गए? मैंने अपना 'केस' आँखों से लेकर, दिमाग को सौंप दिया। तब जाकर ज्ञात हुआ कि लूना में कोई खराबी नहीं है, वरन मेरे चश्मे के शीशे के कई टुकड़े हो जाने के कारण लूना टुकड़ों में दिखाई दे रही है। मैंने चश्मे को उठाकर एक कान पर लटकाया और अपनी इंतजार कर रही लूना को सड़क पर ले आया। ज्योंही मैंने लूना को दौड़ा कर स्टार्ट किया, मेरा चश्मा पुनः धरती पकड़ हो गया और उसके लेंस के टुकड़े किसी माला के मोतियों की भाँति सड़क पर बिखर गए। मैंने उन्हें बीनना व्यर्थ समझा। मुझे अब यही समझ में नहीं आ रहा था कि भरी दोपहर की उस अंधेरी रात में, मैं वापस कार्यालय जाऊँ

अथवा दूसरा चश्मा लेने जीवाजी चौका क्योंकि दुकानदार से पुराने चश्मे की मरम्मत के लिए कहने का अर्थ, दुकानदार से अपनी मरम्मत करवाना।

भारत-पाक का युद्ध समाप्त हुआ। अंत में वोट इस पक्ष

में अधिक पड़े कि भविष्य में

रंगीन दुनिया देखना है तो शीघ्र नया चश्मा बनवा लिया जाए। वरना सुबह से रात तक अंधेरे में जीवन काटना आँखों के साथ ज्यादाती होगी। मैं लूना पर बैठकर किसी अंधाश्रम के लिये चंदा लेने के उद्देश्य से निकले किसी अंधे व्यक्ति की भाँति धीरे-धीरे जीवाजी चौक की तरफ चल दिया। इस विकराल परिस्थिति में लूना ने एक आदर्श "जीवन साथी" की भाँति मेरा साथ निभाया, क्योंकि उसके फटे सायलेंसर से निकलने वाली, कानों के पर्दे फाड़ देने



में सक्षम, कर्कश आवाज, अन्य वाहनों को अपने पास भी नहीं फटकने दे रही थी। अन्य वाहन मालिक मुझे ऐसे रास्ता दे रहे थे जैसे "मुख्यमंत्री" को निकलने के लिए भीड़ रास्ता देती जाती है।

खैर, जैसे-तैसे मैं जीवाजी चौक पहुँचा। अब मेरे सामने एक बड़ी समस्या यह आई कि मुझे वहाँ लगभग सभी दुकानें एक सी ही दिखाई दे रही थीं। प्रत्येक दुकान पर बोर्ड काले रंग का दिखाई दे रहा था, जिस पर कुछ भी लिखा हुआ नहीं था। मैं सोचने लगा कि इन बोर्डों पर वाकई कुछ लिखा हुआ नहीं है अथवा चश्मे के न होने के कारण मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।

तभी एक राहगीर मुझसे टकरा गया। सच तो यह था कि मैं ही उससे टकरा गया था। मैंने उससे माफी माँगी और बड़े अदब से प्रश्न किया "भाई साहब, यह 'टैगोर चश्मा हाउस' कहाँ पर है ?"

"क्यों। मजाक के 'मूड' में हो?"

"नहीं तो"

"तो क्या सूरदास की औलाद हो?"

"नहीं तो"

"तो क्या बिल्कुल अँगूठा टेक हो?"

"नहीं तो"

"तो क्या पागल हो?"

"क्यों?"

"तभी तो 'टैगोर चश्मा हाउस' के सामने खड़े होकर ही पूछ रहे हो कि टैगोर चश्मा हाउस कहाँ है। उसने मेरे मुँह के पास अपनी 'सूँड़' लाकर 'कम्पर्म' किया कि मैंने कहीं शराब तो नहीं पी हुई। मैंने भी अपना मुँह ऐसे खोल दिया जैसे उसे मुँह में बैठने का निमंत्रण दे रहा हूँ।

मैंने मन ही मन विचार किया कि कुछ भी सही, वह राहगीर यह तो बता गया कि टैगोर चश्मा हाउस सामने ही है। मैंने बिजली के एक स्तंभ के सहारे

अपनी लूना को टिका दिया और सामने वाली दुकान में तीर की तरह घुस गया। किन्तु तुरंत ही दुकान के बाहर आ गया क्योंकि गलती से मैं लेडीज चुटीलों की दुकान में घुस गया था और दुकानदार की तलाश में अंदर बढ़ते-बढ़ते कई सभ्य महिलाओं से टकरा गया था, जिस कारण वह मुझे दुकान के बाहर धकेलने के बाद भी सुसंस्कृत गालियाँ छाँट-छाँट कर दे रही थीं।

मैंने पुनः एक राहगीर की मदद ली और उसने मेरी मजबूरी को समझकर, मेरा हाथ पकड़ा और किसी अंधे की भाँति टैगोर चश्मा हाउस के अंदर तक छोड़ दिया। वह चलते-चलते दुकानदार से यह भी कह गया "अंकल यह अंधा आपकी दुकान के धोखे में पास वाली दुकान में घुस गया था और यहाँ औरतों ने....."।

"हाँ हाँ मैंने सब देखा था" दुकानदार ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अंदर लिया।

मैंने दुकानदार को अपने चश्मे के मुख्य समाचार सुनाए और तुरन्त नए चश्मे का 'आर्डर देकर दुकान से बाहर आ गया। मैं उस विद्युत स्तम्भ के पास पहुँचा, जहाँ पर मैंने अपनी बिना स्टैंड की लूना को टिकाया था। किन्तु मेरी लूना वहाँ पर नहीं थी। मैंने पास खड़े ठेले वाले से पूछा- भाई साहब। यहाँ पर मेरी लूना"

"वह तो नगर निगम वाले उठाकर ले गए। मैंने उनसे कहा भी था कि इस लूना को मत ले जाओ। यह एक किस्मत के मारे अंधे व्यक्ति की है" दुकानदार ने मुझे ऐसे निहारा जैसे किसी भिखारी को तरस भरी नजरों से देख रहा हो।

"हे भगवान। मेरी लूना ही मिली थी इन नगर निगम वालों को। सड़क पर पानी के जहाज तक खड़े रहते हैं, उन्हें तो कभी नहीं उठाते यह नगर निगम वाले। अब मैं इन नगर निगम वालों के ट्रक को कहाँ ढूँढ़ूँ, जबकि चश्मे के बिना तो मुझे आज ट्रक और

ट्रैक्टर में कोई फर्क ही नजर नहीं आ रहा। मेरी आँखों के दोनों कोनों से 'मोबिल ऑयल' रिसने लगा। मुंह से नगर निगम वालों के लिए छॉट-छॉटकर सभ्य एवं सुसंस्कृत गालियाँ किसी 'टूथपेस्ट' की तरह निकलने लगी। घबराहट के कारण मैं अपने फटे सायलेंसर जैसे खरखराते हुए गले से 'ऑटो-ऑटो' ऐसे चिल्लाने लगा, जैसे कुम्भ के मेले में किसी छोटे बच्चे के गुम हो जाने पर उसकी माँ "मुन्ना मुन्ना" चिल्लाकर इधर उधर भागती है।

"क्यों गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हो। 'हण्ड्रेड परसेंट' पागल हो क्या।" मेरे पीछे ही खड़े हुए ऑटो वाले ने मुझे डाँटते हुए कहा।

मैं खिसिया गया और मुड़कर ऑटो में घुस गया।

"अरे। क्या तुम्हारे दिमाग के नट-बोल्ट खुलकर कहीं खो गए हैं, जो मेरी सीट पर बैठ रहे हो" ऑटो वाले ने मुझे पुनः डाँटा।

दरअसल चश्मे के अभाव में मैं "सवारी सीट" के स्थान पर 'ड्रायवर सीट' पर बैठ गया था। मैंने भूल सुधार की और टटोलकर पीछे वाली सवारी सीट पर बैठकर उस बिजली के खंभे को नीचे से ऊपर तक ऐसे देखने लगा जैसे कहीं लूना खंभे पर तो नहीं चढ़ गई।

"कहाँ चलना है- "ऑटो वाला घुराकर बोला।

"जहन्नुम "मैं गुस्से से बोला।

"रास्ता बताते जाना-" वह ऑटो स्टार्ट करते हुए बोला।

मैं ऑटो वाले को 'लैफ्ट राईट' बताता हुआ घर आ गया। यद्यपि मुझे इस कार्य में बेहद परेशानी का सामना करना पड़ा। एक बार तो ऑटो वाले ने डाँटते हुए कह भी दिया कि पहली बार अपने घर जा रहे हो क्या?

अब मैं उसको क्या बताता कि मेरे बाबा का जन्म भी उसी मकान में हुआ है जहाँ पर मैं तुझे ले जा रहा हूँ। यह सब तो उस मुए चश्मे के कारण हो रहा है।

दो दिन तक मैं कार्यालय नहीं गया, क्योंकि कार्यालय में गलती होती तो अफसरों की डाँट खानी पड़ती। यद्यपि होनी को कौन टाल सकता है। इन दोनों दिन घर पर रहकर भी मैं तीनों पहर अपनी पत्नी व अन्य सदस्यों की डांट खाता रहा, क्योंकि घर पर मैं कभी किसी टेबल से टकरा जाता था या किसी अन्य सामान से टकराकर सामान तोड़ देता था। देखे तो नहीं, पर पत्नी ने बताया कि इन दो दिनों में मैंने आठ कप और छः शीशे के गिलास तोड़ दिये। टेलीविजन की टेबल गिरते-गिरते बची। खैर "पूछो न कैसे मैंने, दो दिन बिताए।"

तीसरे दिन मैंने ऑटो घर पर ही बुलवाया और जीवाजी चौक पर जाकर, अपना नया चश्मा उपयुक्त स्थान पर रखकर, एक बार पुनः उस मनहूस खम्भे को देखकर, नगर निगम वालों को अच्छी-अच्छी बंसियों गालियाँ देता हुआ कार्यालय जा पहुँचा। इन दो दिनों में मैं समझ चुका था कि "आँख है तो जहान हैं, वरना सब वीरान है।"

मैंने सीट पर बैठकर एक बार पुनः अपने नए चश्मे की सुंदरता को निहारा और उसे उपयुक्त स्थान पर रखने ही वाला था कि एक आगंतुक मेरे पास आकर खड़ा हो गया। मैंने उसे बैठने का इशारा करते हुए कहा- "कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

वह मुस्कुराहट बिखेरता हुआ बोला "सरा क्या एक टाँग का चश्मा पहनने वाले श्रीवास्तवजी आप ही हैं?"

भाषाओं का मजेदार सफर

लेख

श्रीमती पुष्पा

पत्नी, श्री रूपेंद्र कौशल



कभी सोचा है कि हमारी भाषाएँ इतनी अलग-अलग कैसे हैं? एक ही देश में रहते हुए भी हम अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं। कभी-कभी तो लगता है कि हम अलग-अलग ग्रहों से आए हैं।

मसाला भाषाएँ : हमारी भाषाएँ बिल्कुल मसालों की तरह हैं। हर भाषा में अलग-अलग स्वाद, अलग-अलग खुशबू। जैसे पकवानों में अलग-अलग मसाले मिलाकर नए-नए स्वाद बनाए जाते हैं, वैसे ही हमारी भाषाओं में भी अलग-अलग शब्दों को मिलाकर नए-नए वाक्य बनाए जाते हैं।

मराठी में 'वाट लागली' का मतलब है 'नुकसान होना या काम बिगड़ जाना या फिर काम में बाधा आना', लेकिन **गुजराती** में 'कंटाल्ली ग्यो' कहते हैं।

अंग्रेजी का एक शब्द है 'डेक्को' (Dekko), यह भी हिंदी के ही शब्द 'देखो' का रूपांतरित रूप है जिसका अर्थ त्वरित दृष्टि डालना होता है। जिसे अंग्रेजों ने भारत पर अपने शासन के दौरान भारतीय सैनिकों से सीखा।

पंजाबी में 'मैं बहुत खुश हूँ' कहने के कई तरीके हैं, **मलयालम** में 'न्यान संतोषमाई इरिक्कुन्नु' अथवा 'एनकिवालारे संतोषमआने' तथा **तमिल** में इसे 'नानरोम्बासंतोषमा इरकिरैन्' भाव द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

भाषाओं का जंगल : भारत में भाषाओं का जंगल है। हर राज्य में अपनी अलग भाषा, अपनी अलग बोली। कभी-कभी तो एक ही राज्य में कई भाषाएँ बोली

जाती हैं। यह मानो कि हर राज्य एक अलग देश है और उस देश की अपनी अलग भाषा।

लेकिन एक ही शब्द का कई भाषाओं में एक ही अर्थ भी हो सकता है और बोलने का तरीका भी लगभग एक सा ही है, जैसे संस्कृत में एक शब्द है कुत्र, जिसे हिंदी में कहते हैं "कहां।" यदि हम भारत के नक्शे में ऊपर से शुरू करें, तो डोगरी में इसी शब्द को 'कतांह', पंजाबी में 'कित्थे', हरियाणवी में 'कट्टे', राजस्थानी में कठै, पश्चिमी उत्तरप्रदेश में 'किधे', भोजपुरी में 'केने', बंगाली में 'कोथाय', मराठी में 'कुठे', छत्तीसगढ़ी में 'कति', कोंकणी में 'खंय', ओडिया में 'कौंधारे', तेलुगु में 'येकडा', तमिल में 'येकै/येगे' बोला जाता है। जैसे कि ये शब्द इन सभी भाषाओं ने एक ही तरह से ग्रहण किया है। ऐसे और भी अन्य कई शब्द हैं जो भारतीय भाषाओं में एक ही तरह से बोले जाते हैं।

यदि किसी हिंदी बोलने वाले को बंगाल पहुंचने से पहले बंगाली सीखनी है तो एक बार दिल्ली से बंगाल की यात्रा ट्रेन से स्लीपर कोच से करे, और बंगाल पहुंचते-पहुंचते आधी बांग्ला भाषा समझनी और थोड़ी बहुत बोलनी भी आ जाएगी क्योंकि दिल्ली से चली 'गर्म चाय' बंगाल पहुंचते-पहुंचते 'भालो चा' में बदल चुकी होगी और ऐसे ही अन्य कई शब्द भी आपको समझ में आने शुरू हो चुके होंगे। हिंदी से बंगाल के ट्रेन के रास्ते में हिंदी

भाषा से बंगाली भाषा तक बोलने में जो उतार-चढ़ाव (voice modulation) है धीरे-धीरे बदलता जाएगा कि भाषा किस तरह से अपना रूप बदल रही है, आपको साफ तरीके से पता चल जाएगा।

भाषा परिवार :

ये बात तो रही अपने ही देश की, लेकिन क्या विदेशी भाषाओं में भी ऐसा ही कुछ है जो आपस में मिलता-जुलता है?

तो उत्तर है हाँ, भाषा किसी भी राज्य की हो अथवा किसी देश की, सभी भाषाएँ, भाषा परिवारों से संबंध रखती हैं। एक भाषा परिवार संबंधित भाषाओं का समूह है जिसे एक सामान्य ऐतिहासिक पूर्वज से विकसित किया जाता है, जिसे प्रोटो-लैंग्वेज (ग्रीक में प्रोटो का अर्थ है 'प्रारंभिक') के रूप में जाना जाता है। संस्कृत, भारतीय उपमहाद्वीप की कई भाषाओं, जैसे कि बंगाली, हिंदी, मराठी और उर्दू की प्रोटो-लैंग्वेज है।

1818 में भाषा वैज्ञानिक अगस्त वॉन श्लेगल ने एक आकृतिमूलक (टाइपोलॉजिकल) भाषा का वर्गीकरण प्रस्तावित किया जिसका व्यापक रूप से अनुकरण किया गया जो कि 19वीं शताब्दी से अब तक लोकप्रिय रहा है। उसी आधार पर विश्व की भाषाओं को चार भाषा-खंडों में बांटा जा सकता है:-

1. यूरोशियाखंड (यूरोप एवं एशिया) – इसमें नौ मुख्य भाषा परिवार हैं जिसमें भारोपीय परिवार अति महत्वपूर्ण है, बाकी हैं द्रविड, बुरुशस्की, यूराल-

अल्टाइक, काकेशियन, चीनी, जापानी-कोरियाई, हाइपर-बोरी अत्युत्तरी, बास्क एवं हेमैटिक-सेमैटिक।

2. अफ्रीका-खंड – बुशमैन, बाँटू, सूडानी एवं होतेंतोता।

3. प्रशांत महासागरीय खंड – मलय-पॉलिनेशियन, पापुई, आस्ट्रेलियाई एवं दक्षिण पूर्व एशियाई।

4. अमेरिका खंड – अमेरिकन परिवार की भाषाओं में लगभग सौ भाषाओं को स्वीकार किया गया है।

भारोपीय भाषा परिवार (Indo-European Language Family) :

भारोपीय भाषा परिवार यूरोशिया खंड का सबसे प्रमुख परिवार है जो कि उपनिवेशवाद के चलते हुए पूरे यूरोप और दक्षिण एशिया के कई हिस्सों और बाद में दुनिया के हर कोने में फैल गया। भारोपीय या फिर इंडो-यूरोपियन शब्द भौगोलिक है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप से लेकर यूरोप में इसकी पश्चिमी सीमा तक फैला है। इस भाषा परिवार में यूरोप की अधिकांश भाषाओं के साथ-साथ दक्षिण-पश्चिम, मध्य और दक्षिण एशिया की भी कई भाषाएँ शामिल हैं। इसे बोलने वालों की संख्या 2.6 अरब से अधिक है तथा सभी भाषा परिवारों के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक होने के साथ दुनिया भर में इसका फैलाव भी सबसे अधिक है।

भाषा वैज्ञानिकों ने यूरोपीय भाषाओं और भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी भाषा संस्कृत के बीच व्यवस्थित रूप से आवर्ती समानताओं की तुलना के बाद माना कि यूरोपीय भाषाओं और संस्कृत की एक ही कोई अन्य सामान्य प्रोटो-लैंग्वेज रही होगी, जिसका प्रस्ताव सबसे पहले सर विलियम जोन्स (1746-1794) ने दिया था तथा फ्रांज बोप ने इन भाषाओं के बीच व्यवस्थित तुलना का समर्थन किया और यह माना कि सभी इंडो-यूरोपीय भाषाएं

एक सामान्य पूर्वज भाषा, प्रोटो-इंडो-यूरोपियन से निकली हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे 3,000 ईसा पूर्व से पहले बोली जाती थीं। फिर यह अलग-अलग शाखाओं में विभाजित हो गया, जो बाद की सहस्राब्दियों में अलग-अलग भाषाओं में विभाजित हो गया। जिसको हम ऐसे भी देख कर समझ सकते हैं कि हमारी भाषा में बोले जाने वाले शब्द अन्य भाषाओं से कितना मिलते हैं:

संस्कृत/हिंदी	प्राचीन ग्रीक	लैटिन	अंग्रेजी	लिथुआनियाई	रशियन
पितृ	पतैरास	पातेर	फादर	तेवस	आतेयत्स
भ्रातृ	फ्रातेर	फ्रातर	ब्रदर	ब्रोलिस	ब्रात
मातृ	मीतेरा	मातर	मदर	मोतीना	मात्स
पद	पोदी	पेदिस	फुट	पेदा	पोद
त्रयः	त्रया	त्रीबुस	थ्री	त्रीस	त्री
दशम	देका	दीचम	टेन	देस्मत्त	देसिच
मधु	मेथु	मेल	हनी	मेदूस	मीयत
कुक्कुरः/श्वानः	श्कीलीयोज़	कानीस	डॉग	श्यो	सबाका
ज्यामिति	ज्योमेतरिया	ज्योमेतरीया	ज्योमेट्री	जोमेतरीया	जेमेतिरीया
त्रिकोणमिति	त्रिगोणोमेत्रीया	त्रीगोनोमेत्रीया	ट्रिगोनोमेट्री	त्रीगोनोमैत्रीया	त्रीगोनोमैत्रीया
स्वयं	एफ्तोस	सुई	सेल्फ	स्वरेइकिशकै	सीव्या

अब भारोपीय भाषा की बात चल ही रही है तो ऐसे भारतीय एवं विदेशी नाम/शब्दों का भी जिक्र कर लेते हैं, जिनकी मूल धातु या फिर शब्द प्रोटो-लैंग्वेज का है, जिसका अर्थ हिंदी में, और अन्य यूरोपियन भाषाओं में भी समान ही है, जिन्हें हम अकसर अनदेखा कर देते हैं। ध्यान देने वाली बात है कि यहां अनुवाद की बात नहीं की जा रही है।

राज, राजेश, राजीव और राजू संस्कृत के शब्द 'राज्य' से लिए गए हैं, जिसे लैटिन में 'रैक्स'

(Rex), फ्रेंच में 'रुआ' (Roi), अंग्रेजी में 'रॉय' (Roy) और केल्टिक (Celtic) में रायन (Ryan) कहते हैं, संस्कृत का यह 'राज्य' शब्द प्रोटो-लैंग्वेज का मूल शब्द ख्लेग (*h₃r^éǵ) से बना है, जिससे रूल (Rule), रेन (Reign), रॉयल (Royal), रीजन (Region) एवं राइट (Right) इत्यादि शब्द भी बने हैं, जिन सभी का अर्थ एक ही है और थोड़ा बहुत बोलने का तरीका भी।

इसी तरह संस्कृत का सूर्य, ग्रीक का हेलेन दोनों का ही अर्थ 'सूरज' होता है। प्रोटो-लैंग्वेज के मूल शब्द सोहुल (*sóh2w|) से बना सूहर (*sÚHar), जिसका अपभ्रंश बना सूर-या (Sur-Ya) अर्थात् सूर्य और ग्रीक में सोहुल (*sóh2w|) बना हॉवेल (*hāwél) जो कि हेलिओज (helios) का मूल शब्द है, ग्रीक में हेलिओज को सूर्य कहा जाता है, हेलिओज से बना हेलेने (Helené) जो कि बाद में हेलेन (Helen) हो गया।

संस्कृत का नार्या और ग्रीक का एंड्रयू (Andrew) दोनों का अर्थ पौरुष से संबंधित होता है, जिसे अंग्रेजी में Manly कहते हैं। नार्या में से या हटाने पर 'नर' प्राप्त होता है और एंड्रयू, आंद्रेयास (Andréas) से बना है जिसकी उत्पत्ति अनेर (Anér) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ 'नर' अर्थात् पुरुष होता है।

अब यह बड़ा मजेदार है क्योंकि डेयाना या डायना (Diana) शब्द लैटिन डियेजआना (diés-ana) से आया है जो कि प्रोटो-लैंग्वेज के मूल शब्द डियू (*dyew) से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है चमकना, उज्ज्वल होना, जिससे संस्कृत/हिंदी के शब्द दीप्ति, दीपक, दीपिका बनते हैं। लैटिन में ही इसका दूसरा शब्द है दिवूसआना (dīvus-ana) जो कि प्रोटो-लैंग्वेज के मूल शब्द दिवयोस (*diwyós) से आया है जिसका अर्थ होता है भगवान, दिव्य, देव (god, divine) जिससे संस्कृत/हिंदी के शब्द दिव्य या दिव्या बनते हैं और अंग्रेजी में डिवाइन (Divine), डियटी (Deity) इत्यादि।

शब्दों का उधार (लेक्सीकल बोरोइंग – Lexical Borrowing) जब किसी एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्द को उधार लिया जाता है तो इस्तेमाल

की जाने वाली शब्दावली को लेक्सिकल बोरोइंग कहा जाता है। इसे आमतौर पर बिना अनुवाद के नई भाषा में शामिल कर लिया जाता है। शब्द दिखने में और अर्थ में एक जैसा हो सकता है लेकिन नई भाषा के हिसाब से उसका उच्चारण और व्याकरण बदल जाता है, जैसे कि हर वर्ष ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी अलग-अलग भाषाओं से अपने शब्दकोश में नए-नए शब्द लेती है। वर्तमान में ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी सैकड़ों शब्द भारतीय भाषाओं से लिए गए हैं, जैसे कि योग, पजामा, जंगल, बंधन, खाकी, बाजार, लूट इत्यादि।

कुछ शब्द तो ऐसे हैं, जिनके बारे में मालूम ही नहीं है कि वो हमारे शब्द थे, जिन्हें हम उनका मान बैठे हैं। उदाहरण के तौर पर चीनी को हम अंग्रेजी में 'शुगर' कहते हैं, लेकिन ये शब्द संस्कृत के शब्द 'शर्करा' से बना है जब ये फारस पहुंचा तो बना शक्कर, वहां से अरब पहुंचा तो ये बना सककर या फिर असक्कर, वहां से आगे चलने पर लैटिन में ये बना साखुरम (Succarum), वहाँ से आगे स्पेनिश में अज़ुकार (azÚcar), फ्रेंच लोगों ने लैटिन शब्द साखुरम को बदल कर दिया सुख्र (Sucre) और अंत में फ्रेंच से अंग्रेजी में बदलकर दुनिया को मिला शुगर (Sugar)। यही शर्करा जब मिस्र से और ज्यादा परिष्कृत रूप में क्रिस्टल के रूप में हमें प्राप्त हुई तो मिस्र के यहां से आने के कारण ये बनी मिस्री, लेकिन वर्तमान का चीनी का जो सफेद, परिष्कृत रूप है, वो चीन से आया है, तो ये भारत में कहलाई गई चीनी। कई भारतीय भाषाओं में भी इसका मिला-जुला रूप मिलेगा, जैसे मराठी में 'साखर', कन्नड़ एवं तुलू में 'सक्करै', तमिल में 'सक्कारया'।

उसी तरह हम भारतीय गन्ने के रस को परिष्कृत करके जो बारीक चीनी जैसा दिखने वाला मीठा पदार्थ बनाते थे उसे संस्कृत में खाण्डक कहते हैं, जिसे वर्तमान में खांड कहा जाता है, जब ये

खाण्डक फारस पहुंचा तो उन्होंने इसे 'कंड/कंद' (Qand) कहा जैसे कि गुलकंद, कलाकंद इत्यादि। इसी को अरबी लोगों ने कंदी कहा जोकि ब्रिटेन में पहुंचने पर कैंडी (Candy) बन गई, यह वही कैंडी है जिसे बच्चे खाना बहुत पसंद करते हैं।

आप सभी ने अंग्रेजी का एक वाक्य है 'I don't give a damn' सुना ही होगा, जिसका अर्थ है मुझे कोई परवाह नहीं है। इसमें जो ये *damn* शब्द है, कहां से आया है? अब तो इसका अर्थ है जिसका कोई मूल्य ना हो या फिर अहमियत ना हो इत्यादि। ये शब्द भी प्राचीन भारत में चलने वाली मुद्रा दमड़ी, जिसका मूल्य बहुत कम होता था, से आया है। पहले अगर लोगों को किसी चीज की परवाह नहीं होती थी, तो कहते थे, 'I don't give a dam' जो धीरे-धीरे *damn* में बदल गया।

ऐसे ही अंग्रेजी का एक शब्द है 'डेक्को' (Dekko) यह भी हिंदी के ही शब्द 'देखो' का रूपांतरित रूप है जिसका अर्थ त्वरित दृष्टि डालना

होता है। जिसे अंग्रेजों ने भारत पर अपने शासन के दौरान भारतीय सैनिकों से सीखा। है ना मजेदार।

भाषाओं का मज़ा : भाषाओं की इस विविधता का मज़ा ही अलग है। भाषा के नाम पर एक-दूसरे लड़ने की जगह हम एक-दूसरे की भाषा सीखकर एक-दूसरे को बेहतर समझ सकते हैं।

- मराठी सीखकर आप महाराष्ट्र की संस्कृति को बेहतर समझ सकते हैं।
- तमिल सीखकर आप तमिलनाडु के लोगों के साथ गहरा संबंध बना सकते हैं।

यकीन मानिए, अन्य भाषाएं सीखने पर उनकी बारीकियां सब अपनी भाषा जैसी ही लगेंगी। भाषा संस्कृति को प्रस्तुत करती है, यदि आप अन्य कोई भाषा सीखते तो हैं यह मानिए आप उस क्षेत्र, राज्य या देश की संस्कृति सीख रहे हैं।

आशा है कि भाषाओं का ये मजेदार सफर आपको पसंद आया होगा।



यह रावण कब मरेगा?

कहानी

श्री विनेश कुमार

पिता, श्री हेमंत कुमार, लेखापाल



शीतल प्रसाद जी अपने गांव ही नहीं अपितु आस-पास के कई गाँवों में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। अपने जमाने की तो वे एक मिसाल ही थे। कॉलेज के दिनों की तो बात ही और थी जब वे प्रोफेसर हुआ करते थे। उन्होंने अपने प्रयास और लगन से कई विद्यार्थियों को अच्छे अंक प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए।

पिछले वर्ष उन्होंने रिटायरमेंट ले लिया था और चूंकि वे उम्र की ढलान के साथ-साथ थकान भी महसूस करने लगे थे, अतः उनका विचार था कि जीवन के इस अन्तिम चरण में वे कुछ आराम का जीवन व्यतीत कर सकें और जो कार्य वे प्रोफेसर रहते नहीं कर सके उन्हें पूरा कर सकें। उन्हें समाज सेवा करने में अपार सुख का अनुभव होता था।

दिन अच्छे बीत रहे थे कि तभी एक दुखद घटना ने उन्हें अन्दर तक हिला दिया। आज सवेरे ही उन्हें अपनी इकलौती बेटी शालिनी की मौत की खबर मिली। शालिनी ही तो उनकी एक मात्र सन्तान थी। अभी दो वर्ष पहले ही तो उन्होंने बड़ी धूमधाम से उसकी शादी की थी। जब उन्होंने बेटी की शादी की थी तो घर और वर दोनों ही में कुछ कमी नहीं थी। किन्तु वे आज इसी बात अधिक आहत हुए थे कि उनकी बेटी को उसके ससुराल वालों ने दहेज के नाम पर जिंदा जला कर मार डाला।

उनकी पत्नी सावित्री देवी के लिए भी बेटी की मृत्यु का दुःख अन्दर तक हिला देने वाला था। शीतल प्रसाद तो इस खबर को सुनकर इतने आहत हुए कि ने खड़े न रह सके। काफी प्रयास करके उन्हें होश में लाया जा सका। वे चिंता और शोक में डूब गए। उन्हें आज बार-बार उस दिन की याद आ रही थी जब दो वर्ष पहले वे इसी कमरे में बैठे हुए अखबार पढ़ रहे थे कि तभी शालिनी कॉलेज से पढ़ कर आयी थी। वह एम. ए. फाइनल वर्ष में पढ़ रही थी बाबू जी ने बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाकर पूछा था -

आखिर जिस घर में दो वर्ष पहले शालिनी दुल्हन बन कर डोली चढ़ कर आयी थी उसी घर से आज उसकी लाश पुलिस की गाड़ी में पोस्टमार्टम हेतु ले जाई जा रही थी।

“बेटी क्यों न हम इसी वर्ष तुम्हारी शादी कर दें। इससे हमारे दिल का बोझ कुछ कम हो जायेगा। तुम्हारी एम.ए. की पढ़ाई भी पूरी हो रही

हैं। हम चाहते हैं के कोई ठीक सा घर और वर देखकर तुम्हारी शादी कर दें परन्तु फिर सोचा कि पहले तुम्हारी मन की इच्छा भी जान लें। बेटी यदि तुम्हें पसंद का कोई अच्छा लड़का हो तो हम इसी से तुम्हारी शादी कर देंगे।”

शालिनी ने शर्माकर सिर नीचे झुका लिया और एक ओर को जाने लगी तभी बाबूजी ने उसे रोककर फिर पूछा “बेटी इसमें छिपाने या शर्माने की कुछ बात नहीं है। फिर यह तुम्हारी जिंदगी और भविष्य से जुड़ा सवाल है। तुम्हारी पसंद और खुशी में ही हमारी पसंद और खुशी है।” शालिनी ने शर्माते हुए एक नाम बताया था- सतीश। सतीश उसके साथ

ही एम.ए. फाइनल वर्ष में बढ़ता था। शील स्वभाव सब कुछ ठीक था। देखने में भी हँसमुख, सुन्दर और मिलनसार था।

बाबू जी ने शालिनी की पसंद पर सतीश के साथ ही शालिनी का विवाह कर दिया। विवाह बड़ी धूमधाम से किया था। देने-लेने में भी किसी चीज की कमी नहीं रहने दी थी। वैसे भी शालिनी उनकी इकलौती सन्तान थी। यही सोचकर उन्होंने शालिनी के जीवन की सुख-सुविधा की हर कमी पूरी करने का प्रयास किया।

शालिनी भी मन पसंद जीवनसाथी पाकर बहुत खुश थी। सब कुछ समय के साथ ठीक-ठाक बीत रहा था। समय पंख लगाए उड़ता चला जा रहा था। शालिनी ने एक वर्ष बाद एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया। अब तो शालिनी का जीवन और भी खुशी से भर गया। दो वर्ष कैसे बीत गए, पता ही न चला।

शालिनी और सतीश दोनों सर्विस की तलाश करने लगे। तभी सतीश को एक अच्छी नौकरी मिल गयी। उसने अंग्रेजी से एम.ए. करके बी.एड. कर लिया था। तो वह एक इन्टर कालेज में लैक्चरर बन गया। दोनों पति-पत्नी बेटे पंकज को लेकर भविष्य के सुन्दर सपने देखने लगे। तभी शालिनी के सास-ससुर की नियत बदलने लगी। उनके मन में शीतल प्रसाद जी की सम्पत्ति हड़पने की लालसा घर करने लगी। इस कारण उन्होंने बेटे

सतीश को भी अपने इस काम में सहमत कर लिया। उन्होंने शालिनी को इस काम के लिये माध्यम चुना। वे शालिनी पर दहेज लाने के लिये दबाव डालने लगे। शालिनी पढ़ी-लिखी समझदार लड़की थी। अतः उसने उनका विरोध शुरू कर दिया। वह उन्हें समझाने का प्रयास करती परन्तु उसकी एक बात भी नहीं सुनी जाती। वह घर के हर सदस्य के बदले व्यवहार से चिंतित तो थी किन्तु उसने हिम्मत नहीं छोड़ी। आखिर वहीं हुआ जिसका उसको भी विश्वास न था।

घर के लोगों ने पहले तो उसे यातनाएं दी परन्तु जब शालिनी पर यातनाओं का असर न हुआ तो उन्होंने उसे आग की भेंट चढ़ा दिया। उसको जिंदा जला डाला उसके छोटे से मासूम बच्चे की भी चिंता न की। यह भी न सोचा कि

बिना माँ के यह नन्हा सा अनजान बच्चा कैसे रह सकेगा? आखिर जिस घर में दो वर्ष पहले शालिनी दुल्हन बन कर डोली चढ़ कर आयी थी उसी घर से आज उसकी लाश पुलिस की गाड़ी में पोस्टमार्टम हेतु ले जाई जा रही थी।

शालिनी के पोस्टमार्टम रिपोर्ट आई। सजा हुई और फिर सब रिहा भी हो गए। परन्तु इससे क्या शालिनी को जिन्दगी मिली? नहीं ना!! शालिनी ही इस तरह की क्रूरता का शिकार हुई हो ऐसा कुछ नहीं



है। शालिनी की तरह और ना जाने कितनी ही बहू-
बेटियाँ इस दहेज की आग में जिंदा जलायी गई हैं
और जलायी जा रही है। जब तक समाज ऐसे लोभी
और अत्याचारी लोगों का विरोध नहीं करेगा ऐसा
बार-बार होता रहेगा। समाज के युवकों युवतियों को
स्वयं ही ऐसे लोगों का विरोध करने के लिये आगे

आना होगा और समाज से इस बुराई को मिटाना
होगा। बहू और बेटी के बीच का भेदभाव मिटाकर ही
हम इस दहेज रूपी नागिन का अंत कर सकते हैं।
परंतु न जाने वह दिन कब आयेगा? यह रावण न
जाने कब मरेगा? तुम्ही बताओ ना!!

कुछ आप ही के लिए - फुलझड़ी

सुनो,

खुल के हँसा करो, अच्छे लगते हो,
ये क्या रुखा सा मुंह लिए फिरते हो,
जिस मुकून की खोज में हो,
देखो, वो तुम्हारे ही पास है,
तो फिर क्यों दर-ब-दर भटकते हो?

क्या इतना आसान है,
खुद को चोट देना,
फिर खुद ही मरहम लगाना,
क्या थकते नहीं हो?
रुको जरा,
थोड़ा सांस ले लो,
बहुत थके हारे लगते हो,
क्या हर दिन एक ही चीज के पीछे दौड़ लगा के रखते हो?
जरा अंदर झाँको अपने,
खुद पर थोड़ा विश्वास रखो,
और जरा खुल के हँसा करो, अच्छे लगते हो,
ये क्या रुखा सा मुंह लिए फिरते हो।

- श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक

महिमा की राहें मृत्यु तक जाती हैं

लेख

श्री नीरज नायक

सहायक लेखा अधिकारी



मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझ को सौंपता क्या लागे है मेरा।

कबीर दास जी का ये प्रसिद्ध दोहा आज से 700 साल पहले रचित है और इसकी यह पंक्तियां वर्तमान समय में और अधिक प्रासंगिक हैं। मानव अनंत अभिलाषाएं पाले रहता है, ये सभी अभिलाषाएं कभी भी पूरी नहीं होती। बात ठीक भी है फिर ऐसा क्यों है कि हम इतनी अभिलाषाएं स्वयं से पाल लेते हैं मैंने कहीं एक कहानी सुनी थी आपको भी सुनाता हूं कि एक भिखारी छोटे से किसान के पास गया तो उसने सोचा कि किसान कितना सुखी है जिंदगी तो इसकी है, परिवार है, ना कोई चिंता है,

जबकि मुझे तो ये भी पता नहीं की आज कुछ मिलेगा भी या नहीं। जैसे ही भिखारी भीख लेकर जाता है, छोटा सा किसान एक बड़े किसान के पास जाता है और

उसके ठाट-बाट देखकर सोचता है कि हम तो एक कुएं के मेंढक की तरह जिंदगी जी रहे थे, इसके बाद वह बड़ा किसान व्यापारी के पास जाता है और उसकी शान-बान, मान, सम्मान, देख अपने आप को छोटा महसूस करता है, जब यही व्यापारी शहर के सबसे अमीर व्यक्ति के पास जाता है तो अपने को बहुत ही छोटा महसूस करता है कि इसके पास तो अधिकारियों, मंत्रियों की भीड़ लगी रहती है लेकिन

शहर का सबसे बड़ा अमीर अपनी खिड़की में से देखता है कि एक गरीब परंतु स्वस्थ आदमी अपनी मस्ती में जा रहा है, उसे देखकर यह सोचता है कि जिंदगी तो इसकी है, यह वही भिखारी था जो एक छोटे से किसान के पास भीख मांगने आया था। कहानी प्रेरणामयी है, जीने की सीख भी देती है कि जिंदगी में ज्यादा अभिलाषाएं मत पालिए जो मिला है उसी में खुश रहिए क्योंकि कुछ भी पाने की इच्छा कभी खत्म नहीं होती है, यही वह पथ है जहां से महिमा रूपी राहें इंसान को मृत्यु तक ले जाती हैं।

हम जीवन में बड़े-बड़े लक्ष्य लिए रहते हैं, सम्मान, प्रतिष्ठा की लालसा रहती है, लेकिन कई

जीवन में कई बार समय आता है जब हम प्रसिद्धि की पराकाष्ठा पर होते हैं और यह पराकाष्ठा तुम्हारे से नहीं मिली तो इसकी कीमत भी बहुत चुकानी पड़ती है, कई लोग शिखर पर पहुंचने के बाद सागर की भांति हों जाते हैं.....

बार हमारे साथ ऐसा होता है की हम स्वयं के अनुसार जीवन नहीं जी पाते हैं आपको एक उदाहरण देता हूं कि जब कोई हमारी

प्रशंसा करता है तो हम चाहते हैं की हमारी प्रशंसा और अधिक होने लगे। सम्मान पाने की इच्छा और लालसा भी बढ़ती चली जाती है लेकिन ये इच्छा यदि सीमा में रहे तो बहुत बेहतर होती है लेकिन कई बार इंसान को अपंग बना के रख देती है और इंसान खोखला हो जाता है, फिर हम स्वयं के अनुसार न चलकर दूसरों के अनुसार चलने लगते हैं, दिखावटीपन हमारे अंदर ऐसे समा जाता है कि फिर हम सहजता और हमारे वास्तविक व्यवहार से कोसों

दूर चलें जाते हैं जिसके कारण हम स्वयं का वास्तविक व्यक्तित्व खो देते हैं और हमारे चरित्र पर एक नई परत चढ़ जाती है अर्थात् एक परत के ऊपर दूसरी परत इस परत की विशेषता होती है कि इससे इंसान के अंदर बैठे "मैं" की मृत्यु हो जाती है। आप समझ ही गए होंगे कि "मैं" का क्या तात्पर्य है, जब "मैं" ही नहीं रहता तो जीवन भी व्यर्थ सा लगने लगता है इन सबके पीछे वही दिखावट रूपी महिमा है। "मैं" की मृत्यु होने पर जीवन, उद्देश्यहीन हो जाता है, इसीलिए स्टीव जॉब्स ने एक बात कही थी कि "जीवन में सबसे कठिन है सरल होना।" ऐसा ही एक डायलॉग राजेश खन्ना ने बावर्ची फिल्म में भी कहा था "इट्स सो सिंपल टू बी हैप्पी बट सो डिफिकल्ट टू बी सिंपल" अर्थात् खुश रहना बहुत सरल है लेकिन सरल बने रहना बहुत कठिन है।

एक अर्थ के बाद हम दूसरे अर्थ पर भी आते हैं मैंने कहीं एक कव्वाली सुनी थी जिसका मुखड़ा था कि "चढ़ता सूरज धीरे-धीरे ढलता है ढल जाएगा" जीवन में कई बार समय आता है जब हम प्रसिद्धि की पराकाष्ठा पर होते हैं और यह पराकाष्ठा तुम्हारे से नहीं मिली तो इसकी कीमत भी बहुत चुकानी पड़ती है, कई लोग शिखर पर पहुंचने के बाद सागर की भांति हों जाते हैं उनके अंदर आत्म संयम, विश्वास, देने की क्षमता, लेने की क्षमता, अपनी गहराई पर कभी भी

अभिमान न करने की अद्भुत कला होती है। इसके विपरीत भांति के लोग भी होते हैं जो यदि शिखर पर पहुंच भी गए तो उसे स्थाई मान लेते हैं, जैसे ही आपने उसे स्थाई माना उसी दिन से आपके पतन का रास्ता तैयार। हम यह बात ठीक तरह से जानते हैं कि जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं है सब कुछ क्षण भंगुर और नाशवान है। हम इतिहास से सीख ले सकते हैं कि ऐसे-ऐसे पुरोधा हुए हैं कि उनके बारे में कहने के लिए हमारे पास शब्द नहीं होते हैं।

**“हमने देखा है सूरज को तेज चमकते हुए
फिर शामों के शहर में ढलते हुए।”**

आए किसी और उद्देश्य के लिए उलझ किसी और उद्देश्य में गए। जैसे ही हम इससे भटकते हैं महिमा की ये राहें हमें मृत्यु तक पहुंचा देती हैं, जबकि यही राहें हमें अनंत की ओर भी ले जा सकती हैं। हम में से अधिकांश कल पर जीते हैं जबकि आज, आज ही जीने के लिए दिया गया है, इस कल की चिंता में हम आज और अभी को गवा देते हैं और यह चिंताएँ, चिंता की राहें तैयार करने लगती हैं। इसी को लेकर तुलसीदास जी ने कहा है कि

**तुलसी भरोसे राम के, निर्भय होके सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी है सो होया।**



पीछे छूटती किताबों की दुनिया

लेख

सुश्री दीप्ती वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक



किताबें हमारे समाज का प्रतिबिंब होती हैं जिनके माध्यम से हम अपने अतीत के गौरवमय इतिहास को जान सकते हैं, महसूस कर सकते हैं। हमारी किताबें संस्कृति, सभ्यता, धर्म तथा अध्यात्म को समेटे अथाह ज्ञान का भंडार हैं। किताबें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं जो सिर्फ देना जानती हैं बदले में हमसे कुछ नहीं मांगती। किताबें पढ़ने की आदत हमारी सभ्यता में निहित है। प्राचीन समय में ताम्रपत्र पर लिखे साक्ष्य और प्राचीन ग्रंथ को प्रमाणिक माना जाता है। इनमें लिखी बातों को बिना विवाद के स्वीकार किया जाता है यही कारण है कि व्यक्ति इनमें निहित ज्ञान को अपने जीवन में अपनाता है। रामायण, गीता, कुरान बाइबिल और गुरुग्रंथ साहिब जैसी पुस्तकें सिर्फ पढ़ी ही नहीं जाती बल्कि उनके अनुयायी इनकी पूजा भी करते हैं।

प्रेमचंद जी की कहानियां हो या टैगोर की कविताएं सभी के माध्यम से सामाजिक चित्रण हमारे मानस पटल को छू जाता है। गर्मी की छुट्टियों में नंदन, चंदामामा, चंपक और चाचा चौधरी जैसी अनेक किताबों को पढ़ते हुए हम एक मधुर कल्पना में कहीं खो जाते थे। परंतु आज स्थितियाँ बदल गई हैं किताबें तो बहुत हैं किंतु आधुनिकता की चादर ओढ़े लोग उन्हें पढ़ने से वंचित रह जाते हैं।

लोगों का धैर्य अब दो घंटे की फिल्म देखने की भी गवाही नहीं दे रहा। एक बड़ा हिस्सा यूट्यूब पर पंद्रह-बीस मिनट का वीडियो देखने लगा। यूट्यूब पर वीडियो देखने वाली युवा पीढ़ी अब रील्स पर आ गई, मात्र एक मिनट का वीडियो। मात्र एक मिनट में मनोरंजन!!

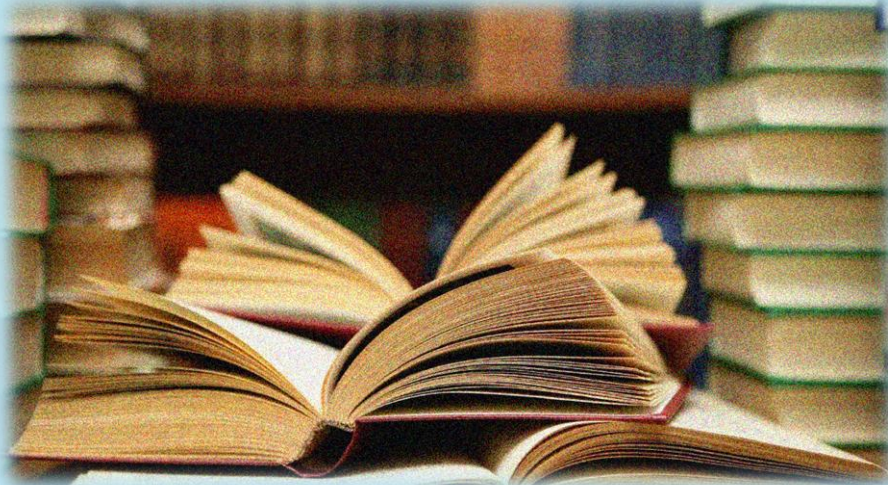
किसी भी कला में शीघ्रता से निपुण होने की क्षमता मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग बनाती है। बौद्धिक विकास की इस सतत यात्रा में जिस चीज ने सबसे अहम भूमिका निभाई है वह है किताबें। अध्यात्म, विज्ञान, संगीत, साहित्य, कला आदि तमाम विषयों पर सदियों से लिखा जा रहा है। कई बार ऐसी स्थितियां आईं जब मान लिया गया कि अब धीरे-धीरे इस दुनिया से किताबें लुप्त हो जाएंगी। कहने का तात्पर्य है जब रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट

आया तो यही कहा गया कि अब किताबों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। अब तो सारी जानकारी हमारी स्क्रीन पर मौजूद है। बावजूद इसके, किताबों की लोकप्रियता पर कोई आंच नहीं आयी।

देश में स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुंच अति सुगम तरीके से जन-जन तक है। युवा पीढ़ी को इस क्रांति से बहुत लाभ मिल रहा है। कोरोना महामारी में शिक्षा जगत में अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच की कड़ी यह स्मार्टफोन ही था पर हमारी जरूरत का यह साधन कब हमारी आदत बन गया पता ही नहीं चला और इसने जो सबसे महत्वपूर्ण चीज हमसे छीन ली, वह है धैर्य। जैसे-जैसे हम विकास की राह पर अग्रसर हो रहे हैं वैसे-वैसे हमारा धैर्य कम होता जा रहा है। किसी एक किताब

को पूरा करने में सामान्यतः एक हफ्ते का वक्त लगता है। घटते धैर्य के कारण अधिकांश लोगो का रुझान सिनेमा की ओर हुआ। शुरुआती दौर में हिंदी फिल्में ढाई से तीन घण्टे की हुआ करती थीं। फिर फिल्म निर्माताओं ने दर्शकों के घटते धीरज को देखते हुए फिल्मों को और छोटा कर दिया। अब फिल्में अधिक से अधिक दो घंटे में पूरी हो जाती हैं पर लोगों का धैर्य अब दो घंटे की फिल्म देखने की भी गवाही नहीं दे रहा। एक

बड़ा हिस्सा
यूट्यूब पर
पंद्रह-बीस
मिनट का
वीडियो
देखने लगा।
यूट्यूब पर
वीडियो
देखने वाली



युवा पीढ़ी अब रील्स पर आ गई, मात्र एक मिनट का वीडियो। एक मिनट में मनोरंजन। कुछ ही समय में रील्स से भी एक कदम आगे मीम्स का प्रचलन उभरा। मीम्स जिसमें एक दृश्य को इस तरह बनाया जाता है, जिससे लोगों को हँसाया जा सके। मनोरंजन मात्र कुछ सेकेंड में। हफ्तों लगा कर एक किताब पढ़ने की तुलना में कुछ सेकेंड के मीम्स देखकर हँसना बेहतर लगने लगा। कौन है इसका जिम्मेदार? तो उत्तर है घटता धैर्य।

हम हमेशा हड़बड़ी में रहते हैं। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में हमारे पास वक्त ही नहीं है कोई किताब पढ़ने का। बस दौड़ते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ किताबों की ओर हम सब का रुझान कम हुआ है, बल्कि कई चीजें इस भाग-दौड़ के चक्कर में पीछे छूट गई हैं। उदाहरण के तौर पर बुजुर्गों के साथ बैठना, बागवानी करना, सुबह सैर पर जाना, मोहल्ले

के छोटे बच्चों से बातें करना, आदि। आजकल किताब पढ़ना तो दूर लोग किताब खरीदना भी नहीं चाहते। हिंदी साहित्य की स्थिति तो और भी दयनीय है। अंग्रेजी व्यापार की भाषा है, इसलिए लोगों को मजबूरन इसे पढ़ना पड़ रहा है। हिंदी मातृभाषा है इसलिए अधिकतर लोग इसे अनदेखा कर देते हैं। हिंदी अखबारों की भी लोगों के बीच लोकप्रियता घटती जा रही है। प्रतियोगिता निकालने के लिए हिंदी

भाषी लोग
भी अंग्रेजी
अखबार
पढ़ रहे हैं।
हिंदी
किताबों
और
अखबारों
से लोग
दूर हो रहे

हैं। पाठकों की संख्या बढ़ाने और उन्हें वापस लाने के उत्तरदायित्व पर विचार करने की आवश्यकता है।

सूचना तकनीक ने भले ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी है, पर किताबें आज भी ज्ञानार्जन का सबसे सशक्त माध्यम हैं। मानव विकास के लिए जरूरी शिक्षा और साक्षरता का एकमात्र साधन किताबें हैं। इसमें लेष मात्र भी संदेह नहीं है कि पलक झपकते ही दुनिया के किसी कोने में कंप्यूटर या टीवी स्क्रीन पर सूचनाओं को पहुंचाया जा सकता है किंतु इस बात को भी स्वीकार करना होगा कि किताबें सर्वाधिक संयमित माध्यम हैं। किताबें पाठक को उनकी क्षमता के अनुरूप ज्ञान का आकलन करने और जानकारीयों का गहराई से विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करती हैं।

किताबों की लोकप्रियता में कई चीजें बाधा उत्पन्न कर रही हैं- जैसे प्रकाशकों में अच्छी पुस्तकें

छापने और उन्हें बेचने की इच्छाशक्ति का अभाव, पढ़े-लिखे समाज का किताबों की अनिवार्यता को न समझना और बाजार की अनुपस्थिति। भारत में महंगाई प्रतिकूल सांस्कृतिक बौद्धिक परिस्थितियों के बावजूद पुस्तक प्रकाशन एक क्रांतिकारी दौर से गुजर रहा है। छपाई की गुणवत्ता में परिवर्तन के साथ-साथ विषय में विविधता आई है। इसके बाद भी आज भी आम घरों में किताबें घर या बच्चों के लिए आवश्यक की सूची में नहीं आ पाई हैं। इसके दो पहलू हैं- एक तो पुस्तक साबुन-तेल की तरह उपभोक्ता वस्तु नहीं है और न ही इसका प्रचार होता है किताबों का संसार आज के तकनीकी युग में भी विज्ञापन से अछूता रह गया है, दूसरा आम पाठक के लिए पुस्तक महज उसकी जरूरत पर याद आने वाली वस्तु है। कई वरिष्ठ और नवोदित लेखक अपना पैसा लगाकर किताबें छपवाते हैं फिर मित्रगणों से अनुनय-विनय कर अखबार, पत्रिकाओं में उनकी समीक्षा प्रकाशित कराते हैं। इतनी जुगत लगाकर कुछ सरकारी खरीद कराने या फिर सरकार पोषित पुरस्कार जुटाने तक सिमट कर रह गई है किताबों की दुनिया।

हमारे समाज में किताबें प्राथमिक जरूरतों में शुमार नहीं हैं। यह देश के आम मध्यम वर्ग की मानसिकता है। बच्चों के मानसिक विकास की समस्याओं को आज भी गंभीरता से नहीं आंका जा रहा है। मध्यम वर्ग अपने बच्चों की शिक्षा और मानसिक विकास के लिए अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाई से आगे नहीं सोच रहा है। यही कारण है "अपने प्रिय को उपहार में पुस्तकें दे" का नारा व्यावहारिक नहीं बन पाया है।

यह भी चिंता का विषय है कि देश के बड़े हिस्से में बच्चों के लिए किताब का अर्थ पाठ्य पुस्तक से अधिक नहीं है। वहां न तो पुस्तकालय हैं, और न पाठ्य पुस्तकों की दुकानें। जब भी वहां कुछ पठनीय पहुंचता है, तो खरीदा जाता है और पढ़ा भी।

हिंदी के विद्वानों द्वारा यह आकलन कर लिया जाता है कि समाज की पठन अभिरुचि सस्ते साहित्य में है किंतु जब टीवी पर निर्मला, तमस, चंद्रकांता धारावाहिक के रूप में आते हैं तो लोग तन्मयता से देखते हैं और फिर उसके बाद ऐसी पुस्तकों की बिक्री भी बढ़ जाती है। इससे स्पष्ट है कि किताबों तक पाठकों की पहुंच में कहीं बाधा जरूर है।

हमारे देश की तीन-चौथाई आबादी गांवों में रहती है और उनके दैनिक उपभोग का सामान बनाने वाली कंपनियां अपने उत्पाद का नया बाजार वहां खंगाल रही हैं। दुर्भाग्य है कि किताबों को वहां तक पहुंचाने की किसी ठोस कार्य योजना का दूर-दूर तक अता-पता नहीं है। गांव की जनता भले ही कम पढ़ी-लिखी है मगर वह सुसंस्कृत है। वह सदियों से दुख-सुख झेलती आ रही है। इस पर भी वह तीस-चालीस रूपए की रामायण या सुखसागर वीपीपी से मंगवाकर सुख महसूस करती है। आजादी के इतने साल बाद भी गांव वालों की रुचि परिष्कृत कर सकने वाली किताबें प्रकाशित नहीं हो सकीं। कुल मिलाकर पुस्तकों को पाठकों तक पहुंचाने के लिए प्रकाशक और वितरकों की सक्रियता जरूरी है। किताबों की दुनिया को आधुनिक युग के जीवन की कड़ी बनाने के लिए हम सभी को अपने उत्तरदायित्व को समझाना चाहिए एवं किताबों को अपनी जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाने का प्रयास करना चाहिए। हम सब को प्रण लेना चाहिए कि महीने में कम से कम दो किताबें जरूर पढ़ेंगे। ज्ञान अर्जित करने के लिए समय देना पड़ता है। धैर्य ज्ञान की कुंजी है। बेशक रील्स में किसी का नृत्य देखकर मनोरंजन किया जा सकता है, लेकिन जो ज्ञान किताबों से मिलता है वह कहीं और मिल पाना असंभव है। इसलिए किताबों से प्रेम करना जरूरी है। आचार-विचार की शुद्धि बिना किताबों के संभव नहीं।

Content या Content

लेख

श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल

कनिष्ठ अनुवादक



राजभाषा हिंदी की पत्रिका में लेख के शीर्षक का नाम अंग्रेजी में पढ़ कर थोड़ा अचंभित तो हुए होंगे। अचंभित होना बनता भी है कि पत्रिका राजभाषा हिंदी की और लेख का नाम अंग्रेजी में! वो क्या है कि लगभग-लगभग हम सभी ने बचपन में या फिर कभी कहीं किसी सोशल मीडिया पर सदी के महानायक अमिताभ बच्चन की फिल्म नमक-हलाल का जो अंग्रेजी भाषा पर डायलॉग “इंग्लिश इज ए भैरी फन्नी लैंग्वेज” तो सुना ही होगा। वैसे तो

किसी भी भाषा के बारे में मजाक नहीं करना चाहिए, लेकिन यहां हम अपनी राजभाषा हिंदी के साथ तो तुलना कर ही सकते हैं। वैसे भी अनुवादक के पद पर कार्यरत होने के कारण

यह दोनों भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक होता ही है और लगातार करते रहना पड़ता है।

इस लेख को लिखने का विचार या *आइडिया*, जो भी कहिए, हमारे माननीय प्रधानमंत्री महोदय श्री नरेंद्र मोदी एवं सदी के महानायक अमिताभ बच्चन दोनों को देखने के बाद आया, दोनों ने ही अलग-अलग मंचों से सोशल मीडिया पर समय कब निकल जाता है पता ही नहीं चलने की बात की थी। वह बात थी चाहे फेसबुक हो, इंस्टाग्राम हो या फिर यूट्यूब हो, सभी पर छोटी-छोटी विडियोज की

रील्स आती हैं, जिन्हें एक बार देखने बैठो तो समय कब निकल जाता है, पता वाकई में ही नहीं चलता है। आप आज कहीं भी किसी को भी देख लें, जिसके पास स्मार्टफोन है, सभी यह देखने में ही व्यस्त हैं, हाँ, कहीं कुछ अपवाद पाए जा सकते हैं।

तो मैं भी एक बार ऐसे ही कुछ रील्स देखकर टाइमपास कर रहा था, तो इस लेख के शीर्षक पर एक रील देखी जिसमें अंग्रेजी के शब्दों के

उच्चारण

(Pronunciation)

पर बात हो रही थी, जिसमें मुझे यह जानकर अचरज हुआ कि अंग्रेजी के कई ऐसे शब्द हैं जिनके उच्चारण के आधार पर शब्द का अर्थ

यदि ठेठ हरियाणवी व्यक्ति अंग्रेजी में हाल-चाल पूछेगा तो *हाउ ड्यू डू रे* के उच्चारण में बोलेगा, उस में भी हरियाणा की बोली का *टच* अर्थात् उच्चारण आ ही जाएगा। अब हम जैसे लोगों को यदि पता चले कि अंग्रेजी में केवल उच्चारण के आधार पर ही शब्द का अर्थ अलग हो जाता है तो और सिरदर्दी बढ़ जाएगी।

बदल जाता है। हमारी हिंदी में तो एक ही तरह से उच्चारण होता है, और उसी तरह से लिखा जाता है और अर्थ भी नहीं बदलता है। परंतु कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ संदर्भ के आधार पर बदल सकता है। “सारंग ले सारंग चली, ले सारंग की ओट, सारंग हल्का जानकार दी सारंग ने चोट” इसका एक उदाहरण हो सकता है, व्याकरण की दृष्टि से देखा जाए तो इस दोहे में यमक अलंकार है क्योंकि सारंग शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग हुआ है परंतु अर्थ अलग-अलग हैं। यहां सारंग शब्द का अर्थ, संदर्भ के

हिसाब से दीपक, स्त्री, आँचल और हवा है, परंतु इसका उच्चारण एक ही रहा है।

अनुवाद में भी एक ही बात बार-बार सिखाई एवं बताई जाती है कि अनुवादक को स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा दोनों का ही व्याकरणिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान होना आवश्यक है। यदि अनुवाद करने के लिए सामग्री लिखित रूप में है तो उसमें ज्यादा मुश्किल नहीं होगी परंतु अनुवाद मौखिक ही करना पड़ जाए तो? वैसे यह बात केवल अनुवादकों पर ही लागू नहीं होती है, क्योंकि अंग्रेजी तो हम भारतीयों की दूसरी भाषा है, इसको तो हमें स्कूल में रट-रट कर सीखना होता है, इसके उच्चारण को छोड़कर बस जैसे हम अपनी मातृभाषा बोलते हैं वैसे ही अपनी मातृभाषा की बोली में इसको भी बोलना सीख ही जाते हैं। मैंने स्वयं कक्षा 7 तक केवल छोटी-बड़ी ए, बी, सी, डी सीखी है, अलग से बस पांच फल, सब्जियों, जानवरों इत्यादि के नाम रटे थे। अगर कोई पूछता भी था कि चलो ए, बी, सी, डी सुनाओ तो प्रत्युत्तर में पहले ये पूछा जाता था कि छोटी वाली या बड़ी वाली, कौन-सी सुनाई जाए। ऐसे ही यदि ठेठ हरियाणवी व्यक्ति अंग्रेजी में हाल-चाल पूछेगा तो हाउ ड्यू डू रे के उच्चारण में बोलेगा, उस में भी हरियाणा की बोली का टच अर्थात् उच्चारण आ ही जाएगा। अब हम जैसे लोगों को यदि पता चले कि अंग्रेजी में केवल उच्चारण के आधार पर ही शब्द का अर्थ अलग हो जाता है तो और सिरदर्दी बढ़ जाएगी। आज की नई पीढ़ी जो प्राइवेट, कॉन्वेंट स्कूल, कॉलेज में पढ़ रही है उन्हें तो इसका भली भांति ज्ञान होगा ही, परंतु आज भी हमारे भारत में एक बहुत बड़ा तबका ऐसे स्कूलों/संस्थानों में पढ़ता है जहाँ इतने सूक्ष्म स्तर पर अंग्रेजी अथवा हिंदी नहीं पढ़ाई जाती है।

ये तो पता था कि अंग्रेजी में ऐसे शब्दों की भरमार है जिनकी वर्तनी (spelling) तो अलग होती है परंतु उच्चारण एक समान होता है जैसे Two, To,

Too, Sea, See, For, Four, Son, Sun, Board, Bored, Break, Brake, Wine, Whine, Sole, Soul, Heir, Hair, Maze, Maize, Heal, Heel, Ate, Eight, Jeans, Genes, Days, Daze, Haul, Hall, Sell, Cell, Principal, Principle, Hole, Whole, Write, Right, Seen, Scene, Check, Cheque, No, Know, New, Knew, Peace, Piece, Buy, By, Ad, Add, Flea, Flee, Bean, Been, Meat, Meet, Band, Banned, Main, Mane, Loan, Lone, Ceiling, Sealing, Sensor, Censor, Steal, Steel, Throne, Thrown, Cite, Sight, Site, Stationery, Stationary इत्यादि। इनके उदाहरण भी बड़े मजेदार बनेंगे जैसे कि His son saw the sun – उसके बेटे/पुत्र ने सूरज देखा। They break the wheel while applying brake – वे गाड़ी को रोकते हुए पहिया तोड़ते हैं। You always whine after having wine – तुम शराब पीने के बाद हमेशा रोते हो। He ate eight apples – उसने आठ सेब खाए। Now a days thieves steal the steel almirahs – चोर आजकल लोहे की अलमारियां चुराते हैं। He will be sealing the ceiling with cement in this monsoon – वह इस बार की बारिश में छत को सीमेंट से बंद कर रहा होगा। अंग्रेजी में इस प्रकार के शब्दों को होमोफोन्स (Homophones) कहा जाता है। लेकिन यहां बात हो रही है ऐसे शब्दों की जिनकी वर्तनी तो एक ही होती है परंतु उच्चारण अलग होता है और उच्चारण के ही आधार पर उसका अर्थ बदल जाता है। अंग्रेजी में ऐसे शब्दों को हेटरोनिम (Heteronym) कहा जाता है। ऐसे कुछ आमतौर की भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों का उदाहरण उनके उच्चारण एवं अर्थ के साथ नीचे दिया गया है:-

हेटरोनिम शब्द	उच्चारण	उपयोग	अर्थ / उदाहरण
Tear	टीयर टेयर	संज्ञा क्रिया	आंसू फाड़ना – कागज, कपड़ा इत्यादि
Read	रीड रेड	क्रिया क्रिया	क्रिया की पहली विभक्ति - पढ़ना क्रिया की भूतकाल की विभक्ति - पढ़ा
Live	लाइव लिव	विशेषण क्रिया	जीवंत - Live Show रहना
Polish	पाउलिश पॉलिश	विशेषण क्रिया	पौलैंड का नागरिक चमकाना
Resume	रिज्यूम रेज्युमे	क्रिया संज्ञा	रुका हुआ कार्य फिर से शुरू करना नौकरी इत्यादि के लिए तैयार किया गया विवरण
Use	यूज यूस	क्रिया संज्ञा	प्रयोग में लाने के लिए उपयोग करने का तरीका - What is the use?
Close	क्लोस क्लोज़	क्रिया संज्ञा	बंद करना पास में
Present	प्रेज़ेन्ट परज़ेन्ट	संज्ञा क्रिया	उपहार उपस्थित
Record	रेकॉर्ड रिकॉर्ड	संज्ञा क्रिया	कीर्तिमान/अभिलेख दर्ज करना/रिकॉर्ड करना
Desert	डेहजर्ट डीजर्ट	संज्ञा क्रिया	वीरान जगह/रेगिस्तान एकदम से छोड़ देना
Produce	प्रोड्यूस प्रड्यूस	संज्ञा क्रिया	ऐसी वस्तुएं जिनका उत्पादन हो चुका है उत्पादन करना
Minute	माइन्यूट मिनेट	विशेषण संज्ञा	सूक्ष्म समय की एक इकाई – मिनट
Dove	डव डूव	संज्ञा क्रिया	एक पक्षी का नाम Dive क्रिया की भूतकाल विभक्ति
Lead	लीड लेड	क्रिया संज्ञा	नेतृत्व करना एक धातु का नाम – सीसा
Learned	लर्नड लर्नेड	विशेषण क्रिया	विशेष ज्ञान धारक/अधिक पढ़ा-लिखा Learn क्रिया की भूतकाल विभक्ति
Wind	विंड वाइंड	संज्ञा क्रिया	हवा का झोंका खींच कर बांधना

Wound	वाउंड वूंड	क्रिया क्रिया/संज्ञा	वाइंड क्रिया की भूतकाल विभक्ति चोट/जर्र्खम
Bow	बॉ बाउ	संज्ञा क्रिया	धनुष झुकना, जैसे Cow का उच्चारण होता है
Drawer	ड्रोर ड्रावर	संज्ञा विशेषण	दराज (फर्नीचर) जो चित्रकारी करता है या धन निकासी करने वाला व्यक्ति
Console	कंसोल कोंसोल	क्रिया संज्ञा	दुख में सांत्वना देना इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं की कंट्रोल यूनिट
Conflict	कॉन्फ्लिक्ट कनफ्लिक्ट	संज्ञा क्रिया	संघर्ष विरोधाभास
Contract	कॉन्ट्रैक्ट कंट्रेक्ट	संज्ञा क्रिया	अनुबंध सिकुड़ना
Conduct	कॉन्डक्ट कन्डक्ट	संज्ञा क्रिया	संचालन/चरित्र/आचरण आचरण करना/नेतृत्व करना
Concert	कॉन्सर्ट कन्सर्ट	संज्ञा क्रिया	समारोह/संगीत समारोह एकत्र करना
Compact	कम्पेक्ट कॉम्पेक्ट	क्रिया विशेषण	दबाना ठोस/सघन

बात जब हेटरोनिम शब्दों की चल रही हो तो होमोनिम्स (Homonyms) कैसे पीछे रह सकते हैं। हेटरोनिम शब्द की ही भली भांति होमोनिम्स (Homonyms) शब्द होते हैं, जिनकी वर्तनी तो समान होती है और उच्चारण भी समान होता है परंतु अर्थ अलग होता है। उदाहरण के तौर पर बैंक (Bank) शब्द एक होमोनिम्स है, क्योंकि यह किसी वित्तीय संस्थान या नदी के किनारे को संदर्भित कर सकता है, लेकिन दोनों ही मामलों में इसका उच्चारण एक जैसा ही होता है। इसके सामान्य उदाहरण हैं, Bat (चमगादड़ एवं बल्ला), Trunk (हाथी की सूंड एवं पेड़ का तना), Park (गाड़ी खड़ी करना एवं खेलने का बाग), Bark (भाँकना एवं पेड़ की छाल), Saw (See क्रिया की भूतकाल विभक्ति एवं लकड़ी/धातु काटने वाली आरी), Row (नाव को चलाना एवं कतार/पंक्ति) इत्यादि।

अब इन हेटरोनिम शब्दों का इतिहास क्या है, इस बारे में ज्यादा जानकारी तो नहीं है, क्योंकि अंग्रेजी भाषा ने अपने बहुत सारे शब्द अन्य बहुत सारी भाषाओं से लिए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार हेटरोनिम शब्द 19वीं शताब्दी में भाषाविद् और ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के संपादक जेम्स ए.एच. मरे ने गढ़ा था। यह ग्रीक के दो मूल शब्द "हेटेरो," जिसका अर्थ है "अलग," और "निम," जिसका अर्थ है "नाम" से बनाया गया है।

एक छोटी सी सोशल मीडिया रील से यह लेख लिखने का विचार आया तो यह भी कहा जा सकता है कि कई बार बैठ-बैठे टाइमपास करना भी बेकार नहीं जाता है, कहीं भी कुछ न कुछ सीखने को मिल ही जाता है। **Content** पर बात शुरू हुई थी और वही रह गया तो इसके उच्चारण के साथ अर्थ

भी स्पष्ट कर लेते हैं, जब इसका प्रयोग संज्ञा के तौर होगा तो इसका उच्चारण होगा **कॉन्टेंट** जिसका अर्थ होता है “जानकारी/सामग्री” और जब इसका प्रयोग क्रिया अथवा विशेषण के तौर पर होगा तो इसका उच्चारण होगा **कन्टेंट** तब इसका अर्थ होता है संतुष्ट होना, संतुष्टि प्रदान करना।

तो बस अब यही कहना चाहूंगा कि इस सामग्री को लिखने के बाद मुझे संतुष्टि है (I am feeling content after writing this content : आई एम फीलिंग कन्टेंट ऑफ्टर रायटिंग दिस कॉन्टेंट)।

धीरे-धीरे

व्योम, धरा पर धीरे-धीरे,
प्रेम भरा पर, धीरे-धीरे,
तप्त अग्नि में सोना जलकर,
हुआ खरा पर, धीरे-धीरे,
नदियाँ और हवाएं भी तो अक्सर,
धीरे-धीरे चलती हैं,
धीरे-धीरे सुबह निकलती,
शाम धीरे-धीरे ढलती है,
देख मुसीबत जीवन पथ पर,
नहीं कभी रुक जाना तुम,
संघर्षों के आगे देखो,
कभी नहीं झुक जाना तुम,
जीवन के लक्ष्यों की सीढ़ी,
थोड़ी-थोड़ी चढ़ा करो,
रुकने से अच्छा है तुम भी,
धीरे-धीरे बढ़ा करो।

- श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, लेखापाल

संस्कृति संरक्षण की आवश्यकता

लेख

श्रीमती अनीता करकरे

अतिथि रचनाकार



हमारी भारतीय सनातन संस्कृति व सभ्यता विश्व की प्राचीनतम संस्कृति व सभ्यताओं में से एक है। प्राचीन-काल से लेकर आजतक हमारी इस संस्कृति ने विविध परिवर्तनों को अनुकूलता की दृष्टि से आत्मसात किया है और प्रतिकूलता की दृष्टि से अस्वीकार भी किया है। अतः हमारी संस्कृति विविध-रूपा होते हुए भी मूल स्वरूप में एक ही है। संस्कृति के इस मूलरूप को धरोहर के रूप में हस्तांतरित करने वाले पूर्वजों के प्रति हम ऋणी हैं। उन्होंने संस्कृति की धवल-उज्ज्वल चादर जैसी थी वैसी ही हमें सौंप दी परन्तु क्या हम संस्कृति को उसके मूल स्वरूप में, आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित कर पा रहे हैं? हमारे सम्मुख यह एक गम्भीर प्रश्न है।

वास्तव में देखा जाए तो संस्कृति का संवाहक यह समाज होता है और समाज का निर्माण मनुष्य द्वारा होता है। अतः समाज में रहनेवाले मनुष्यों पर ही संस्कृति निर्भर होती है।

मनुष्य के शरीर पर होनेवाले आघात अस्थाई होते हैं तथा इनका उपचार सम्भव होता है परन्तु मनुष्य के चित्त, वृत्ति, मन व हृदय पर होनेवाले आघात अमिट होते हैं। इसका प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी देखा जा सकता है। इस भारत भूमि ने अनेक सदियों से आक्रमणों की विभीषिका झेली है। गाँव, खेत-खलिहान, विश्व-विद्यालय अनेक बार जलकर राख हो चुके। हम फिर उठ खड़े हुए। हमारे पूर्वजों ने अपनी सन्तानों पर - संस्कृति, सभ्यता एवं

अपनी भूख मिटाने हेतु वह दूसरों की रोटी छीनकर खाए तो वह विकृति है। अपनी भूख मिटाने के साथ-साथ दूसरों की भूख मिटाने की इच्छा से उपलब्ध रोटी को परस्पर मिल-बाँटकर खाता है, यह संस्कृति है।

राष्ट्रीयता के जो संस्कार रोपित किए हैं, वे कालजयी होकर आज भी जीवित हैं। हमारे यहाँ संस्कारों का विशेष महत्व है और इसे जीवन हेतु अनिवार्य माना गया है। इन्हीं रोपित संस्कारों की दृढ़ता के कारण ही हम अबतक बचे रहे। विगत दो-ढाई हजार वर्षों से भारत पर हुए आक्रमणों के कारण हमारी भौगोलिक संपदा, अर्थव्यवस्था, समाज की शांति इत्यादि सब कुछ छिन्न-भिन्न होने के बाद भी अपनी संस्कृति-संस्कारों की ध्वजा को झुकने नहीं दिया। आक्रमणोत्तर हम अधिक

शक्तिशाली राष्ट्र बने। वह केवल इन्हीं रोपित संस्कारों की दृढ़ता के कारण। हमारी इसी सांस्कृतिक दृढ़ता को पहचानकर वे भूभाग पर आक्रमण करने के स्थान पर अब सीधे हमारे मन-मस्तिष्क, हृदय पर वार कर रहे हैं। आक्रमण का नया माध्यम है - प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। इन दोनों ही माध्यमों से ऐसा अचूक वार हो रहा है कि सामान्य जन को इसका पता भी नहीं चलता।

टी.वी., इंटरनेट ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म पर प्रसारित होनेवाले धारावाहिकों, फिल्मों व वेब सीरीज इत्यादि में स्त्री पात्र को चारित्रिक दृष्टि से गिरा हुआ दिखाया जाता है। उसे अपने ही घर-परिवार में खलनायिका बनकर घर को अशांत कर खुश होते हुए दिखाया जाता है। वास्तविकता तो यह है कि भारतीय नारी अपने परिवार के लिये अथक परिश्रम कर घर को वैभवशाली बनाने के लिये सदैव प्रयासरत रहती है। अपनी मेहनत के साथ-साथ

स्त्रियाँ पूजा-अर्चना-प्रार्थना में भी कोई कसर नहीं रखती। दुःख की बात तो यह है कि आज के बच्चे अपनी दादी-नानी, माँ के व्यवहार को नहीं अपितु धारावाहिकों की खलनायिकाओं को देखकर अपना चरित्र गढ़ रहे हैं। यही कारण है कि उनमें माँ की ममता-करुणा या झांसी की रानी के समान साहस-दृढ़ता नहीं दिख रही है। यूँ तो भारतीय संस्कृति की जीवंतता के अनेक कारण हैं किन्तु उसका एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण है उसका संस्कार मूलक होना, संस्कार का अर्थ है - गर्भावस्था से लेकर मृत्यु पर्यंत मानव की चित्तवृत्तियों के परिष्कार एवं शोधन हेतु सतत किए जाने वाले विधान संस्कारों की सर्वोत्तम परिणति को संस्कृति कहते हैं। संस्कृति हमारी पाशविक मनोवृत्तियों का नियन्त्रण और उन्नयन करके उदात्त मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करती है।

"ताँबा मानुस जात इक, दोष से काला होया।

रगड़ लगे संस्कार की, चमकत दमकत होय ॥"

भावार्थ - ताँबा और मनुष्य एक जैसे होते हैं। अपने विषाक्त दोषों से शीघ्र ही काले पड़ जाते हैं। परन्तु संस्कारों से मांजा जाए, तो स्वर्ण से भी अधिक चमकने-दमकने लगते हैं।

संस्कृति को शब्दों में अभिव्यक्त करना कठिन है। यद्यपि भावों से उसकी अभिव्यक्ति हो सकती है। एक व्यक्ति शिक्षित हो सकता है, परन्तु सुसंस्कृत हो, यह आवश्यक नहीं। संस्कृति एक सुगन्ध की तरह है, जो बड़ों से बच्चों को, व्यक्ति से समाज को, समाज से देश को, देश से पूरे विश्व को अपनी सुगन्ध से सुवासित करती है। वस्तुतः संस्कृति कोई स्थूल वस्तु नहीं है, जिसे पृथक् रूप से दर्शाया जाए, अपितु मानवमात्र की वह प्रत्येक कृति, गतिविधि जो 'सर्वजन हिताय - सर्वजन् सुखाय' हो, उसे संस्कृति के अन्तर्गत समाविष्ट किया जा सकता है।

सम्यक कृति को संस्कृति कहते हैं। जो किसी के लिये अवरोध खड़ा न करें, समन्वय कर दे, सुखी कर दे, हितकारी हो, वह प्रत्येक कृति संस्कृति को ही परिभाषित करती है। कृति में सम्यकता का आधार सौन्दर्य बोध कराने के लिये किया जाता है। यह सौन्दर्य बोध संस्कारों द्वारा होता है। भारत में मनुष्य मात्र के जीवन में प्रत्येक अवस्था में, यानि जन्म से लेकर मृत्यु तक, सौन्दर्यबोध कराने की दृष्टि से ही षोडश संस्कारों का विधान किया गया है। संस्कारों का यह आधान केवल मानव तक ही सीमित है।

एक उदाहरण से संस्कृति, विकृति व प्रकृति को समझने का प्रयास करेंगे। मनुष्य अपनी भूख मिटाने के लिए रोटी खाता है, वह उसकी प्रकृति है। अपनी भूख मिटाने हेतु वह दूसरों की रोटी छीनकर खाए तो वह विकृति है। अपनी भूख मिटाने के साथ-साथ दूसरों की भूख मिटाने की इच्छा से उपलब्ध रोटी को परस्पर मिल-बाँटकर खाता है, यह संस्कृति है। भारत की औपनिषदिक संस्कृति सह-अस्तित्व को सबसे बड़ा दर्शन मानती है। कठोपनिषद कहता है -

ॐ सह नावतु सहनौ भुनक्तु । सहवीर्यं करवावहे।

तेजस्विनावधितमस्तु मा विद्विषावहे।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥

भावार्थ: परमेश्वर हम शिष्य और आचार्य दोनों की साथ-साथ रक्षा करें। हम दोनों को साथ-साथ विद्या के फल का भोग कराए। हम दोनों एकसाथ मिलकर विद्या प्राप्ति का सामर्थ्य प्राप्त करें। हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो। हम दोनों परस्पर द्वेष न करें। उक्त तरह की भावना रखने वाले का मन निर्मल रहता है। निर्मल मन से निर्मल भविष्य का उदय होता है। यह परस्पर सहभागिता ही भारतीय कला संस्कृति की प्राणवायु है। सहनौयशः अर्थात् हमारी यशोवृद्धि भी साथ-साथ हो, यही हमारी संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति का स्वरूप: भारत की संस्कृति वैश्विक है। इसके मूल में आध्यात्म है। संस्कृति मानवता का पर्याय है। 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इस वाक्य में हमारी संस्कृति स्पष्ट परिलक्षित होती है। हमारी संस्कृति को यह धारणा अन्य संस्कृतियों से पृथक् करती है। हमारी संस्कृति के स्वरूप को ऋग्वेद की ये ऋचाएँ और भी स्पष्ट करती हैं-

सर्वेभवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत् ॥

शाश्वत जीवन मूल्यों को हम संस्कृति के अंतर्गत कर सकते हैं। ऐसे मूल्य या मानवीय गुण जो मनुष्य के उदात्तीकरण में सहायक हैं उन सबको हम संस्कृति से सम्बोधित कर सकते हैं। हमारे यहाँ ईश्वर का जो स्वरूप है वही हमारी संस्कृति का भी स्वरूप है। 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की हमारी विचारधारा अनादिकाल से चली आ रही है।

सभ्यता और संस्कृति :- क्या सभ्यता और संस्कृति एक ही है? कई बार लोगों को भ्रम हो जाता है। सभ्यता यानि भौतिकता का विकास व विस्तार। सभ्यता के केन्द्र में है विज्ञान, अर्थ और बाज़ार। जैसे-जैसे विज्ञान का विकास होता है, वैसे-वैसे नए आविष्कारों से बाज़ार भर जाता है। नया सामान बाज़ार में आता है तो हम उसे खरीदते हैं। समाज उसका उपयोग करता है और सभ्यता आगे विकसित होती है। सभ्यता नए मकान, सड़कें, वाहन, विद्यालय, चिकित्सालय इत्यादि देती है। नवीन वस्त्र, तरह-तरह के माध्यम, उपकरण, कारखाने इत्यादि भी सभ्यता की देन हैं।

संस्कृति का केन्द्र, भारत में, आध्यात्म है। भोजन कैसे करना है, यह सभ्यता तय कर सकती है। आप धरती पर बैठ पत्तल में भोजन कीजिए अथवा चांदी की थाली में मेज़ कुर्सी पर बैठ। कहीं भी करें, कैसे भी करें, यह सभ्यता तय करती है। सभ्यता अन्न की पैदावार बढ़ा सकती है, लेकिन भोजन व

अन्न के प्रति दृष्टिकोण क्या हो, यह संस्कृति तय करेगी। संस्कृति कहती है- "हे अन्न! पूर्ण ब्रह्म भोजन की थाली इधर का प्रसाद है। इसे व्यर्थ फेंकना नहीं, पैरों तले आने देना नहीं।" भूखे को भोजन प्रदान करने की बात संस्कृति सिखाती है। इस प्रकार भोजन का विस्तार सभ्यता के अन्तर्गत आता है तो उसके प्रति दृष्टिकोण संस्कृति तय करती है। नए-नए वाद्य यन्त्र सभ्यता के विकास की देन हैं, बजाना क्या है यह संस्कृति निर्धारित करेगी। नए परिधान बनाने का कार्य सभ्यता का है, वस्त्र कैसे पहनना है इसका निर्धारण संस्कृति करेगी। संस्कृति हज़ारों वर्षों में आती है और हज़ारों वर्षों तक टिकती है। जो जन्म से लेकर अन्त तक साथ नहीं छोड़ती, उसका नाम संस्कृति है।

संस्कृति की सृजनात्मक प्रक्रिया अनेक रूपों में व्यक्त होती है, जैसे- साहित्य, संगीत, कला, धर्म, दर्शन, आमोद-प्रमोद, आचार-विचार, पर्व-त्योहार आदि। जो व्यक्ति, या जाति, या राष्ट्र इन सांस्कृतिक तत्वों का जितना विकास करता है, सांस्कृतिक दृष्टि से उसे उतना उन्नत माना जाता है। संस्कृति विहीन मनुष्य और पशु में अन्यथा कोई अन्तर नहीं है।

उपसंहार : हमारी संस्कृति का संरक्षण होगा, संवर्धन होगा तभी प्रकृति, पर्यावरण व लोक-कलाओं का संरक्षण होगा। हज़ारों हाथों से सांस्कृतिक प्रदूषण रोकना हमारा सामाजिक दायित्व है। आज हमारी संस्कृति पर, मन-मस्तिष्क पर लगने वाले आघात भले ही हलके-फुलके लग रहे हो परन्तु इनका असर अमिट है।

हमारी पीढ़ी जब हमसे पूछेगी कि जब ये सब हो रहा था तब आप क्या कर रहे थे? तब हमारे पास कोई उत्तर नहीं होगा। हमारा मस्तक, जो आज हमारे पूर्वजों के कारण गर्व से ऊँचा है, ऊपर उठने का साहस भी नहीं कर पाएगा।



महंगे पेट्रोल का असर अब शादियों पर भी पड़ने लगा है। खबर है कि दहेज में कार मिलने पर लड़के वालों ने लड़की वालों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का केस दर्ज करवा दिया। लड़के को सरप्राइज़ देने के लिए लड़कीवाले बारात के साथ उसके लिए एक BMW कार ले आए थे। BMW देखकर लड़का इतना घबराया कि खैनी लगाने की बात बोलकर मैरिज हॉल से बाहर निकला और रिक्शा पकड़कर वहां से फरार हो गया।

वहीं दहेज में कार मिलने की बात से लड़कवाले अब भी काफी नाराज़ हैं। उनका कहना है कि पेट्रोल महंगा होने के बाद तो उनके लड़के ने तो अपनी बाइक भी कबाड़ीवाले को बेच दी थी। वो बेचारा तो ऑफिस भी शेयरिंग ऑटो में ड्राइवर की गोदी में बैठकर ऑफिस जाता था। ऐसे में वो कार कैसे अफोर्ड कर सकता है?

लड़केवालों का कहना है कि वो अब भी दहेज का केस वापिस ले सकते हैं अगर लड़कीवाले दहेज में दी कार वापिस ले लें और उसके बदले लड़के को एक्टिवा दिला दें और ये भी लिखकर दें कि तीन साल तक एक्टिवा में पेट्रोल भी वे ही भरवाकर देंगे।

इस बारे में हमने जब लड़की के पिता से बात की, तो उनका कहना था कि वो लोग तो छोटे-मोटे हीरा कारोबारी हैं। वो लड़के को मर्सिडिज़ लेकर तो दे सकते हैं मगर उनके पास इतना पैसा नहीं है कि वो 3 साल तक लड़के की एक्टिवा में पेट्रोल भरवा सकें।

खबर है कि इसके बाद दोनों पक्षों में एक बार फिर लंबी बैठक हुई और लड़केवाले बीएमडब्ल्यू कार के स्थान पर बैटरी वाला रिक्शा लेने पर सहमत हो गए हैं। लड़केवालों का कहना है कि अब से हमारा लड़का इसी बैटरी वाले रिक्शा पर बैठकर ऑफिस जाया करेगा और अगर रास्ते में सवारियां मिलेंगी तो वो भी बिठा लेगा ताकि उससे जो पैसे मिले उससे वो अपनी छोटी बहन की स्कूटी में पेट्रोल डलवा पाए।

बैठक में एक बार फिर जोरदार बहस छिड़ गई जब लड़कीवालों ने कहा कि बैटरी वाले रिक्शा की बैटरी बदलने का खर्चा भी वे ही उठाएंगे। लड़केवालों ने इसका स्वागत किया और कहा कि यह एक बेहतर समझौता है, पर वे चाहते हैं कि बैटरी की वारंटी कम से कम पाँच साल की होनी चाहिए। इस पर लड़कीवाले थोड़ा सोच में पड़ गए लेकिन अंत में मान गए।

शादी की रस्में अब फिर से शुरू हो गई, लेकिन बारात में आये मेहमान अभी भी इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि महंगे पेट्रोल का असर अब शादियों पर भी देखने को मिल रहा है और अगले कुछ सालों में दहेज में ई-बाइक और सोलर चार्जर का ट्रेंड आ सकता है।

अंत में, लड़के और लड़की की शादी धूमधाम से पूरी हुई और दोनों परिवारों ने राहत की सांस ली।

समझदारी का सफर

कहानी

कु. वास्तविक कौशल
पुत्र, श्री रूपेन्द्र कौशल



किसी छोटे से गांव में राजू नाम का एक लड़का रहता था। राजू बहुत चंचल और शैतान था, लेकिन उसकी एक आदत थी वह कभी भी दूसरों की बात नहीं सुनता था। उसके माता-पिता और शिक्षक उसे हमेशा समझाते थे, लेकिन राजू की आंखों में अपनी शैतानी की दुनिया बसी थी।

एक अनोखी घटना

एक दिन, राजू अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। खेल-खेल में उसने एक पुरानी किताब पाई। किताब का नाम था "समझदारी का सफर"। उसने सोचा कि यह कोई मजेदार किताब होगी, इसलिए उसने इसे खोलकर पढ़ना शुरू किया।

किताब में लिखा था, "जो लोग अपनी बात नहीं सुनते, वे हमेशा मुश्किल में पड़ते हैं।" राजू ने हंसकर किताब बंद कर दी और खेल में लग गया। लेकिन कुछ ही समय बाद, उसे अपने दोस्तों से बिछड़ना पड़ा और वह अकेला रह गया।

जंगल में खो जाना

जब राजू अकेला था, उसने सोचा कि वह थोड़ी देर जंगल में घूम ले। लेकिन धीरे-धीरे वह जंगल में खो गया। चारों तरफ सिर्फ पेड़, झाड़ियाँ और अंधेरा था। वह डर गया।

उसने अपने दोस्तों को पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। तभी उसने याद किया कि उसके शिक्षक ने कहा था, "जब तुम खो जाओ, तो धैर्य रखो और अपने आसपास के लोगों से मदद मांगो।"

लेकिन राजू ने सोचा, "मैं अकेला ही निकल जाऊंगा।" उसने एक दिशा में चलना शुरू किया, लेकिन वह और भी गहराई में चला गया।

बुद्धिमान बुजुर्ग से मुलाकात

जंगल में भटकते-भटकते, राजू एक बूढ़े आदमी से मिला। वह आदमी बहुत समझदार और शांत था। उसने राजू की हालत देखी और पूछा, "बेटा, तुम यहां क्या कर रहे हो?"

राजू ने अपनी कहानी सुनाई। बूढ़े ने कहा, "तुमने अपनी ही बात नहीं मानी। अगर तुम पहले अपनी बात सुनते, तो इस हालात में नहीं होते।"



राजू ने शर्मिंदगी महसूस की और कहा,
"मुझे माफ कर दो। मैं समझ गया हूं कि सुनना
कितना जरूरी है।"

रास्ता दिखाना

बूढ़े ने राजू को समझाया कि अगर वह
ध्यान से सुनता, तो वह रास्ता ढूंढ सकता था। उसने
राजू को एक रास्ता बताया जो
उसे गांव तक ले जाएगा।
राजू ने ध्यान से उसकी
बात सुनी और रास्ते पर
चल पड़ा।

जंगल से
निकलते समय, राजू ने
देखा कि कितनी चीजें
उसे नजर आईं, जिन्हें
उसने पहले कभी नहीं
देखा था। उसने सोचा,
"अगर मैं और सुनता
और ध्यान देता, तो मैं
और भी बहुत कुछ सीख सकता था।"

घर लौटना

राजू अंततः अपने गांव लौट आया। जब वह
अपने घर पहुंचा तो उसके माता-पिता और दोस्तों
ने उसे गले लगा लिया। सभी ने उसे अपने घर लौटने
पर खुशी मनाई।

राजू ने अपने दोस्तों से कहा, "मैंने आज
एक बहुत बड़ी सीख ली। हमें हमेशा दूसरों की बात
सुननी और समझनी चाहिए।"

बदलाव

इसके बाद, राजू ने अपने जीवन में बदलाव
लाने का फैसला किया। वह अपने माता-पिता और
शिक्षकों की बातों को ध्यान से सुनने लगा। उसने
स्कूल में अपने दोस्तों को भी समझाया कि सुनना
कितना महत्वपूर्ण है।

धीरे-धीरे, राजू एक
समझदार और
सहायक लड़के में
बदल गया। अब
उसके दोस्तों और
परिवार वाले उसका
और उसकी बातों का
सम्मान करते थे।

निष्कर्ष : राजू की
कहानी यह सिखाती
है कि सही से सुनना
और उसे सही से
समझना कितना

आवश्यक है। जब हम दूसरों की बात सही से सुनते
और समझते हैं, तो हम बेहतर निर्णय ले सकते हैं
और जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।
समझदारी का सफर केवल खुद को सुनने में नहीं,
बल्कि दूसरों की भी सुनने में है।

इस तरह, राजू ने अपनी चंचलता को
समझदारी में बदल दिया, और उसके जीवन का
सफर एक नई दिशा में बढ़ा।





दुविधा कहो या असमंजस, भंवरजाल कहो या जंजाल हम सब आज के इस यांत्रिक दौर में रह कर भी हर दिन, हर क्षण इस शब्द को महसूस कर रहे हैं।

चलिए शुरू से शुरू करें, बचपन में कुछ अबोध रहने वाले वर्षों को छोड़ दिया जाए तो लगभग 4 वर्ष की आयु से मनुष्य एक औपचारिक वातावरण में अपनी पहचान बनाना शुरू कर देता है और यहीं से प्रारंभ होती है - "बुवाई उलझनों के बीज की हमारे मन में" सबसे पहली

उलझन रोज स्कूल क्यों जाना है? दूसरे बच्चों के पास कोई आकर्षक चीज़ देखकर उसे कैसे पाएं? थोड़े बड़े होने पर यह समझ आता है कि जो विद्यार्थी अपनी कक्षा में उत्तम अंक लाता है, परीक्षाओं में प्रथम आता है, खेल-कूद में भाग लेने में अग्रसर रहता है एवं अनेक प्रतिभाओं का धनी होता है उसके ऊपर स्नेह और पुरस्कारों/उपहारों की वर्षा होती है। कुछ बच्चे कोशिश भी करते हैं इस प्रतिस्पर्धा से भरे जीवन में अपना उत्तम प्रदर्शन देने की जो सफल हो जाते हैं उनके ऊपर कुछ क्षण की खुशियों के बदले इसी प्रकार के प्रदर्शन की उम्मीदों का दबाव आ जाता है एवं कुछ बच्चों के लिए निरंतर विफलता उनके कोमल मन पर विपरीत रूप से असर करती है, जो उनके जीवन की उलझनों को और बढ़ा देती हैं।

वक्त गुज़रता रहता है और हमें लगता है सब ठीक हो गया परंतु सवाल यह है कि क्या यह सब ठीक करने की कोशिश में हम स्वयं की खुशी का ध्यान रख पाए?

फिर एक दिन हर विद्यार्थी के जीवन में ऐसा आता है जहाँ से उसके भविष्य की आजीविका का आधार रखा जाता है " दसवीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम"। मेरे दृष्टिकोण में यह एक विद्यार्थी के जीवन की सबसे बड़ी उलझन होनी चाहिए परंतु उसके माता-पिता अपने जीवन की उलझन मान कर सुलझाने के प्रयास में लग जाते हैं।

कुछ बच्चे माता-पिता के द्वारा चयनित मार्ग पर चल पड़ते हैं, कुछ अपनी इच्छा या रुझान व्यक्त करने के बाद, अभिभावकों को मनाकर, स्वयंनुसार विषय चुनते हैं। इनमें से बहुत से किशोर/किशोरी बड़ों के अनुभव का सम्मान करते हुए अपनी इच्छाओं को किनारे रखकर उनके फैसलों का सम्मान करते हैं परंतु बहुत कम ऐसे होते हैं जो अडिग रहते हैं और अपरंपरागत तरीके से अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।

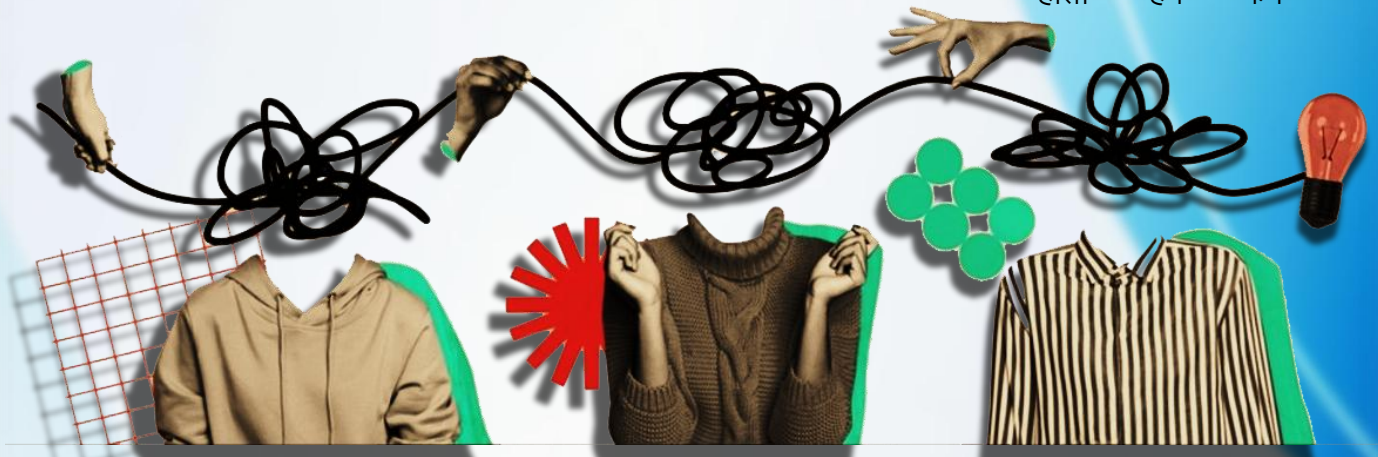
सवाल यहाँ सही या गलत का नहीं है, सवाल है जीवन के इस पड़ाव पर अपनों का दबाव होना चाहिए या बच्चों के मन की उलझनों को सुलझाने के लिए अपनों के साथ बैठकर विचार-विमर्श?

थोड़ा और आगे बढ़ते हैं- अब बारहवीं कक्षा का परिणाम और फिर स्नातक। किस महाविद्यालय में प्रवेश हेतु आवेदन करें? लड़कियों के लिए घर से बाहर जाकर किसी दूसरे शहर में रहना भी एक बहुत

बड़ा प्रश्न हो जाता है। इसी दौड़ में बने रहने के लिए कभी आर्थिक कभी सामाजिक कारणों से अपने सपनों का बलिदान दे कर, माता-पिता की खुशियों एवं स्वयं की भावनात्मक संतुष्टि के लिए समझौता कर लेते हैं और खुश रहने का प्रयास करते हैं।

वक्त गुजरता रहता है और हमें लगता है सब

स्वास्थ्य इत्यादि। पर इस यात्रा में वह बहुत से ऐसे कार्य करता है जो सामाजिक उलझनों को भी सुलझाने में सहायक होते हैं अब चाहे वह उसके व्यवसाय के कारण हो, परिजनों/अनजान की मदद करके हो, पशुओं की सेवा करके हो, या फिर पर्यावरण संरक्षण करके हो। हमें अहसास भी नहीं होता हम कब



ठीक हो गया परंतु सवाल यह है कि क्या यह सब ठीक करने की कोशिश में हम स्वयं की खुशी का ध्यान रख पाए? अधिकांश लोग जीवन के किसी न किसी दौर में जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो उन्हें लगता है काश उस वक्त थोड़ी हिम्मत और की होती तो जिंदगी कुछ और होती। इंसान जीवन पर्यंत उलझनों को सुलझाने में व्यस्त रहता है नौकरी, शादी, बच्चों की परवरिश एवं शिक्षा, बूढ़े माता-पिता की जिम्मेदारी, स्वयं का एवं परिवारजनों का

आत्मकेंद्रित उलझनों से, सामाजिक उलझनों और पारिवारिक उलझनों को संतुलित करने में माहिर हो जाते हैं और यह सब करने की प्रेरणा हमें हमारे प्रियजनों से समय-समय पर मिलती रहती है इसीलिए एक चलचित्र का शीर्षक मुझे अत्यंत पसंद है “चलती का नाम गाड़ी”। गाड़ी का काम चलते रहने का है, जब तक चल रही है तो चल रही है, लेकिन जब बंद हो जाए तो कोई नहीं पूछता।



हादसा

लेख

श्री नवीन कौशिक

सहायक लेखा अधिकारी



अभी कुछ देर पहले पढ़ा अखबार में – “उत्तर प्रदेश के उन्नाव में सड़क हादसा, 18 की मौत : बिहार से दिल्ली जा रही बस ओवरटेक करते समय टैंकर से टकराई, लाशें सड़क पर बिखरीं।” फिर उसके साथ मार्मिक चित्र व वीडियो भी जुड़े थे। पुरुष, महिलाएं व बच्चे जिनमें कुछ क्षण पहले प्राण संचार था अब वे खामोश मलबे में सड़क पर बिखरे पड़े हैं। अभी एक सप्ताह पहले ही उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक बाबा का सत्संग सुनने आए लोगों में भगदड़ के कारण 121 जीवन शांत हो गए। कुछ दिन पहले महाराष्ट्र के लोनावला में एक बांध पर एक महिला समेत चार बच्चे तेज जल प्रवाह में बह कर प्राण गंवा बैठे। इस घटना के वीडियो भी इंटरनेट पर संचारित हो रहे थे। एक परिवार नदी के तेज बहाव के बीच में एक दूसरे से सिमटे चिपके पकड़े हुए एक टापू सा खड़ा था और एक-एक करके पहले बच्चों के फिर उनके पिता के हाथ छूटे और देखते-देखते वे सब बह गए।

देखने और पढ़ने में तो यह सब घटनाएं असंबंधित हैं पर इन सब के तार जीवन रूपी हादसे से जुड़े हुए हैं। जीवन को हादसा कहना अपने आप में विवादास्पद है। विभिन्न धर्मों दर्शनों में जीवन के आकस्मिक होने या योजनाबद्ध होने के तर्क-वितर्क दिए गए हैं। पर मैं जीवन को एक हादसा ही मानता

हूँ। हम आकस्मिक ही कालांतर में इस समय और इस स्थान पर उपस्थित हैं। हम अनंत ब्रह्मांड के अनंत कालक्रम में क्षणभंगुर भी नहीं हैं। तथापि हम सामान्यतः रोजमर्रा के जीवन में इस तथ्य को भूले ही रहते हैं।

जीवन, अपने आप में, एक ऐसी यात्रा है जो समय और घटनाओं के अनंत प्रवाह में बहती जाती

समाज में प्रचलित यह मान्यता है कि सफलता का अर्थ धन, शक्ति, और प्रतिष्ठा से है। आधुनिक समय में भौतिकवाद दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता रहा है, जहाँ हम मानते हैं कि जितनी अधिक हमारे पास धन-संपत्ति होगी, उतनी ही अधिक हमारी खुशी होगी।

है। हम में से हर एक व्यक्ति इस यात्रा में अलग-अलग स्थानों, समाजों और परिस्थितियों में अस्थायी रूप से स्थित है, परंतु जीवन की क्षणभंगुरता और

अनिश्चितता हम सबके लिए एक समान है। रोजमर्रा के जीवन में हम अक्सर अपने अस्तित्व की अनिश्चितता को भुला देते हैं और भौतिक चीजों में खो जाते हैं। लेकिन जीवन को समझने और उसे सही अर्थों में जीने के लिए भौतिकवाद से ऊपर उठकर, अपने भीतर की संवेदनाओं और दूसरों के साथ सहानुभूति को पोषित करना आवश्यक है। यह न केवल हमारे स्वयं के लिए, बल्कि समाज और मानवता के कल्याण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

जीवन के अस्तित्व और उसके उद्देश्य को लेकर विभिन्न धर्मों और दार्शनिकों के दृष्टिकोण भिन्न हैं। कुछ दार्शनिकों और धार्मिक शिक्षाओं के

अनुसार, जीवन एक पूर्व-निर्धारित यात्रा है, जिसमें हर घटना और निर्णय ईश्वर या किसी परम शक्ति की योजना का हिस्सा है। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म में कर्म और भाग्य का सिद्धांत इस बात का समर्थन करता है कि हमारे पूर्व जन्म के कर्म हमारे वर्तमान जीवन को निर्धारित करते हैं। वहीं, बौद्ध धर्म में यह विचार है कि जीवन एक अनवरत चक्र का हिस्सा है, जहाँ हमारा उद्देश्य स्वयं को जागरूकता की ओर ले जाना है, ताकि हम मोक्ष प्राप्त कर सकें।

दूसरी ओर, अस्तित्ववाद (Existentialism) का दृष्टिकोण जीवन को एक आकस्मिकता मानता है, जहाँ हम अपनी वास्तविकता और उद्देश्य स्वयं निर्मित करते हैं।

अस्तित्ववादी विचारक जैसे कि सार्त्र और कैमू का मानना था कि जीवन का कोई पूर्व निर्धारित उद्देश्य नहीं होता, बल्कि यह हमें दिया गया एक खाली कैनवास है जिस पर हम अपनी भावनाओं, क्रियाओं और विकल्पों से अर्थ देते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, जीवन का असली उद्देश्य उसे उद्देश्य देना ही है, और यह उद्देश्य भौतिक सुखों में नहीं बल्कि आत्मा की गहराइयों में खोजा जाना चाहिए।

समाज में प्रचलित यह मान्यता है कि सफलता का अर्थ धन, शक्ति, और प्रतिष्ठा से है। आधुनिक समय में भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता रहा है, जहाँ हम मानते हैं कि जितनी अधिक हमारे पास धन-संपत्ति होगी, उतनी ही अधिक हमारी खुशी होगी। परंतु अनेक विचारकों ने समय-समय पर भौतिकता की इस अनिश्चितता और

अस्थायित्व को उजागर किया है। प्रसिद्ध दार्शनिक एपिक्यूरस का कहना था कि सच्चा सुख छोटी-छोटी संतुष्टियों में है - सादा जीवन, सच्चे दोस्त, और अनावश्यक इच्छाओं से मुक्ति। इसी प्रकार, भारतीय संत कबीर का यह मानना था कि बाहरी सुख-संपत्ति केवल भ्रम पैदा करती है; सच्चा आनंद तो अपने भीतर झांकने में है।

आज के मनोविज्ञान में भी इस सत्य का समर्थन मिलता है। अध्ययनों से

यह प्रमाणित हुआ है कि एक

बार जब हमारी आधारभूत

आवश्यकताएँ पूरी हो

जाती हैं, तो भौतिक

संपत्ति का अतिरिक्त

संग्रह हमारी खुशी में

कोई महत्वपूर्ण वृद्धि

नहीं करता। यह

"हेडोनिक ट्रेडमिल"

कहलाता है, जहाँ हम एक नई

वस्तु प्राप्त करके अस्थायी संतोष का

अनुभव करते हैं, परंतु फिर जल्दी ही कुछ और पाने

की इच्छा में उलझ जाते हैं। यह चक्र अंतहीन है और

वास्तविक संतोष से दूर ले जाता है।

इसलिए, सच्ची संतुष्टि भौतिकता के बाहर ही संभव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें भौतिक वस्तुओं से पूरी तरह विमुख हो जाना चाहिए, बल्कि हमें यह समझना चाहिए कि स्थायी संतोष बाहरी वस्तुओं पर निर्भर नहीं करता। हमारे सुख का स्रोत हमारे भीतर है - हमारे विचारों, संवेदनाओं और दूसरों के प्रति सहानुभूति में। भौतिकता का अतिरेक हमें अपनी असली खुशी और संतोष से दूर ले जाता है, जो कि हमारे भीतर और हमारे द्वारा निभाए गए संबंधों में ही पाया जा सकता है।



हमारा अस्तित्व, चाहे जितना भी महत्वपूर्ण लगे, अंततः एक अस्थायी अनुभव है। इसी सत्य को स्वीकार करके हम जीवन के वास्तविक उद्देश्य के प्रति जागरूक हो सकते हैं। प्राचीन दार्शनिक हेराक्लिटस ने कहा था, "कोई भी व्यक्ति एक ही नदी में दो बार कदम नहीं रख सकता।" उनका यह कथन हमें जीवन की क्षणिकता और उसमें निहित अनिश्चितता को दर्शाता है। इस विचार को अपनाकर, हम अपने जीवन के हर क्षण का सम्मान कर सकते हैं, उसे अपने पूर्णतम रूप से जी सकते हैं।

जीवन की क्षणभंगुरता का यह मतलब नहीं है कि हमें निराशावादी हो जाना चाहिए। बल्कि, यह हमें सिखाता है कि हम हर क्षण को मूल्यवान समझें, अपने संबंधों को और अधिक सहानुभूति और समझदारी से निभाएं, और अपने आप को बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करें। जीवन का यह दर्शन हमें यह भी सिखाता है कि हम दूसरों की मदद करें और उनके साथ अपना समय और सहानुभूति बांटें, क्योंकि यह हमारे जीवन को सच्चे अर्थों में संपन्न बनाता है।

हमारे अस्तित्व का असली उद्देश्य केवल व्यक्तिगत संतोष में नहीं, बल्कि दूसरों के साथ सह-अस्तित्व में भी है। बौद्ध धर्म में करुणा का महत्व अत्यधिक बताया गया है, जहाँ सच्चा सुख तभी संभव है जब हम दूसरों के कष्टों को समझते हैं और उनकी मदद करने का प्रयास करते हैं। महात्मा गांधी ने कहा था, "आप एक व्यक्ति की महानता का माप इस बात से कर सकते हैं कि वह समाज के कमजोर और पीड़ित लोगों के प्रति कैसा व्यवहार करता है।" यह विचार हमें समाज और मानवता के प्रति हमारे दायित्व का एहसास कराता है।

अपने जीवन को केवल स्वार्थ में सीमित रखना न केवल हमें अंततः असंतुष्ट करता है, बल्कि

यह हमें समाज और हमारे आसपास के लोगों से भी दूर कर देता है। वहीं, यदि हम दूसरों के साथ अपने अनुभव साझा करते हैं, उनके कष्टों को बांटते हैं और उन्हें सहारा देते हैं, तो यह हमारे जीवन में अधिक संतोष और प्रसन्नता लाता है। जीवन का एक महान उद्देश्य यह भी है कि हम एक-दूसरे के सहायक बनें और इस दुनिया को थोड़ी बेहतर जगह बनाएं। यह दार्शनिक दृष्टिकोण न केवल हमें एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है, बल्कि हमारे समाज को भी सशक्त बनाता है।

जीवन का सच्चा अर्थ न तो भौतिकता में है और न ही किसी पूर्व निर्धारित भाग्य में। बल्कि, यह हमारे दृष्टिकोण, हमारे निर्णयों, और दूसरों के प्रति हमारी करुणा में है। जीवन का दर्शन हमें सिखाता है कि हमें अपने अस्तित्व की अस्थिरता को स्वीकारना चाहिए, भौतिकता से ऊपर उठना चाहिए और अपने जीवन को एक सार्थक उद्देश्य देना चाहिए।

सच्चा सुख और संतोष बाहरी चीजों से नहीं, बल्कि भीतर की शांति, सहानुभूति, और दूसरों के साथ बनाए गए सच्चे संबंधों से प्राप्त होता है। जब हम भौतिकता से ऊपर उठते हैं, जीवन की क्षणभंगुरता को अपनाते हैं, और दूसरों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं, तब हम अपने जीवन को सच्चे अर्थों में जीते हैं। यह दर्शन न केवल हमारे अपने जीवन को सार्थक बनाता है, बल्कि समाज और मानवता को भी सशक्त बनाता है।

जीवन की अनिश्चितता के बावजूद, हमारे पास यह स्वतंत्रता है कि हम इसे अपने दृष्टिकोण और कर्मों से एक दिशा दें। और यही वह सच्चा सुख है जिसे पाने के लिए हमें अपनी आत्मा की गहराइयों में झांकना है। तभी हम अपने अस्तित्व को एक सार्थक मूल्य दे पाएंगे।

आत्म-विश्वास

लेख

श्री विद्या प्रकाश

सहायक लेखा अधिकारी



शीर्षक पढ़कर आप "विश्वास" के महत्व के बारे में सोच रहे होंगे। आपको यह भी आश्चर्य हो सकता है कि क्या "विश्वास" केवल एक अमूर्त चीज़ नहीं है। हां, लेकिन यह इतना महत्वपूर्ण भी है कि इसके लिए एक अलग लेख की मांग होती है। इसका मूल्य किसी की सोच से भी अधिक है।

"स्वयं में विश्वास रखना" - क्या यह काम करता है?

"बिल्कुल हाँ!" इसमें कोई संदेह नहीं है कि कोई व्यक्ति वैसा ही बन जाता है जैसा वह खुद पर विश्वास करता है, क्योंकि धीरे-धीरे हम अपने आप में वही विशेषताएं हासिल कर लेते हैं जो हम खुद पर विश्वास करते हैं। आप

अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन सबसे पहली चीज़ जो आपको हासिल करने की ज़रूरत है वह है अपना लक्ष्य निर्धारित करना, जो है "आत्म-विश्वास"। आपको खुद पर विश्वास होना चाहिए कि आप यह कर सकते हैं, कि आप इसे हासिल कर सकते हैं। क्या आपने कभी अरुणिमा सिन्हा की सफलता की कहानी के बारे में सुना है? दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली दुनिया की पहली दिव्यांग होने के नाते, किसी को आश्चर्य होता है कि उसने अपना पैर खोने

के बाद भी यह उपलब्धि कैसे हासिल की? यह सब इसलिए था क्योंकि उसे खुद पर विश्वास था और उसने दृढ़ निश्चय किया था कि वह इसे किसी भी तरह करेगी। उसे अपनी क्षमता पर पूरा भरोसा था और आखिरकार उसने यह कर दिखाया। हमारे आस-पास अनगिनत उदाहरणों ने साबित किया है कि हम जिस चीज़ पर विश्वास करते हैं उसे हासिल कर सकते हैं। मैं आपसे उन सफल लोगों की कहानियों को देखने का आग्रह करता हूँ जिन्होंने वह हासिल किया है जो अन्यथा असंभव दिखता है। एक प्रसिद्ध उदाहरण "मांझी: द माउंटेन मैन" में देखा गया

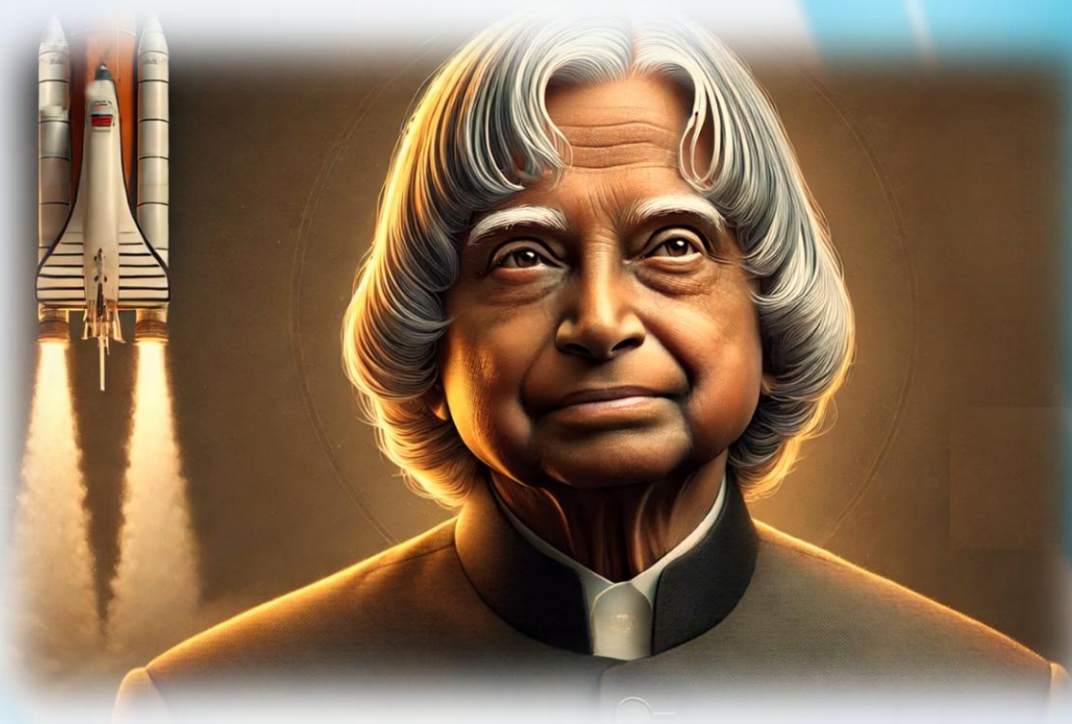
है, एक ऐसा व्यक्ति जिसने इस कहावत को गलत साबित कर दिया कि कोई पहाड़ नहीं तोड़ सकता। उन्होंने वह हासिल किया जो कोई और नहीं कर सका।

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली दुनिया की पहली दिव्यांग होने के नाते, किसी को आश्चर्य होता है कि उसने अपना पैर खोने के बाद भी यह उपलब्धि कैसे हासिल की?

एक मछुआरे के बेटे, भारत के मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का हमेशा मानना था कि व्यक्ति को हमेशा बड़े सपने देखने चाहिए और उसके लिए कड़ी मेहनत करने का दिल रखना चाहिए। उन्होंने भारत के राष्ट्रपति बनकर इसे साबित भी किया और उन्हें हमारे देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, भारत रत्न पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। किस बात ने उसे प्रेरित किया? यह उनका खुद पर विश्वास था, उनका आत्म-विश्वास था।

ऐसे कई लोगों के उदाहरण हैं जो अपने जीवन में अपनी उपलब्धियों से आपको प्रेरित करेंगे, सिर्फ इसलिए क्योंकि उन्हें खुद पर गहरा विश्वास था

जरूरत है. इस पंक्ति को हमेशा याद रखें, "अगर मुझे विश्वास है कि मैं कर सकता हूँ, तो निश्चित रूप से मैं करूंगा।"



और विश्वास था कि वे ऐसा कर सकते हैं। और आखिरकार, उन्होंने ऐसा किया। यही जीवन का मंत्र है. यह कहावत सच है, "आदमी जैसा विश्वास करता है वैसा ही बन जाता है।"

आपको बस इस विश्वास के साथ अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहने की आवश्यकता है कि आप एक दिन अपना लक्ष्य पूरा करेंगे, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, अपने लक्ष्य की ओर यात्रा कितनी भी कठिन क्यों न हो, चाहे आप कितनी भी कठिन क्यों न हों। इसके लिए काम करने की

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रेरक शब्दों में: "अगर मुझे विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ, तो मैं निश्चित रूप से इसे करने की क्षमता हासिल कर लूंगा, भले ही शुरुआत में मेरे पास यह न हो।" सिर्फ स्वयं में विश्वास रखो। अपने आप को कभी भी निराश न होने दें. खुद को हमेशा प्रेरित रखें. सकारात्मक विश्वास रखें कि आप कर सकते हैं, और आप वास्तव में ऐसा करेंगे। विश्वास रखें कि आप वास्तव में कुछ हासिल कर सकते हैं, और मेरा विश्वास करें, आप इसे हासिल करने में सक्षम होंगे।



मंगल गीत

कहानी

श्रीमती अर्चि शर्मा

पत्नी, श्री नवीन कौशिक



वह दूध के करोड़पतियों की दुकान से आधा लीटर दूध और 20 रुपए का ब्रेड का पैकेट साइकिल के हैंडल पर लटकाकर चला। उचक कर सीट पर बैठते हुए जो उसने गति पकड़ी तो मानो एक अरसे का चलता सिपाही थक कर बैठने से पहले एक जोर और लगा ले। बेटा ब्रेड पसंद करता है, तो चाय के साथ ब्रेड की मिठास का रस, क्षण भर के लिए

चिंताओं और थकान से मुक्ति देता है। उसका प्रतिदिन किसी समय को लेकर कोई आकर्षण है, तो वह यह है। उसे कहीं भीतर याद है कि कभी-कभार उठाए बीड़ी के

कश और
देसी की
दुकान पर
आवाजाही

उसको महंगी
ही पड़ी है।
उसकी पत्नी
बिना किसी
इच्छा या
शिकायत के
जब चाय
उसके सामने
लाकर रख

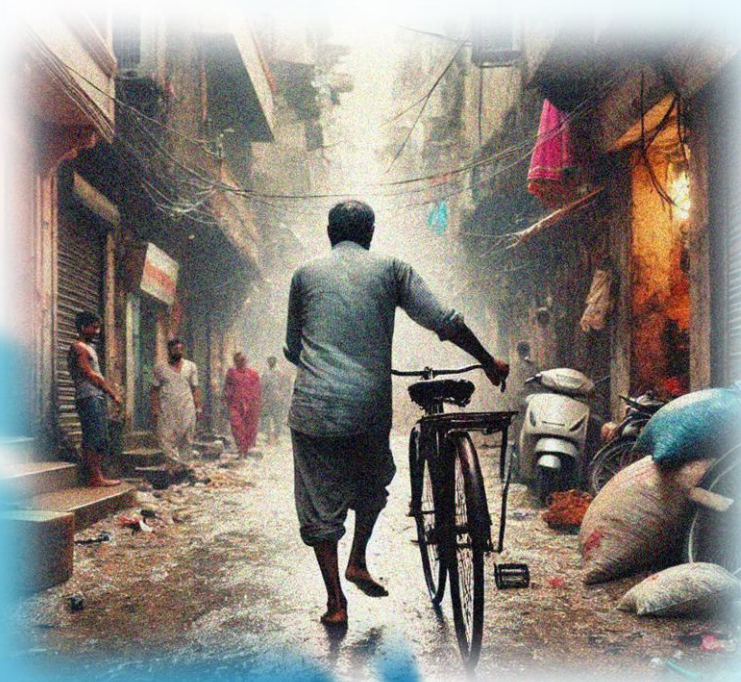
वह कभी नहीं सोचता, “यह मुझसे कुछ माँगती क्यों नहीं है?” नहीं माँगती है, तभी तो उसकी पत्नी है। ज्यादा बात करेगी, तो वह कहाँ से लाएगा उसे चुप कराने की ताकत, चाहे प्यार से हो या लात से?

देती है, वह कभी नहीं सोचता, “यह मुझसे कुछ माँगती क्यों नहीं है?” नहीं माँगती है, तभी तो उसकी पत्नी है। ज्यादा बात करेगी, तो वह कहाँ से लाएगा

उसे चुप कराने की ताकत, चाहे प्यार से हो या लात से? उसका बेटा उसके पास आकर सोता है। उस समय उसकी निराशा कहीं उसके दिमाग से निकलकर जैसे हवा में फैलने लगती है और वह उस गली में दबता हुआ

सा महसूस करता है जिसमें उसका घर है। वहाँ एक आदमी या साइकिल सवार ही घुस सकता है, पर सुअर, गायें और बच्चे पहुँचे खिलाड़ी है इस दुनिया

के उस संकरी गली की सड़ती नालियों को धता बताते हुए वे उन्मुक्त विचरते हैं। किसी घर से गीतों की आवाज़ आ रही है। किसी के बच्चा हुआ है, उसकी पत्नी अपनी साड़ी सीधी कर रही है। वह भी ऐसी ही गली में पैदा हुआ



था। तब बंटे पताशों का जिक्र बड़े कामों में हुआ था। बस गलियाँ बदल गई हैं। घरों पर किशोरों के चहकने का शोर है, वह पैर सीधे करके लेट गया है, छत को देखता हुआ। उसने गली क्या सोचकर बदली थी? आठवीं पास हो गया है, कहीं चपरासी तो लग ही जाएगा। माँ-बाबू को छोड़कर क्यों चल दिया था? कि फिर लेने आ पाएगा? उन्होंने भी कोई शिकायत नहीं की थी। किस बूते पर करते, ऐसा वह तब सोचता था। अब वह जानता है कि वह बड़ा भाग्यशाली है कि आज तक अपनों से किसी शिकायत या विरोध का सामना उसे करना नहीं पड़ा है। बाहर आदमियों का भी जमावड़ा लगने लगा है। वे जात की बात करते हैं, वह हँस देता है। उसने अपनी जात का काम कभी किया ही नहीं है। क्यों करे? कहाँ लिखा है? वह अपने बेटे से कभी नहीं कह सकता कि उसे क्या करना है। कुछ आदमी बढ़ते दामों की बात कर रहे हैं, जानकार हैं। दो-चार बातें करके रफा- दफा करना जानते हैं।

**“हमारा मुन्ना राजकुमार,
दूध में केसर, काजू चारा।”**

ये जानकार सदा ही कहेंगे, इससे तो अच्छा है आंकड़ी डाल लो, डाल कर देखी है न आंकड़ी। वह मर जाएगा पर चोरी नहीं करेगा मुफ्त में मिले तो बात अलग है। कोई बोलता है ढोर-डंगर मारना बंद करवा रहे हैं, तो चिकन मार लेना। मनाही नहीं होगी

कभी उसकी, न खपत में कमी। उसके विचारों में रुकावट आती है, जब उसका बेटा यकायक उठकर उसे कल स्कूल आने को कहता है। वास्तव में बात कुछ होगी नहीं। बच्चे ठीक कर रहे हैं, उनके लिए स्कूल कर रहा है।

मालिक से छुट्टी माँगे या क्या करे? पत्नी को भेजा था पिछली बार गर्दन भी हिलाते नहीं बनी उससे। अपने बच्चे की व्याख्या पर तो उसका ध्यान ही नहीं गया था। वह समझ नहीं पाया था कि यह किसकी बेचारगी है। गीतों की आवाज़ बंद हो गयी है और औरतें अब अपनी समस्याएं लेकर बाहर हैं। बच्चा रुकवाने का ऑपरेशन करवाने की सलाह जारी है। लोग समझदार होने लगे हैं। देखते हैं किसका बच्चा गली से निकलकर अगली गली में नहीं जाता है।

वह उठ खड़ा होता है। उस टांड की तरफ जाता है, जिस पर उसकी पत्नी ने एक बिल्कुल बेरंग साड़ी का पर्दा बना कर लटका दिया है।

क्या है उस पर? दसवीं की कुछ किताबें, सिलाई मशीन, उसके बाबू की धोतियाँ, जो वह जाने क्यों सहेज कर रख रहा है। चिड़ी-बल्ला जो खरीदा है बेटे के लिए। पत्नी आए तो दिखाए और दिन पूरा हो। याद रखना है कल छुट्टी लेनी है या नहीं।



महाबोधि

यात्रा-संस्मरण

श्रीमती स्वीटी कुमारी गुप्ता

पत्नी, श्री विद्या प्रकाश



महाबोधि मंदिर की कहानी बहुत ही प्रेरणादायक और महत्वपूर्ण है।

यह मंदिर बोधगया, गया, बिहार में स्थित है और यह स्थल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए सबसे पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है।

ध्यान का कठिन मार्ग अपनाया, परन्तु उन्हें अभी भी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई थी।

एक दिन, उन्होंने संकल्प लिया कि जब तक उन्हें संपूर्ण ज्ञान (बोधिक्सव) प्राप्त नहीं होता, तब तक वे ध्यान की मुद्रा में बैठे रहेंगे। यह संकल्प



कहानी 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व की है, गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुम्बिनी में 563 ईसा पूर्व को हुआ था। राजकुमार सिद्धार्थ गौतम ने राजसी जीवन और सभी सांसारिक सुख-सुविधाओं को त्याग कर सत्य और ज्ञान की खोज के लिए वन की ओर प्रस्थान किया। राजकुमार सिद्धार्थ ने तपस्या और

लेकर वे निरंजना नदी (वर्तमान में फल्गु नदी के नाम से जाना जाता है) के पास एक पीपल वृक्ष के नीचे बैठ गए। यह वृक्ष बाद में बोधि वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सिद्धार्थ ने कठोर तपस्या और ध्यान में दिन-रात एक कर दिया। कई कठिनाइयों और प्रलोभनों का सामना करते हुए भी वे अपने ध्यान में

अडिग रहे। अंततः, वैशाख माह की पूर्णिमा को, सिद्धार्थ को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध बन गए। इस प्रकार, वह स्थान जहां उन्होंने परम ज्ञान प्राप्त किया, 'बोधगया' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

महाबोधि मंदिर उसी स्थल पर बनाया गया है, जहां भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। इस मंदिर का निर्माण सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में करवाया था, जिन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद इस पवित्र स्थल का दौरा किया था। मंदिर की वास्तुकला अद्वितीय है, और इसमें बोधि वृक्ष की छांव में भगवान बुद्ध की ध्यान मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है।

समय के साथ, महाबोधि मंदिर कई बार पुनर्निर्मित और संरक्षित किया गया है। वर्तमान बोधगया को पहले कई नामों से जाना जाता था - उरुवेला, संबोधि (पूर्ण ज्ञान प्राप्ति), वज्रासन और महाबोधि। बोधगया नाम 18वीं शताब्दी के आसपास ही अस्तित्व में आया! यहाँ तक कि महाबोधि मंदिर को भी पहले बोधिमंदा-विहार के नाम से जाना जाता था। आज, यह स्थल यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है और हर साल लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां आते हैं। वे इस पवित्र स्थल पर ध्यान, प्रार्थना और श्रद्धा के साथ समय बिताते हैं।

महाबोधि मंदिर की यह कहानी हमें सत्य, धैर्य और ज्ञान के महत्व का पाठ पढ़ाती है। यह प्रेरणादायक कथा न केवल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए बल्कि सभी मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है।

इसी के चलते, महाबोधि मंदिर में जाने का अवसर मुझे भी एक बार प्राप्त हुआ। बोधगया की पवित्र धरती पर, महाबोधि मंदिर के प्रांगण में, मैं सदियों पुराने इतिहास और गहन आध्यात्मिक अनुभवों से ओतप्रोत वातावरण मैंने स्वयं अनुभव

किया। इस पवित्र स्थल पर रहते हुए, मैंने जीवन के अर्थ और धर्म के सार को नई दृष्टि से देखा है।

सूर्य की पहली किरणें मंदिर की शिखर पर टकराती हैं और एक अद्भुत प्रकाश फैलाती हैं। मैंने जब सुबह-सुबह मंदिर के शांत वातावरण में ध्यान लगाना शुरू किया तो इस पवित्र प्रकाश में, मेरा मन शांत हुआ और मैंने अपने भीतर की शांति को खोज पाई।

मंदिर के चारों ओर बौद्ध भिक्षुओं का आना-जाना लगा रहता है। वे अपने दैनिक कार्यों में लगे रहते हैं, लेकिन उनके चेहरे पर एक गहरी शांति दिखाई देती है। मैंने उनसे बातचीत की और उनके अनुभवों को सुना। उन्होंने मुझे बताया कि कैसे उन्होंने बुद्ध के उपदेशों का पालन करके अपने जीवन में शांति और खुशी पाई।

मैंने मंदिर के पुस्तकालय में जाकर बौद्ध धर्म के ग्रंथों का भी अध्ययन किया। इन ग्रंथों ने मुझे बुद्ध के जीवन और उनके उपदेशों के बारे में गहराई से जानने का अवसर दिया। मैंने समझा कि बुद्ध ने हमें कैसे दुख से मुक्ति पाने का मार्ग दिखाया।

मैंने मंदिर के आसपास के क्षेत्रों का भ्रमण किया। मैंने बोधि वृक्ष को देखा, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। मैंने उस स्थान को देखा जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। मैंने उन स्थलों को देखा जहां बुद्ध ने अपने जीवन के अंतिम क्षण बिताए थे। इन सभी स्थलों पर, मैंने बुद्ध के जीवन और उनके उपदेशों के महत्व को महसूस किया।

मैंने मंदिर में आयोजित होने वाले विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया। इन अनुष्ठानों से मुझे बुद्ध के साथ एक गहरा संबंध महसूस हुआ। मैंने महसूस किया कि मैं हूँ या चाहे कोई और भी मनुष्य हो, किसी भी धर्म विशेष को हो तब भी बुद्ध के



उपदेशों का पालन करके एक बेहतर इंसान बन सकता है।

मैंने मंदिर में रहते हुए कई लोगों से मुलाकात की। वे अलग-अलग देशों से आए थे, लेकिन सभी एक ही उद्देश्य से यहां आए थे - बुद्ध के उपदेशों को समझने और अपने जीवन में लागू करने के लिए। मैंने उनसे बातचीत की और उनके अनुभवों को सुना। मैंने महसूस किया कि हम सभी एक ही हैं, और हम सभी शांति और खुशी की तलाश में हैं।

महाबोधि मंदिर में रहते हुए, मैंने जीवन के अर्थ और धर्म के सार को नई दृष्टि से देखा तो मैंने सीखा कि बुद्ध के उपदेश हमें दुख से मुक्ति पाने और एक खुशहाल जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं। मैंने महसूस किया कि बुद्ध के उपदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे सदियों पहले थे।

मैंने महाबोधि मंदिर में बहुत कुछ सीखा। मैंने यहां शांति, खुशी और ज्ञान पाया। मैं हमेशा के लिए इस पवित्र स्थल से जुड़ी रहूंगी। मैं उन सभी लोगों को प्रेरित करना चाहती हूँ जो शांति और खुशी की तलाश में हैं। वे महाबोधि मंदिर आएँ और बुद्ध के उपदेशों का अनुभव करें।

अगर आप बोधगया घूमने की योजना बना रहे हैं, तो ऐसा करने का सही समय है अक्टूबर के बाद क्योंकि बोधगया में बहुत गर्मी होती है। बोधगया में, 80-फुट बुद्ध प्रतिमा को अनदेखा करना असंभव है। हालाँकि इसे “महान बुद्ध प्रतिमा” कहा जाता है, लेकिन स्थानीय रूप से इसे 80-फुटी बुद्ध प्रतिमा के नाम से जाना जाता है।

मित्रता की पात्रता

लेख

सुश्री आकांक्षा सिकरवार

अतिथि रचनाकार



प्रस्तावना- आधुनिक समय की व्यवस्था को अगर हम देखें तो पाएंगे कि हम जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं, उतना ही स्वयं को अकेला व दुःखी बना रहे हैं, और हमारी आधुनिक तकनीक ने भी इतना विकास नहीं किया है कि कोई ऐसी तकनीक दी हो जिसके माध्यम से जो हमारे मन में भरे भावनाओं को सुना या समझा जा सकें।

इन भावनाओं को प्रसारित करने, साझा करने या स्वयं को तनाव से दूर रखने के लिए एक कम से कम एक मित्र का होना आवश्यक है, और वह मित्र की पात्रता सिर्फ इतनी हो कि वो आपकी बातों या समस्या को सुन व समझ सकें क्योंकि समस्या को समझने व सुनने के कारण ही श्री भगवान श्री राम, वानरों के मित्र से पिता के समान हो गए थे।

यह उस समय की बात है जब सीता माता का अपहरण हो गया था और भगवान राम सुग्रीव व हनुमान जी के पास मदद के लिए गए थे। लेकिन उन्होंने सर्वप्रथम अपनी समस्या ना बताकर मित्र सुग्रीव की समस्या इस तरह सुनी मानो एक पिता अपनी संतान की बात सुन रहा है। और उन्होंने सुनने के बाद उस समस्या का निराकरण किया और एक मानव उनके लिए भगवान बन गए। कुल मिलाकर मित्र की पात्रता यही है कि जिससे हमें और हमारे मस्तिष्क को एक ऐसा सहारा मिले जिससे हम किसी भी तनाव व कमजोरी को भूलकर मजबूत व शांत महसूस करें।

पात्र की सीमाएं:- यहाँ पात्र का संबंध उस व्यक्ति विशेष से है जिसे हम चुनकर अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उस पात्र के ना होने पर हमें कई बार दुःखी व उदास रहना पड़ता है। मित्र का चरित्र या उसका नाता ऐसा हो जैसे कि यदि उसका मित्र कुछ गलत कर रहा है तो उसको समझाए कि यह गलत है लेकिन तब भी उसका मित्र यह ना समझे तो उसकी गलती में सहयोग दे।

हालाँकि यह कथन विरोधाभासी हो सकता है लेकिन इस कथन को सबसे बड़ा सहयोग हमारे धर्मग्रंथ महाभारत में दुर्योधन व कर्ण की मित्रता से मिलता है क्योंकि दुर्योधन गलत था, उसने द्रोपदी और पांडवों के साथ गलत किया था जिस कारण से महाभारत हुई लेकिन कर्ण ने दुर्योधन का साथ मरते दम तक दिया।

बोला जाता है कि मित्र हमेशा देखकर बनाओ कि वह अच्छा है या नहीं। मेरा मानना है कि आप जिस व्यक्ति से जैसा व्यवहार करोगे आपको वैसा ही व्यवहार आपको मिलेगा और सबसे महत्वपूर्ण यह एक व्यवहार ही है जिसमें एक व्यक्ति कब मित्र से परिवार, भगवान या फिर उस व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान बन जाता है।

बाबा वैद्यनाथ धाम

यात्रा संस्मरण

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक



वैद्यनाथ मंदिर भारतवर्ष के झारखण्ड राज्य के **देवघर** नामक स्थान में अवस्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। शिव का एक नाम "वैद्यनाथ" भी है, इस कारण लोग इसे 'वैद्यनाथ धाम' भी कहते हैं। यहाँ माता पार्वती और बाबा भोलेनाथ दोनों का मंदिर है। यह एक सिद्ध पीठ है। इस कारण इस लिंग को "कामना लिंग" भी कहा जाता है। कहते हैं बाबा के दर्शन करने मात्र से आरोग्य की प्राप्ति होती है। **वैद्यनाथ मंदिर** के सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन देवघर और जसीडीह हैं। निकटतम हवाई अड्डा देवघर में स्थित है। पूरे भारत से अनेकों ट्रेनें इस मार्ग पर परिचालित होती हैं। श्रावण माह में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए विशेष ट्रेनों का परिचालन भी किया जाता है।

देवघर में शिव का अत्यन्त पवित्र और भव्य मंदिर स्थित है। हर वर्ष सावन के महीने में श्रावण मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु "बोल-बमा!" "बोल-बमा!" का जयकारा लगाते हुए बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने आते हैं। ये सभी श्रद्धालु अजगैबीनाथ मंदिर, सुल्तानगंज से पवित्र गंगा का जल लेकर लगभग एक सौ आठ किलोमीटर की अत्यन्त कठिन पैदल यात्रा कर बाबा को जल चढ़ाते हैं। जो श्रद्धालु पैदल यात्रा करने में समयाभाव या किसी अन्य कारण से असमर्थ होते हैं वो सभी देवघर और जसीडीह से सुल्तानगंज की यात्रा बस या निजी वाहन से भी करते हैं। वो कहते हैं ना जितनी शक्ति उतनी भक्ति। सुल्तानगंज भी सड़क एवं रेलमार्ग द्वारा

भारत के अनेक शहरों से जुड़ा हुआ है। सीधे सुल्तानगंज जाकर गंगा जल भरकर भी श्रद्धालु देवघर तक की यात्रा पैदल करते हैं। यह रास्ता अपेक्षाकृत अधिक सुलभ माना जा सकता है क्योंकि यह समय की बचत करता है।

स्थापना व कथा

इस लिंग की स्थापना का इतिहास यह है कि एक बार असुरराज रावण ने हिमालय पर जाकर शिवजी की प्रसन्नता के लिए घोर तपस्या की और अपना सिर काट-काटकर शिवलिंग पर चढ़ाना शुरू कर दिया। एक-एक करके नौ बार सिर चढ़ाने के बाद दसवां सिर भी काटने को ही था कि शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हो गए। उन्होंने उसके दसों सिर ज्यों-के-त्यों कर दिए और उससे वरदान माँगने को कहा। रावण ने लंका में जाकर उस लिंग को स्थापित करने के लिए उसे ले जाने की आज्ञा माँगी। शिवजी ने अनुमति तो दे दी, पर इस चेतावनी के साथ दी कि यदि मार्ग में इसे पृथ्वी पर रख देगा तो वह वहीं अचल हो जाएगा। अन्ततोगत्वा वही हुआ। रावण शिवलिंग लेकर चला पर मार्ग में एक चिताभूमि आने पर उसे लघुशंका निवृत्ति की आवश्यकता हुई। पास ही उसे एक व्यक्ति दिखा जो चरवाहा था, रावण ने उस लिंग को उसे थमा दिया और लघुशंका-निवृत्ति करने चला गया। इधर उस व्यक्ति ने ज्योतिर्लिंग को बहुत अधिक भारी अनुभव कर भूमि पर रख दिया। फिर क्या था, लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे न उखाड़ सका और निराश होकर मूर्ति पर अपना अँगूठा गड़ाकर लंका को चला गया।

इधर ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उस शिवलिंग की पूजा की। शिवजी का दर्शन होते ही सभी देवी देवताओं ने शिवलिंग की वहीं उसी स्थान पर प्रतिस्थापना कर दी और शिव-स्तुति करते हुए वापस स्वर्ग को चले गए। जनश्रुति व लोक-मान्यता के अनुसार यह वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिंग मनोवांछित फल देने वाला है।

मंदिर के मुख्य आकर्षण :-



वैद्यनाथधाम (देवघर) का मुख्य मंदिर

“देवघर” का शाब्दिक अर्थ है देवी-देवताओं का निवास स्थान। देवघर में बाबा भोलेनाथ का अत्यन्त पवित्र और भव्य मंदिर स्थित है। हर साल सावन के महीने में श्रावण मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु “बोल-बमा!” “बोल-बमा!” का जयकारा लगाते हुए बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने आते हैं। ये सभी श्रद्धालु सुल्तानगंज से पवित्र गंगा का जल लेकर लगभग सौ किलोमीटर की अत्यन्त कठिन पैदल यात्रा कर बाबा को जल चढ़ाते हैं। पवित्र श्रावण माह के अलावा पूरे साल भर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

मंदिर के समीप में स्थित पवित्र तालाब

मंदिर के पास ही एक विशाल तालाब भी स्थित है। जिसे शिवगंगा के नाम से जाना जाता है। बाबा वैद्यनाथ का मुख्य मंदिर सबसे पुराना है जिसके आसपास अनेक अन्य मंदिर भी बने हुए हैं। बाबा भोलेनाथ का मंदिर माँ पार्वती जी के मंदिर से जुड़ा हुआ है। दोनों मंदिरों का गठबंधन कराने का विशेष महत्व है। बाबा के मंदिर के शीर्ष कलश से माता के मंदिर के शीर्ष कलश तक लाल कपड़े से मंत्रोच्चार द्वारा पवित्र गठबंधन किया जाता है।



पवित्र तालाब

पवित्र यात्रा :-

वैद्यनाथ धाम की पवित्र यात्रा श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) में शुरू होती है। सबसे पहले तीर्थ यात्री अजगैबीनाथ सुल्तानगंज में एकत्र होते हैं जहाँ वे अपने-अपने पात्रों में पवित्र गंगाजल भरते हैं। इसके बाद वे गंगाजल को अपनी-अपनी कांवर में रखकर वैद्यनाथ धाम और वासुकिनाथ की ओर पैदल बढ़ते हैं। पूरे रास्ते कांवरियों की सुविधा का ध्यान रखा जाता है। उनके खाने-पीने, स्वच्छ होने, स्नान करने तथा विश्राम आदि की व्यवस्था का इंतजाम पूरे रास्ते सुल्तानगंज से देवघर तक किया जाता है। कांवरियों के पांवों में चल-चल के छाले पड़ जाते हैं। जगह-जगह कांवरियों के पैरों पर दर्द निवारक स्प्रे, लोशन और तेल लगाकर सेवा किया जाता है। पवित्र जल लेकर जाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह पात्र जिसमें जल है, वह कहीं भी भूमि से न सटे। आस्था की इस पावन यात्रा में अद्भुत नजारे

देखने को मिलते हैं। किसी प्रकार की शारीरिक सीमा, और कष्ट इनको कमजोर नहीं कर पाता।

वासुकीनाथ मंदिर

वासुकीनाथ अपने शिव मंदिर के लिए जाना जाता है। वैद्यनाथ मंदिर की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है जब तक वासुकिनाथ में दर्शन नहीं किए जाते। मान्यता के अनुसार सुल्तानगंज से लाए गए गंगाजल को वैद्यनाथ धाम में अर्पित करने के बाद आधा जल वासुकिनाथ मंदिर के शिवलिंग में अर्पित किया जाता है। पूरे परिसर में दूध की खुशबू आती है जो अभिषेक के पश्चात परिसर में बहती है। यह मंदिर देवघर से 42 किलोमीटर दूर **जरमुण्डी** गाँव के पास स्थित है। यहाँ पर स्थानीय कला के विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है। मंदिर के बाहर कई छोटी-छोटी दुकानों में बांस की सुन्दर कलाकृतियाँ, लकड़ी के सामान, लोहे के सामान, पत्थरों के बने सामान, रंग-बिरंगी मालाएँ, खिलौने और अनेक प्रकार के आचारों का संग्रह विशेष रूप से आपका ध्यान आकर्षित करता है। वासुकिनाथ मंदिर परिसर में कई अन्य छोटे-छोटे मंदिर भी हैं। मंदिर से देवघर के मार्ग के बीच **घोरमारा** नामक स्थान यहाँ के मुख्य प्रसाद पेड़ों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। पेड़ों की छोटी-बड़ी बहुत सी दुकानें मेन रोड से लगी हुई मिल जाएगी।

मंदिर के आस-पास देखने के लिए तपोवन और नौलखा मंदिर है। कहा जाता है कि तपोवन वही स्थान है जहाँ रावण ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तपस्या की थी। नौलखा मंदिर की

बैजू मंदिर :-

बाबा वैद्यनाथ मंदिर परिसर के पश्चिम में देवघर के मुख्य बाजार में तीन और मंदिर भी हैं। इन्हें बैजू मंदिर के नाम से जाना जाता है। इन मन्दिरों का निर्माण बाबा वैद्यनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी के

वंशजों ने किसी जमाने में करवाया था। प्रत्येक मंदिर में भगवान शिव लिंग स्वरूप में स्थापित है।

वैद्यनाथ धाम में महाशिवरात्रि व पंचशूल की पूजा

विश्व के सभी शिव मंदिरों के शीर्ष पर त्रिशूल लगा दिखता है मगर वैद्यनाथ धाम परिसर के शिव, पार्वती, लक्ष्मी-नारायण व अन्य सभी मंदिरों के शीर्ष पर पंचशूल लगे हैं।

यहाँ प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि से 2 दिनों पूर्व बाबा मंदिर, माँ पार्वती व लक्ष्मी-नारायण के मंदिरों से पंचशूल उतारे जाते हैं। इस दौरान पंचशूल को स्पर्श करने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। वैद्यनाथ धाम परिसर में स्थित अन्य मंदिरों के शीर्ष पर स्थित पंचशूलों को महाशिवरात्रि के कुछ दिनों पूर्व ही उतार लिया जाता है। सभी पंचशूलों को नीचे लाकर महाशिवरात्रि से एक दिन पूर्व विशेष रूप से उनकी पूजा की जाती है और तब सभी पंचशूलों को मंदिरों पर यथा स्थान स्थापित कर दिया जाता है। इस दौरान बाबा व पार्वती मंदिरों के गठबंधन को हटा दिया जाता है। महाशिवरात्रि के दिन नया गठबंधन किया जाता है। गठबंधन के लाल पवित्र कपड़े को प्राप्त करने के लिए भी भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। महाशिवरात्रि के दौरान बहुत से श्रद्धालु अजगैबीनाथ सुल्तानगंज (बिहार) से कांवर में गंगाजल भरकर 108 किलोमीटर पैदल चलकर और 'बोल बम' का जयघोष करते हुए वैद्यनाथ धाम पहुंचकर ज्योतिर्लिंग पर गंगाजल अर्पण करते हैं।



सोशल मीडिया का जाल

व्यंग्य

श्री निखिलेश कुमार रजक
वरिष्ठ लेखापाल



आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने हमारी ज़िंदगी का अहम हिस्सा बनकर हमें एक-दूसरे से जोड़ दिया है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस जाल में हम कितनी बुरी तरह फंस चुके हैं? फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और समाचार चैनल - ये सब हमें सूचनाओं का एक सागर प्रदान करते हैं। लेकिन इसी सागर में छुपे हुए हैं फेक न्यूज के तूफान। आइए, हम इस पर एक नजर डालते हैं।

फेसबुक: “सच्चाई का मेहमान”

फेसबुक पर हर कोई एक पत्रकार बन जाता है। यहाँ का हर यूजर अपने घर बैठे विश्व की सबसे बड़ी घटनाओं पर अपने विचार साझा करता है। एक पोस्ट पर “जरा सा झूठ, जरा सा सच” का खेल खेलते हुए, हमें यह बताने की कोशिश करते हैं कि वे कैसे जानकार हैं।

ऐसा लगता है जैसे सभी लोग विश्व के विशेषज्ञ हो गए हैं।

“अरे भाई, क्या तुमने सुना? हमारे मोहल्ले में एक काला बंदर देखा गया!” ये खबर एक साधारण पोस्ट से शुरू होती है और कुछ ही घंटों में वायरल

हो जाती है। लोग इसे शेयर करते हैं, उस पर कमेंट करते हैं, और अंत में, ऐसा लगता है कि अब हर शहर, हर मोहल्ला काले बंदर से त्रस्त है। सच और झूठ का ये खेल फेसबुक पर मनोरंजन का साधन बन गया है।

फिर आती है एक और पोस्ट - “चाय पीते हुए किसी ने देखा कि हमारे फलां-फलां अभिनेता या नेता चाय में चीनी नहीं डालते!” बस, फिर क्या था, लोग चाय की रेसिपी में क्रांतिकारी बदलाव करने लगते हैं। अगले दिन, चाय की दुकानों पर “चीनी मुक्त चाय” की लाइन लग जाती है।

व्हाट्सएप्प: “खबरों का तेजी से फैलाव”

अब बात करते हैं व्हाट्सएप्प की। यहाँ तो सूचना का आदान-प्रदान इतना तेज़ होता है कि खुद समाचार चैनल भी शरमा जाएं। एक मजेदार मीम या एक चौंकाने

वाली खबर एक ग्रुप से दूसरे ग्रुप में इतनी तेज़ी से फैलती है कि लगता है जैसे इसके लिए किसी जादुई शक्ति का प्रयोग हो रहा है।

“सुना, अब सब्जियों में केमिकल मिलाने लगे हैं!” इस तरह की फेक न्यूज तेज़ी से फैलती है।

लोग अपने दोस्तों को भेजते हैं, फिर वो अपने दोस्तों को, और ऐसे ही एक नया हाहाकार मच जाता है। सब्जियों के दाम आसमान छूने लगते हैं और लोग सुपरमार्केट में आपस में भिड़ने लगते हैं।

व्हाट्सएप्प ग्रुप में एक और वायरल संदेश आता है -
“सुना है कि इस हरी सब्जी में अब नया वायरस है, जो आपके दिमाग को खराब कर देता है!”
बस, लोग उस सब्जी के खिलाफ महायुद्ध छेड़ देते हैं। चूड़ियों और ढोल-नगाड़े के साथ उस सब्जी के विरोध में महा प्रदर्शन की तैयारी होने लगती है।

इंस्टाग्राम: “लाइक्स और फॉलोवर्स का संसार”

इंस्टाग्राम पर तो हर कोई एक सेलिब्रिटी है। यहाँ फोटो और वीडियो का खेल चलता है। कोई भी एक अच्छी तस्वीर के साथ एक भ्रामक कैप्शन डालकर उसे वायरल करने की कोशिश करता है।

“जरा देखिए, ये फल खाने से कैंसर ठीक हो जाता है!” इस तरह की फेक जानकारी लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह बना देती है। लोग बिना सोचे समझे इसे अपना लेते हैं, और अंत में, डॉक्टर के पास जाने की नौबत आ जाती है।

इंस्टाग्राम पर एक और फेमस पोस्ट आती है - “चॉकलेट खाने से आपको वजन नहीं बढ़ता, ये तो सिर्फ एक मिथक है!” लोग उत्साह में चॉकलेट

की दुकान पर भाग जाते हैं और अगले दिन, सोशल मीडिया पर “चॉकलेट आहार” की हैशटैग ट्रेंड करने लगती है।

यूट्यूब: “शिक्षा का नया मंच” - यूट्यूब पर तो फेक न्यूज की कोई कमी नहीं। यहाँ हर कोई एक विशेषज्ञ है। किसी को भी एक वीडियो बनाकर कुछ भी कहने का अधिकार है। “गुप्त जानकारी: सरकार ने हमें कैद कर रखा है!” जैसे शीर्षक लोगों का ध्यान खींचते हैं।

“क्या आप जानते हैं कि बाथरूम में मोबाइल ले जाने से आपका आईक्यू बढ़ता है?” इस तरह की वीडियो देखकर लोग सोचते हैं कि शायद यही है जिंदगी का नया मंत्र। नतीजा? बाथरूम में सेल्फी लेते हुए एक नया ट्रेंड शुरू हो जाता है।

समाचार चैनल: “ब्रेकिंग न्यूज का महासंग्राम”

समाचार चैनल भी फेक न्यूज के इस महासंग्राम में पीछे नहीं हैं। “ब्रेकिंग न्यूज: कल दुनिया खत्म होने वाली है!” इस तरह की खबरें दर्शकों को चौंका देती हैं। चैनल्स के बीच की प्रतिस्पर्धा ऐसी होती है कि वे कभी-कभी सच को भी छोड़ देते हैं।

“दुनिया की सबसे बड़ी चाय की चुस्की!” जैसा शीर्षक देखकर लगता है जैसे चाय पीना अब

एक ओलंपिक खेल बन गया है। फिर, लोगों को चाय के कप की बजाय ट्रॉफी उठाने का हौसला देने वाले विज्ञापन आने लगते हैं।

भ्रामक विज्ञापन: “स्वास्थ्य के नाम पर धोखा”

अब बात करते हैं भ्रामक विज्ञापनों की। जब भी आप टीवी खोलते हैं, या इंटरनेट पर स्क्रॉल करते हैं, आपको ऐसे विज्ञापनों का सामना करना पड़ता है जो आपके स्वास्थ्य को लेकर ‘सुपरहिट’ दावे करते हैं। “ये गुटखा खाने से आपकी ताजगी बढ़ेगी!” या “ये सिगरेट आपको स्फूर्ति देगी!” जैसे विज्ञापन हमारे मूवी कलाकारों द्वारा प्रदर्शित किए जाते हैं।

हाल ही में एक से एक प्रसिद्ध अभिनेता गुटखे का विज्ञापन कर रहे हैं? उन्होंने अपनी पर्सनेलिटी से ऐसा जादू भरा कि लोग उन्हें देखकर सोचने लगे हैं कि शायद सच में गुटखा खाना सेहत के लिए फायदेमंद है! इसी तरह के विज्ञापनों में ये सितारे बड़े मजे से कहते हैं, “आपका दिन बना रहे, इस गुटखे के साथ!” और हम सोचते हैं, “वाह, क्या बात है!”

मूवी कलाकारों का प्रभाव: “सपनों की दुनिया का जहर”

हमारे फिल्मी सितारे जो स्क्रीन पर हमेशा हीरो लगते हैं, वो असल जिंदगी में हमें कितनी बार गुमराह करते हैं। ये सितारे अपने ब्रांड्स के लिए लाखों रुपए कमाते हैं और हमें दिखाते हैं कि ये उत्पाद कितने शानदार हैं। “बस एक चुटकी और जिंदगी बदल जाएगी!”

इन सितारों की चमक-दमक हमें भ्रमित करती है। “अगर प्रसिद्ध अभिनेता गुटखा खा सकते हैं या फिर कोल्डड्रिंक पीने से छतों पर कूदने की ताकत आ सकती है, तो मैं क्यों नहीं?” यही सोच कर युवा पीढ़ी इन उत्पादों को अपनाने लगती है। और ये सब देख कर हम सोचते हैं, “चलो, चलकर एक पैकेट ले ही लें!”

परिणाम: इन सबका परिणाम यह होता है कि आम जनता भ्रमित हो जाती है। वे क्या खाएं, क्या ना खाएं, क्या करें, क्या ना करें - सब सवालियों के जवाब कहीं खो जाते हैं। उनकी सोचने-समझने की शक्ति पर असर पड़ता है। लोग एक-दूसरे पर शक करने लगते हैं, और सामूहिक चिंतन की बजाय व्यक्तिगत मानसिकता को अपनाने लगते हैं।

निष्कर्ष: तो, इस पूरे परिदृश्य में हम सभी को एक सवाल करना चाहिए: क्या हम सच में इतने संवेदनशील हो गए हैं कि हमें बिना जांचे-परखे किसी भी जानकारी पर विश्वास कर लेना चाहिए? क्या हम अपने लिए एक बेहतर समाज नहीं बना सकते? जब तक हम फेक न्यूज और भ्रामक विज्ञापनों के इस जाल में फंसे रहेंगे, तब तक हम सच्चाई से दूर रहेंगे।

आखिरकार, हमें समझना होगा कि ये फेक न्यूज और भ्रामक विज्ञापन सिर्फ एक मज़ाक नहीं, बल्कि हमारी सोच, हमारी समझ, और हमारे समाज के लिए एक गंभीर खतरा है। इसलिए, चलो, हम सब मिलकर इस जाल से बाहर निकलें और सच को अपनाएं! और हाँ, अगली बार चाय पीते समय, कृपया चीनी डाल कर पीएं और कोल्डड्रिंक पीने के बाद छतों से कूदने से बचे!

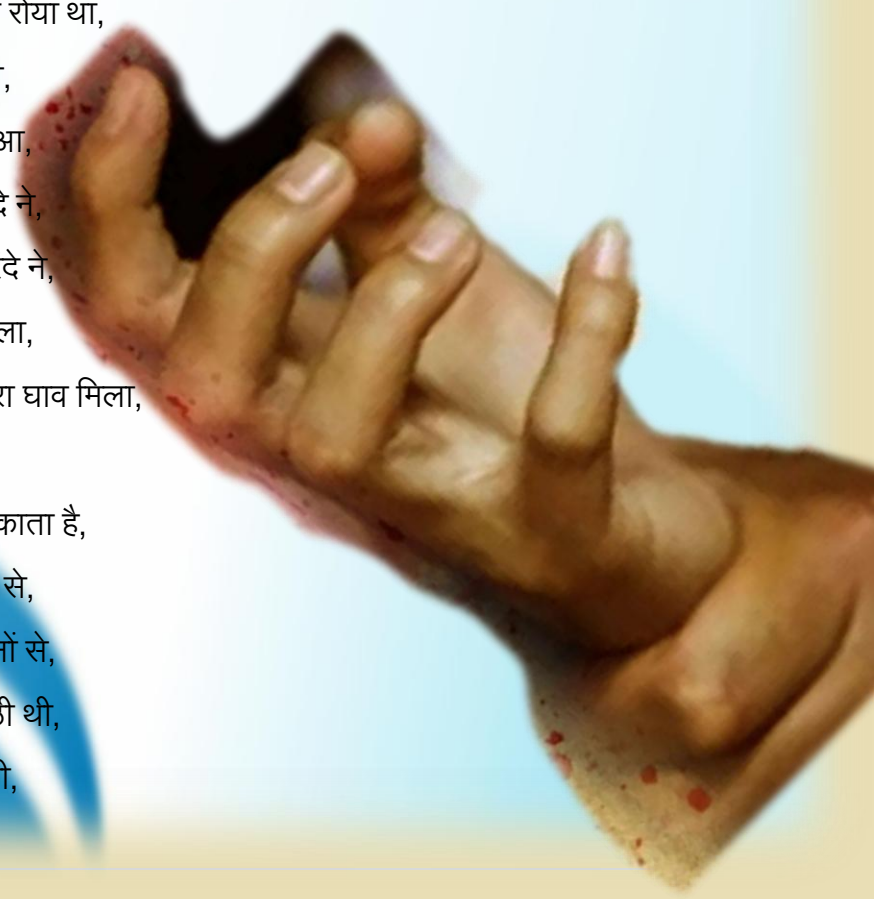
क्षुब्ध

कविता

श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा
लेखापाल



9 अगस्त को भारत छोड़ो, शुरु किया था गांधी ने,
9 अगस्त को ट्रेन उड़ी थी, काकोरी की आँधी में,
पर ये दोनों 9 अगस्त, तब अंग्रेजों पर भारी थे,
ऐसे 9 अगस्त के हम सब, कोटि- कोटि आभारी थे,
बीता समय, मिली आज़ादी, पुनः वक्त का खेल हुआ,
ऐसे ही इक 9 अगस्त से, हम सबका फिर मेल हुआ,
रात भयावह 9 अगस्त की, किसी प्रलय से कम न थी!
शायद ही कोई आँखें थी, स्तब्ध नहीं, जो नम न थी!
फूल सभी मुरझाए थे, और महक नहीं थी कलियों में,
सन्नाटा सा फैल गया था, कलकत्ता की गलियों में,
उस सुबह निकलने से पहले, सूरज ने आपा खोया था,
धरती भी काँप उठी उस दिन, और आसमान भी रोया था,
एक बार फिर से देखो, शोणितमय ये ब्रह्मांड हुआ,
निर्भया अभी भूले न थे, दोबारा अभया काण्ड हुआ,
अस्मिता राष्ट्र की तार-तार, कर डाला एक दरिंदे ने,
फिर से मानवता को शर्मसार, कर डाला एक दरिंदे ने,
एक बार फिर से बहनों को, असुरक्षा का भाव मिला,
अभी पुराना भरा न था, पुराने घावों पर नया गहरा घाव मिला,
इन बीते 12 सालों में, बस इतना अंतर आता है,
उस बार हुआ था दिल्ली में, इस बार मगर कोलकाता है,
घायल था पूरा जिस्म और, बह रहा रक्त नाखूनों से,
दोनों आँखें भी घायल थीं, चेहरा लथपथ था खूनों से,
धरती के ईश्वर की देखो, क्या किस्मत खूब अनूठी थी,
ज़ख्मी थे दोनों पैर और, दायीं अनामिका टूटी थी,



जब तक थी साँस, आखिरी तक, वो लड़ी, गिरी, लाचार हुई,
अस्मिता- मौत के इस रण में, आखिर में उसकी हार हुई,
जिसने भी देखा काँप गया, बेटी की ऐसी हालत पर,
माँ-बाप सिसकते हैं दिन भर, पहुँचा है केस अदालत पर,
ये देख कलम बोली मुझसे, मत लिखो 'देव' अब रहने दो,
अब लिखने की सामर्थ्य नहीं, कुछ आँखों से भी बहने दो,
आक्रोशित सारा देश और उद्वेलित यहाँ की मिट्टी है,
पर जाने क्यों सरकारों की आँखों पर अब तक पट्टी है,
पीड़ित को न्याय दिलाने की, हम सब में क्षमता बची नहीं,
आँखों के आँसू सूख गए, ममता में ममता बची नहीं!
इस पर खामोश रहे उनको, बेदर्द नहीं तो क्या लिखूँ,
मैं राजनीति को जनता का, सिरदर्द नहीं तो क्या लिखूँ,
सिया हरण पर लंका दल, जब मरणबद्ध हो जाता है,
पांचाली के चीर हरण पर, जहाँ युद्ध हो जाता है,
ऐसे जघन्य अपराधों को, वह भारत कैसे सहता है,
इतना सब कुछ घट जाने पर, वह मौन भला क्यों रहता है,
वसुधैव -कुटुंबकम् लिखा हुआ है, G-20 के बैनर पर,
उठता है प्रश्नचिन्ह अब तो, इन प्रतिनिधियों के मैनर पर,
मैं आज इन्हीं प्रतिनिधियों से, बस एक निवेदन करता हूँ,
आश्वासन नारी-रक्षा का, दे दो, आवेदन करता हूँ,
महज दिखावे खातिर केवल, निंदा करना बंद करो,
मानवता को बार-बार, शर्मिंदा करना बंद करो,
राज्य भरसे मत बैठो, कुछ खास करो तुम संसद से,
महिलाओं की रक्षा का बिल, पास करो तुम संसद से,
लौटे मुस्कान बच्चियों की, हर्षित आँगन चौबारा हो,
हैवान उठा न आँख सके ,न ऐसा कृत्य दोबारा हो,
अब माँ बहनों के चेहरों पर, फिर से न कोई उदासी हो,
ऐसे हर क्रूर दरिंदे को, बस, चौराहे पर फाँसी हो!!



प्रेम के दो बोल

कविता

श्री विवेक सिंघल
सहायक लेखा अधिकारी



प्रेम के दो बोल बोलो,
हरा और फीका,
प्रेम के दो बोल बोलो,
ये रंग और बेस्वाद
कहां से ले आई?
जैसे, झील और पर्वत
जैसे, नीला गगन और तारे
अब बोलो, प्रेम के दो बोला

कभी मीठी रस की धारा,
कभी विष का घूंट सा लगता।
कभी हंसता, कभी रोता,
मन ये क्यों इतना उलझता?

प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

एक पल में खिल उठता,
दूसरे में मुरझा जाता।
प्रेम का ये खेल अजीब सा,
मन को क्यों इतना बहलाता?
कभी लगता है स्वर्ग सा,
कभी लगता है नरक सा।

प्रेम का ये रंगीन संसार,
कभी खुशी, कभी बेकार।
कभी मिलन की बेताबी,
कभी विरह की पीड़ा।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

कभी आंखों में तूफान,
कभी दिल में शांत सागर।
प्रेम की ये अनंत यात्रा,



कभी रुकती नहीं न थमती।
कभी लगता है मंजिल मिल गई,
कभी लगता है अभी और जाना है।

कभी लगता है प्रेम अमर है,
कभी लगता है मेहमान क्षण भर है।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

प्रेम का ये रहस्यमयी खेल,
कभी समझ में आता है, कभी नहीं।
कभी लगता है सब कुछ खो दिया,
कभी लगता है सब कुछ पा लिया।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

कभी लगता है प्रेम ही सब कुछ है,
कभी लगता है प्रेम के बिना भी जी सकते हैं।
प्रेम का ये संघर्ष,
कभी खत्म नहीं होता।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

कभी लगता है प्रेम एक सपना है,
कभी लगता है ये सच्चाई है।
प्रेम का ये द्वंद्व,
मन को हमेशा उलझाता रहता है।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

कभी लगता है प्रेम ही जीवन है,
कभी लगता है जीवन ही प्रेम है।
प्रेम का ये अनंत चक्र,
चलता ही रहता है।
प्रेम के ये दो बोल,
कहां से आते, कहां जाते?

अंत में, प्रेम ही सब कुछ है,
यह सत्य है, अमर है।
प्रेम के ये दो बोल,
हमेशा दिल में गूंजते रहेंगे।

विज्ञापनों का अंधाधुंध प्रसार

कविता

सुश्री ज्योति यादव
लेखापाल



"दुनिया भर में शोर, विज्ञापनों का बाजार"

टीवी, रेडियो, मोबाइल, हर जगह शोर गूंजता,
विज्ञापनों का बौछार, दिमाग को घुमाता।
दांतों से लेकर कार तक, सब कुछ बेचने की होड़,
खरीदने की चाहत, बढ़ती जाती है रोज-रोज।

नए-नए प्रोडक्ट्स, हर पल आते हैं बाजार में,
पुराने को फेंक दो, ये सुनाई देता है हर आवाज में।
क्रेडिट कार्ड निकालो, खर्च करो बेफिक्र,
बढ़ता जाता है कर्ज, लेकिन होती नहीं फिक्र।

फैशन का चक्कर, चलता रहता है,
हर सीजन नया कपड़ा, हर कोई मांगता है।
ब्रांडेड सामान, खुशी का छलावा दिखाता,
दिखावा है सबका, ये कोई नहीं बताता।

बच्चों के मन में, खिलौनों का जुनून,
पढ़ाई छोड़कर, रहती हैं शॉपिंग मॉल की धुन।
माता-पिता परेशान, बैंक बैलेंस खाली,
खुशी कहाँ मिलेगी, जानता नहीं कोई ज्ञानी।

सेलिब्रिटीज भी बिकते हैं, प्रोडक्ट्स के साथ,
कहते हैं ये अच्छा है, वो अच्छा है, बड़ा नाटक।
पान-तंबाकू खाने में, बड़ी शान दिखाते,
विश्वास करते हैं हम, बिना सोचे समझे,
पर कभी झूठ का पर्दा नहीं हटाते।

समाज का दर्पण, ये विज्ञापन,
दिखाते हैं हमें, एक नया संसार।
जहाँ सब कुछ बिकता है, पैसे के लिए,
इंसानियत का भाव, होता है कमजोर।



कुछ लोगों की भीड़

कविता

श्री राहुल मैत्रेय
वरिष्ठ लेखापाल



कुछ लोगों की भीड़ आएगी
हाथों में नफरत लेकर
लबों पर नारे लेकर
धर्म-मजहब के सहारे लेकर
मेरे अपने कुछ मित्र पुराने लेकर

कुछ लोगों की भीड़ आएगी
हवा में हाथ उठाए
मुट्ठी भींचे
देश प्रेम के नज़ारे लेकर

मुस्कराते चेहरे लेकर
मुस्तैद जवान लेकर
कुछ लोगों की भीड़ आएगी
जो बेफिक्र होगी
मेरी कविताओं से जो नकार देगी
मेरे अस्तित्व को विद्रोही मुझे बताएगी
लेकिन जो ऋजु सत्य है
जीत अंत में उसी तरफ जाएगी।
कुछ लोगों की भीड़ आएगी।

कानून की सैर

व्यंग्य-कविता

श्रीमती पुष्पा

पत्नी, श्री रुपेंद्र कौशल



यहां हर दिन एक नया कानून बनता है,
और हर दिन एक नया नियम आता है।
कानून का जंगल इतना घना है
कि यहां खुद कानून ही भटक जाता है।
आज इस कानूनी जंगल की सैर करते हैं

देखें, यहां क्या-क्या अद्भुत होता है।

कानून का खेल

कानून का खेल बहुत ही रोचक है।
यहां कहानी एक ऐसे खेल की है
जिसमें हर कोई अपनी-अपनी चाल चलता है।
वकील, जज, पुलिस, राजनेता,
सभी इस खेल में शामिल होते हैं।
कोई कानून को अपने हित में तोड़ता है,
तो कोई इसे अपने हित में बनाता है
कोई तो इसे अपने हित में मोड़ता है
और तो कोई इसके खेल से बचने के लिए
अपने प्राण तक छोड़ता है।

कानून की परिभाषा

कानून की परिभाषा भी बहुत ही अनोखी है।
यहां कानून का मतलब है - कुछ लोगों का फायदा
और बाकी सबके लिए परेशानी चोखी है।
जी हां, आपने सही सुना!
यहां कुछ लोग ऐसे हैं
जिनके लिए यह सिर्फ एक औजार है,
जिसका इस्तेमाल वो अपने फायदे में करने के लिए तैयार हैं।
कुछ लोग औरों को कानून के जाल में फंसाकर
उनका पूरा जीवन करते बर्बाद हैं।

न्याय का तालाब

यहां न्याय का तालाब दिखता तो छोटा,
पर इतना गहरा है

इससे पार पाने में बहुत समय
और लाखों का लाखों पैसा लगता है।
यहां केस इतने लंबे चलते हैं
लोग बूढ़े तक हो जाते हैं।
कई बार तो ऐसा होता है
केस खत्म होने से पहले ही
कई लोग तो इस दुनिया से ही चले जाते हैं।

कानून का भूत

इस कानून का भूत हर जगह है छाया रहता।
आप सड़क पर रहे हो चल,
चाहे घर में बैठे हों अचल,
कानून का भूत आपको हर जगह है डराता।
आप कुछ भी करें, कहीं आप कोई कानून तो नहीं तोड़ रहे
इस बात का डर आपको सदा है सताता।

कानून का बाजार

ये कानून का बाजार है बहुत बड़ा।
यहां हर तरह के कानून का मिल जाता है धड़ा।
चाहे आपको कोई अपराध हो छिपाना,
चाहे आपको किसी बेकसूर को हो फंसाना,
या फिर किसी नए काम के लिए नया कानून हो बनाना।

कानून का मजाक

कानून का मजाक उड़ाते हैं रसूखदार
ये लोग कानून का हल्का रखते हैं किरदार
इसे खिलौने की तरह इस्तेमाल करते हैं।
इसे तो जेब में मुड़े हुए कागज की तरह रखते हैं,
कुछ नहीं तो उस कागज का जहाज ही बना उड़ा देते हैं।

कानून की अस्मिता

कानून को अपनी अस्मिता बचानी होगी
बहुत नहीं तो थोड़ी तो सख्ती दिखलानी होगी
अपराधी को अपराधी ठहराना होगा
बेकसूर की जान बचानी होगी
कानून का मजाक न बने
इसका खेल न बने
ऐसे उदाहरण की शक्ति जतानी होगी।



सफर

कविता

श्रीमती रिचा देवी

पत्नी, श्री अमित यादव, स.ले.अ.



अभी तो सफर शुरू हुआ है,
मंजिल पाना बाकी है।
मुश्किलें जो आई हैं जिन्दगी में,
उनसे लड़ना बाकी है।
अभी तो बस मुलाकात हुई है कांटों से,
फूलों से मिलना बाकी है।
जो जख्म दिए हैं वक्त ने,
उनका लड़ना बाकी है।
अभी तो संभल रहे हैं,
निखरना बाकी है।
रूकावट तो अनेक आएंगी सफर में,
ऐ तो बस शुरूआत है।
अभी तो सिर्फ बारिश आई है,
तूफान आना बाकी है।
अभी तो बस कदम बढ़ाए हैं,
मंजिल तक जाना बाकी है।

हर मुश्किल को पार करना है,

हर चुनौती को स्वीकार करना है।

अभी तो बस होंसला दिखाया है,

सपनों को सच करना बाकी है।



दिखावा

कविता

श्री विद्या प्रकाश

सहायक लेखा अधिकारी



समाज का नाटक, चलता रहता है,
हर कोई मुखौटा लगाए फिरता है।
दिखावा है सबका, सच कोई नहीं जानता,
झूठ बोलने में सब माहिर हैं।

पैसे की दौड़ में सब लगे हैं,
इंसानियत को भुलाने लगे हैं।
रिश्ते नाते सब बेकार हो गए,
दिलों में सिर्फ स्वार्थ और मतलब भर गए।

मोबाइल में लगे रहते हैं,
दुनिया से कट गए हैं।
समाज सेवा का नाम लेते हैं,
खुद में ही मग्न रहते हैं।

फैशन का चक्कर है चल रहा,
हर कोई दिखना खूबसूरत चाह रहा है।
अंदर से हैं खोखले,
बाहर से दमदार दिखाया जा रहा है।

नफरत फैलाते हैं, धर्म के नाम पर,
एकता का भाव कहाँ जा रहा है?
सबके मन में है अहंकार,
दुनिया भर में तनाव बढ़ता जा रहा है।

सच बोलना है गुनाह,
झूठ बोलना है फायदा।
दिखावा में ही सबका धंधा जारी है,
समाज में ये फैली लाइलाज बीमारी है।



नारी की व्यथा

कविता

श्रीमती सौ. अन्नपूर्णा नगरकर
अतिथि रचनाकार



नारी तू अबला नहीं तू सबला बना
तू शक्ति स्वरूपा माँ काली बन
मत जा तू निर्भया की राह पर,
बन जा तू एक तीखी कटार,
जान ले अपने को तू पहचान ले।

नारी तेरे कितने रूप हैं तुम भूल गई हो क्या रें
जाने अनजाने ही रह गई तेरी पहचान छुपी रें,
बन जा तू सूरज की तरह आग रें,
जो आए काले अंधेर साये तू जला कर राख कर दें।

माना तू बंधन में है फिर भी अंजान नहीं राह से।
जाना है तुझे किस राह यह तुझे मालूम है।
हो अंधेरा घना फिर भी तू बन अपना साया
साथ देना नारी, नारी अपने स्वाभिमान का
अभिमान मत करना पर स्वाभिमान को न छोड़ना।

जीना जरूरी है इसलिए नहीं जीना है तुझको,
कई रूकावटें आएंगी तेरे राह में रास्ता है मुश्किल
हर राह पार करनी है, हौसला कर बुलंद
तू शक्ति स्वरूपा है तू अपने आप को पहचान

हर कदम साथ न होगा कोई तेरे
तू बन कर ढाल अपनी, कर राक्षस का विनाश।
अस्तित्व पर हो आंच कभी तो तू झुकना नहीं,
शस्त्र उठा कर वार कर, अब देर ना कर तू।
नारी तू अबला नहीं, तू सबला बनकर बिगुल बजा।

जिंदगी की अजीब उलझन

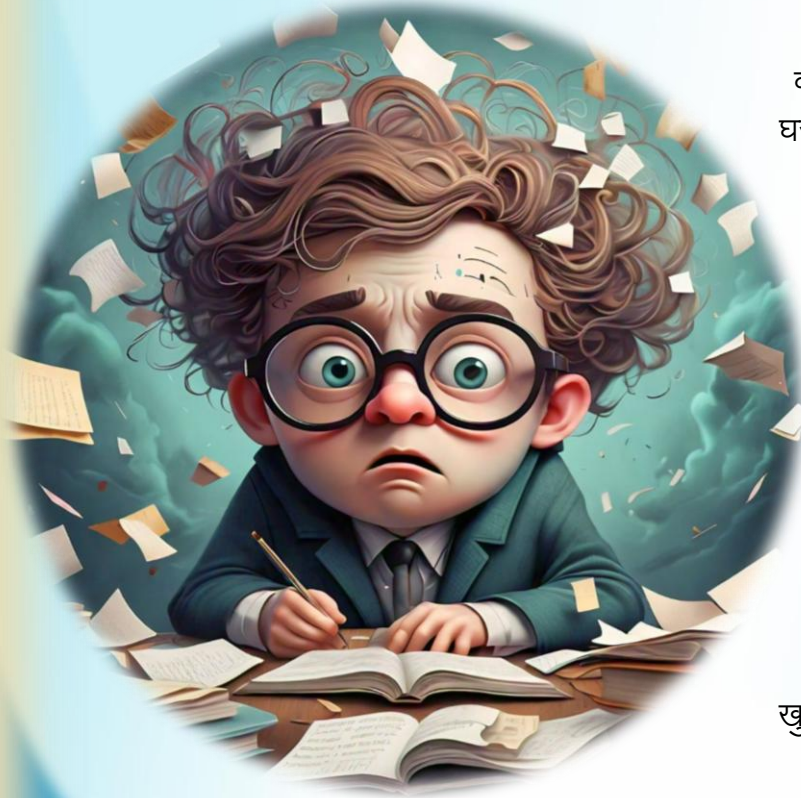
कविता

श्री प्रदीप यादव

सहायक लेखा अधिकारी



अजीब विडंबना है जिंदगी की।
शाम को घर लौटने का मन नहीं होता,
और सुबह बिस्तर से उठने का जी नहीं करता।
अजीब उलझन में हूं।



काम पर जाना है, मगर मन घूमने का करता है।
घर पर रहना है, मगर दोस्तों से मिलने का मन करता है।

खाना, खाना है, मगर डाइटिंग का ख्याल आता है।
अजीब उलझन में हूं।

पढ़ाई करनी है, मगर सोशल मीडिया लुभाता है।
एक्सरसाइज करनी है, मगर सोफे पर लेटने का मन करता है।

बचत करनी है, मगर शॉपिंग का बुखार चढ़ता है।
अजीब उलझन में हूं।

प्यार करना है, मगर डर लगता है धोखे का।
अकेले रहना है, मगर साथी की तलाश रहती है।
खुश रहना है, मगर परेशानियां लगातार आती हैं।
अजीब उलझन में हूं।

कभी लगता है सब कुछ ठीक है,
कभी लगता है कुछ भी ठीक नहीं।
कभी हंसता हूं, कभी रोता हूं।
अजीब उलझन में हूं।

जिंदगी का ये सफर है नायाब,
कभी ऊपर, कभी नीचे।
कभी हवा में, कभी धरा पर।

शायद यही जिंदगी है,
एक अजीब सी उलझन।
जिसका हल ढूंढते-ढूंढते,
हम जीते हैं ये जीवना।

बीड़ी-सिगरेट

हास्य कविता

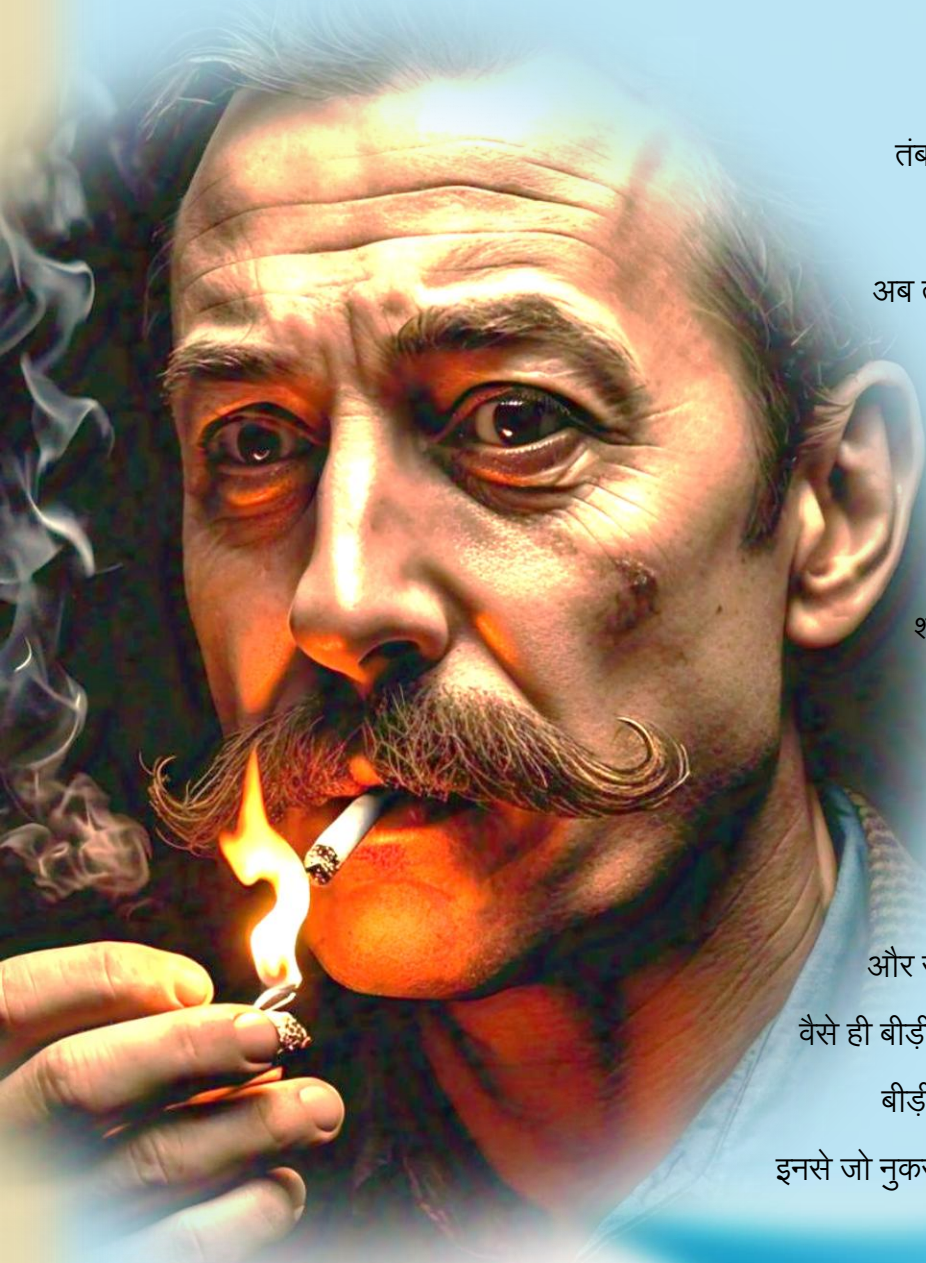
श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक



जब से बीड़ी-सिगरेट हमारे भारत में आई है,
ये सबके मन में छाई है।
तंबाकू है इसका काला
हम भी काले
हमने अपने भगवान भी बनाए काले
बाल हमारे सिर पर लहराते जैसे नाग काले
मन में भी तो सांप लोटते काले-काले
इसलिए सबको तंबाकू अच्छा लगने लगा
अजगर की भांति अपनी जकड़ पकड़ने लगा
शनैः शनैः समाज का अंग बनने लगा
काली चाय का समाज में जो मेल था
वो बीड़ी-सिगरेट से और आगे बढ़ने लगा
सुना है बादशाहों का तंबाकू,
आम-सेब की खमीर से बनता था
और संग गुलाब जल का चढ़ता था
इलायची, केसर और कस्तूरी मिलाई जाती थी
सोने-चांदी के हुक्के से धुआं जो निकलता था
महल सारा उस गंध से महक पड़ता था
अब बीड़ी-सिगरेट कैसी भी हो,
चाहे सौंफी, मिंट हो या हो जाफरानी,
जहां वो चलती हो, वहां बैठने में नहीं कोई नादानी
रिक्शे वाला बीड़ी का कश ले या फिर
चाहे अमीरों के सिगार का हो खेल
मुंह से खुशबू आती जैसे निकला हो कूड़े का तेल
68 | वी रां ग ना



Rupendra
19/08/20



खींच कर जब मुंह से धुआं निकलता है
धुएं के छल्लों से आकाश में उठता है
तब ऐसे जान पड़ता है
जैसे नदी समुद्र में मिलने को भगी चली जाती है
तब मन को और आनंद आता है
क्योंकि मन का सुख ही नहीं
तंबाकू से सामाजिक मेल-जोल भी तो बढ़ता है
क्या जवान और बूढ़े
अब तो बच्चे और लड़कियां भी इस पंगत में जुड़े
गांवों में तो और भी तेज दौड़ लगाई है
जिसको बिरादरी से बाहर कर दिया गया
उसका हुक्का-पानी बंद कर दिया गया
कहीं किसी ने नहीं लिखा,
शास्त्रों में नहीं लिखा, संविधान में नहीं लिखा
और ना ही किसी विधानसभा में पास हुआ
परंतु हुक्का-पानी विधान बन गया
जैसे वनस्पति आने से घी
चाय के आने से तुलसी
और साबुन के आने से उबटन की महिमा घट गई
वैसे ही बीड़ी-सिगरेट से टी.बी. कैंसर की क्षमता बढ़ गई
बीड़ी-सिगरेट से हृदय की धड़कन बढ़ सकती है
इनसे जो नुकसान होता, उसकी लंबी सूची बन सकती है।
बीड़ी-सिगरेट से केवल भीतरी ही नहीं
बाहरी भी अधिक हानि होती है
जैसे मूँछ मुंडवाने की प्रथा उसी के कारण निकली होगी
जब बीड़ी-सिगरेट जलाते समय
माचिस की तीली की अग्नि, मूँछों से लिपटी होगी।



उछल कर आसमां छू लो

कविता

सुश्री काजल वर्मा
सहायक लेखा अधिकारी



दो अजनबी मिले थे एक कहानी बनी थी
दोनों के मिलन से एक नई जिंदगानी बनी थी
उस जिंदगानी की कहानी सुनाती हूं।
उसकी जिंदगी की 04 पंक्तियां गुनगुनाती हूं।

हुआ था सबेरा आज भी आज भी सूरज निकला था
आने वाला है एक नन्हा मेहमान ऐसा शुभ मुहूर्त निकला था
आएगी एक नन्ही परी ऐसा सबको अंदेशा था
उस दंपति के लिए मानो मातारानी का संदेशा था

आखिर आ गयी वो घड़ी जिसकी सबने आस लगायी थी
मिठाई तो आज भी खूब बटी थी ढोलक भी खूब बजाई थी
फिर भी घर में खुशियों की जगह मायूसी छायी थी
क्योंकि घर में आज बेटे की जगह बेटी जो आई थी

शुरू हो गया था सितम का एक नया दौर
आ गया था बंदिशों का चक्रवात चारों ओर
ऐसे उठना, ऐसे बैठना, जोर से मत हँसना
धीरे-धीरे चलना तमाम पाबंदिया लगायी थी
वो मासूमियत वो भोलापन, वो अठखेलियां,
वो अल्हड़पन वो नादानियां कहीं खो गयी थी
क्योंकि समाज की वीभत्सता से अंजान वो बेटी आज बड़ी हो गई थी

एक नन्ही कली धरती पर खिली ही थी लोग कहने लगे पराई है
कर दो हाथ पीले बेटी के कन्यादान की घड़ी आई है।
सबकी बातें सुनकर उस बेटी की आंख भर आई
इन बंदिशों से तंग आकर उसने फिर आवाज उठाई

चौके-चूल्हे वाली बेटी इस युग से अब कहीं न होगी
चांद सितारों से आगे जा कर मंगल पर मंगलमय होगी



संस्कारों की थाम डोर जब क्षितिज छोर तक जाएगी
बेटी अब मां से नहीं, मां बेटी से पहचानी जाएगी

बेटी की बातों पर फिर मां ने अंकुश लगाया
और आधुनिक युग की आधुनिकता को कुछ इस प्रकार समझाया
बनो तुम रानी लक्ष्मी बाई बैठो राज सिंहासन पर

परन्तु स्त्री की मर्यादा को मत भूलो
बनो तुम राधा अपने कृष्ण की परन्तु रुक्मिणी के अधिकारों को मत भूलो
बन जाओ तुम सावित्री मौत को भी परास्त कर दो
है ये आधुनिक युग तुम उछल कर आसमां छू लो

बनो तुम कल्पना चावला उड़ान भरो अंतरिक्ष की
परन्तु पापा की परी बनकर सोशल मीडिया की गलियों में मत डोलो
बनो तुम रंभा, उर्वशी, मेनका सी अप्सरा
गार्गी, मैत्रीय, घोषा, आपाला सी विद्वान बनो
और बन तुम मोहिनी तीनों लोक अपन नाम करो
परन्तु चंद फॉलोवर्स, लाइक्स के चक्कर में
अपने जूड़े मत खोलो
हां है ये आधुनिक युग तुम उछल कर आसमां छूलो

बना तुम सानिया मिर्जा, मिताली राज, ऐश्वर्या सी रूपवान बनो
बनो तुम चांद सी शीतल, मदर टेरेसा सी दयावान बनो और
कोशिश करे जो कोई तुम्हारी आन को
तो बन जाओ तुम फूलन देवी, गोली अपराधियों के सीने के पार करो
नहीं बनेगी अब कोई निर्भया और मौमिता ऐसा तुम संकल्प ले लो

हां है ये आधुनिक युग तुम उछल कर आसमां छू लो।



फेक न्यूज़

कविता

श्रीमती वंदना अग्रवाल
पत्नी, श्री विवेक सिंघल स.ले.अ.



सच का बाजार बंद,
झूठ की हो रही दुकान
आजकल का बस यही है चलन
मोबाइल में खबरें, हर पल नई कहानी,
सच या झूठ, कौन जाने, सब है सानी।
फेक न्यूज़ का बाजार गर्म,
किसकी कहां होती है किरकिरी,
शेयर करते रहते, बिना सोचे समझे, बड़ी बेफिक्री।
वीडियो, फोटो, सब बन जाते हैं वायरल,
सच का पता नहीं, बस फैलनी होती है झूठ की स्याही।
हेडलाइंस दमदार, खबरें झूठी,
लोगों को गुमराह करते, ये फेक न्यूज़ के सिपाही।
राजनेता, पत्रकार, सब मिलकर करते हैं खेल,
अपने फायदे के लिए, सच को देते हैं बदला
जनता को बांटते, नफरत फैलाते,
देश की एकता को कमजोर करते जाते।
सोशल मीडिया का जाल,
फंसाता है सबको,
फेक न्यूज़ है जिसका नाम,
सच और झूठ का फासला होता है कमा
लाइक, शेयर, कमेंट, यही है सबका काम,
सच जानने की कोशिश होती है कमा
इस फेक न्यूज़ ने निकाला है देश का दमा
चलती जहां, वहां फूटते जैसे बम
आतंकवाद से ज्यादा गहरी हैं इसकी जड़ें,
इसने तो महान से महान आदमी तक हैं जकड़े,
इस से क्या नुकसान होगा, ये किसको पड़े,
बस अपना लाभ देखते, नेता, गुंडे और चैनल
इनकी भीड़ और बस टी.आर.पी. बढ़े
कोई अगर पकड़ा जाए,
तो सभी लिबरल उसे बचाने में जुड़े
कैसे इस फेक न्यूज़ से पीछा छूटे
कोई तो इस पर ध्यान करें।

संघर्ष

कविता

श्री अमित यादव
सहायक लेखा अधिकारी



सपने बड़े हैं
तो संघर्ष भी बड़ा होगा।
जीतेगा वही
जो मैदान में खड़ा होगा।
दिन-रात एक करनी होगी।
तब जाकर सफलता मिलेगी।
अगर जिंदगी में कामयाब
और मंजिल को है पाना,
तो उठो,
जागो,
दौड़ों
और नए पथ की खोज करो।
लक्ष्य की ओर कदम बढ़ना,
थककर नहीं है रुकना।
निरंतर पथ पर चलना है
लक्ष्य को पाना।
हर मुश्किल को पार करना है,
हर चुनौती को स्वीकार करना है।
राह में आएंगे कई मोड़,
पर हिम्मत नहीं हारना।
हर कदम पर सीखना है,
हर पल को जीना है।



मेरी बेटी के लिए एक प्रार्थना

कविता

श्री नवीन कौशिक

सहायक लेखा अधिकारी



मेरी प्यारी बेटी, तुम हो सुनहरी सुबह,
सपनों की दुनिया में खोई, तुम एक नन्ही कली।
संसार की धूप-छाँव से, रहो दूर तुम,
सच्चाई और प्रेम से भरी, हो तुम्हारी हर गली।

आसमान की ऊँचाई में, अपनी पहचान बनाओ,
धोखे की आंधियों में, रहो स्थिर तुम।
हर खुशी में बसी रहो, हर गम से जुदा रहो,
फूलों की खुशबू सी, रहो महकती तुम।

तुम्हारे मन में सदा, जलती रहे ज्ञान की ज्योत,
और हर आंसू की बूंद में, छिपा हो एक सबक।
सजग रहो तुम, सच कहो तुम और हार न मानो,
करो अपने सपनों को साकार, जाना न तुम बहक।

सब देखो सब सीखो, विचार करो सब करो,
पर दुनिया की रंगीनियों में, खो न जाना तुम।
तुम एक रौशन तारा हो, औरों को भी राह दिखाओ,
इस अंधेरे एकाकी शून्य में, ध्येय हो जाना तुम।

सपनों के रंगों से, सजाओ तुम अपना जीवन,
मेरी प्यारी दुलारी हो, हो तुम मेरी अरदासा।
जब मैं ना भी रहूँ, तब भी तुम मुस्कराओ,
यही है मेरी प्रार्थना, यही है मेरी आसा।

कभी कहा नहीं मैंने

कविता

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक



कभी कहा नहीं मैंने कि
तुम्हें एक नजर देख कर ही मन पुलकित हो उठता है,
मन की बगिया के फूल महक उठते हैं,
यूंही मुझे महका दिया करो,
सूखे पत्तों को खड़का दिया करो।
कभी कहा नहीं मैंने कि
तुम ही तो इस निराधार के आधार हो,
सूखी नदिया के कछार हो,
बिन तुम्हारे मैं ऐसी नैया
जिसकी न कोई पतवार हो।
कभी कहा नहीं मैंने कि
बैठो दो पल साथ
कर लो थोड़ी-सी बात
न जाने कब बीत जाए
ये दिन और ये रात।
कभी कहा नहीं मैंने कि
आने से तुम्हारे
सुकून भी आप ही चला आता है,
जैसे ठंडी हवा संग
बौछार भी खिंचा चला आता है।
कभी कहा नहीं मैंने कि
तुम बिन मैं अधूरी-सी नहीं हूँ
सूरज बिन दिन और चंदा बिन रात

नीर बिन बदली और सुमन बिन तितली
भी कहाँ अधूरी होती है।

संकल्प

कविता

श्री विनेश कुमार

पिता, श्री हेमंत कुमार, लेखापाल



कल वह सब नहीं था जो आज है,
आज है जो वो कल होगा नहीं।
बस गुजरता जाता यूँ ही समय
ठहरता है समय एक पल नहीं ॥

छोड़ दो व्यर्थ के सारे भरम,
अब करो जो तुम्हें करना कर्म।
बीत जाता जो फिर मिलता नहीं,
क्या समझ पाये ना इसका मर्म ॥

बीत जाता जो समय व्यर्थ में,
याद आता है वह हर हाल में।
कर नहीं पाओगे तुम कुछ मगर,
फंस जाओगे भंवर के जाल में ॥

करना है काम जो उसको करो,
आयेंगी बाधा अगर, मत डरो।
मंजिल पर बढ़ाते रहो कदम,

बस दृढ़ संकल्प,
निज मन में करो।

भोपाल-मेरा घर

कविता

सुश्री ज्योति यादव
लेखापाल



भोपाल, ये राजा भोज की धरती,
तेरी गलियों में छुपा इतिहास है,
जिसका ये अपना अद्वितीय आभास कराते हैं।

तेरे महलों की चौखट पर, बादशाहों के निशान है,
तेरी खूबसूरती में, ताज महल का भी मान दिखलाते हैं।

तेरे झीलों की छांव में, प्रेमी अपना प्यार झलकाते हैं,
तेरी हरियाली में, कवि अपनी कलम बहकाते हैं।

तेरे भोजपुर मंदिर, अपने शिखरों की चोटी से,
उमड़ता धार्मिक आस्था का संगीत गाते हैं।

तेरे वन विहार अभयारण्य,
प्रकृति का अपना सुरीला गीत सुनाते हैं।

तेरी संस्कृति, तेरी विरासत, तेरा गौरव,
भोपाल, अपने आप में एक नया जहान बताते हैं।

भोपाल, तेरे इतिहास अपनी गहराई में,
एक अद्वितीय ज्ञान छिपाते हैं।

तेरे बेगमों की धीरता, तेरे शहीदों की वीरता,
इतिहास का हर पन्ना है अपने बलिदान से लिखाते हैं।

तेरी गलियों में घूमती हैं आज भी इतिहास की शान
वो ऐतिहासिक चेहरे, जो तुझे तेरा मान दिलाते हैं।

भोपाल, तेरे इतिहास की खुशबू,
तेरी फिज़ाओं को आज भी महकाते हैं।

तेरे इतिहास की कहानियां, तेरे ऐतिहासिक लोग,
भोपाल, तेरे इतिहास का हर अनमोल अध्याय सिखाते हैं।

प्रकृति

कविता

कु. वास्तविक कौशल

पुत्र, श्री रूपेन्द्र कौशल



प्रकृति है माँ हमारी,
यह बनाती दुनिया सारी।
हवा आती शीतलता लाती,
पानी लाती प्यास बुझाती।

धरती माँ उपजाती अन्न,
सूरज देता ऊर्जा गुणा
चंदा मामा रात में आते,
तारों संग गगन में मुस्काते।

नदियाँ बहती जीवन देती,
फूलों की खुशबू मन बहलाती।
पक्षी गाते मधुर गीत,
प्रकृति की यह सुंदर प्रीता।

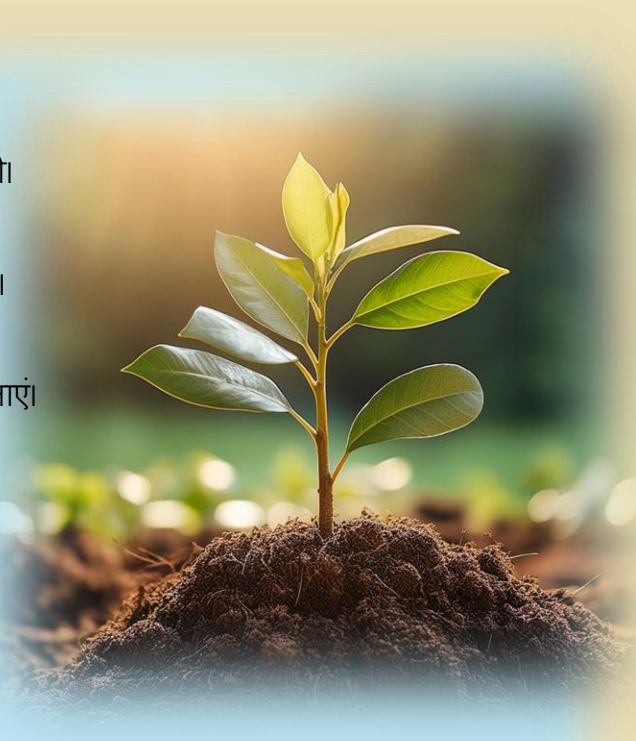
बादल छाए जब घनघोर,
धरती धोए बरसात की झोरा
पर्वतों से झरने बहते,
संगीत सा जल तरंगें कहते।

कोयल की कूक मधुर बहार,
भौरों की गुंजन संगीत सारा।
तितलियाँ रंग बिखेरती फिरती,
बगिया में फूलों पर तिरती।

आसमान में इंद्रधनुष सजता,
वर्षा के बाद यह खुशियाँ बजता।
धरा की हरियाली लुभावनी,



प्रकृति की यह छटा मनभाविनी।
इस धरती को स्वर्ग बनाएं,
प्रकृति के इस उपहार को पाएं।
इसकी सुंदरता को संजोएं,
हरियाली से जीवन को भरपूर बनाएं।



वृक्ष लगाओ धरा बचाओ,
प्रकृति का कर्ज चुकाओ।
इसकी रक्षा हमें है करनी,
जीवन की यही है कहानी।



रेल-यात्रा

हास्य कविता

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक



जाना हो कहीं भी दूर,
सबसे सरल है इसका फितूरा
ले लो टिकट, बैठो फटाफट,
खाना-पीना, जगना-सोना,
बेफिक्र हो जहाँ रहना,
नए सहयात्री से मेल हो,
लोगों की रेलम - पेल हो।
हंसी ठहाका, चिल्लम-चिल्ली,
कभी लगे ठहाका कभी उड़ा ली
खिल्ली।
भूख लगे तो खर्च होगा पैसा,
खाना आपको चाहे लगे जैसा।
दाल-रोटी है बिकती सोने के मोल,
यही है रेल यात्रा का झोल।
दिन-रात सब एक की एक,
जागो सोओ लगाकर टेका
हिलती डुलती जैसे झूला,
कोई सामान तो कोई चार्जर ही

जाना हो कहीं भी दूर,
सबसे सरल है इसका फितूरा
ले लो टिकट, बैठो फटाफट,



भूला।

रेल के भी नाम हैं अनेक,
याद रखें तो काम है नेका
पैसेंजर, एक्सप्रेस, सुपरफास्ट और मेल,

जाना सभी को है जल्दी चाहे हो कोई रेल।

कोई रुकती हर स्टेशन में,

कोई केवल जंक्शन में,

पहले रेल बस रेल थी, अब तो
रेलम पेल है,

रेलवे स्टेशन के सामने बड़ा से
बड़ा मेला फेल है।

स्लीपर और एसी कोच तो जैसे
तैसे ठीक हैं

हालत जनरल कोच की भैया
बड़ी ही वीक है।

सीट पाने के लिए लगी है भीड़,
न मिल पाए तो मचती है चिढ़।

दो मिनट रुकने का है सारा
खेल,

तभी तो मचती है धक्कम-पेला।

जेब गर कर दी ढीली ,

तो सांस भी सुकून की ले ली।

कौन बच्चा, कौन बूढ़ा, कौन
औरत कौन जवान,

सब को अपना-अपना काम, नहीं किसी को आराम।

जैसी भी हो हालत,

इसके बिना कहां किसी को राहता।

कम खर्च में तय करते लम्बी डगर

यही है भारतीय रेलवे का सफरा।



तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो

कविता

श्री कृष्ण कुमार जांगिड़
सहायक लेखा अधिकारी



तुम इस बंद कमरे की खिड़कियां खोल
रोशनी को अंदर आने तो दो
ये जो अँधेरा पसरा है मिथ्याओं का यहाँ

उम्मीद की किरणों को इसे मिटाने तो दो

अगर देर रात काम से लौट रही हो
और तुम्हारे पड़ोसियों को ये लगे कि
काम नहीं तुम कोई आवासीय कर के लौट
रही हो

तो तुम बेपरवाह बन जाओ थोड़ा और
क्योंकि तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो

ये जो चार रिश्तेदार हैं
सच को किनारे रख तुम्हारे बारे में
जो ये झूठ बुन रहे हैं उन्हें बुनने दो
तुम बेपरवाह बन जाओ थोड़ा और
क्योंकि तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो

कभी जो तुम जीत कर घर आओ
और तालियां तानो में बदलती दिख रही हो
तुम हारे बिना ज़रा भी

थोड़ा बेपरवाह फिर बन जाना
क्योंकि तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो

जो तुम्हें करनी पड़े कभी अपने ही किरदार की नुमाइश
और छुपाने पड़े वो दाग
जो आँचल में तुमने कभी अपने लगने ही न दिए हो
और करनी पड़े फिर से अपने गुम अस्तित्व की तलाश
तो तुम बेपरवाह बन जाना थोड़ा और
क्योंकि तुम्हारा सच तो सिर्फ तुम जानती हो

दफ्तर की कहानी

कविता

श्री आविद खान

एम.टी.एस.



हर सुबह की नई रवानी,
सूरज की किरणों से उर्जा ले,
चल पड़ते हैं हम सभी दफ्तर की ओर
लेकर अपनी वही कहानी।
कागजों का ढेर, फाइलों की कतार,
कोई मीठी चाय तो कोई कॉफी का यार,
बॉस की नजर, काम की मार,
फिर भी मुस्कान कभी ना हार,
कम्प्यूटर की टक-टक, कीबोर्ड की चाल,
पत्रों का आना और बैठकों का हाल,
दिन गुजरता ऐसे, जैसे कोई गीत,
हर पंक्ति में कुछ नया अजीब,
साथी दिखाते हैं दोस्ती के रंग,
कभी हँसी-मजाक, कभी काम के संग,
छोटी-छोटी बातें,
बड़े-बड़े सपने,
दफ्तर की दीवारें, साक्षी हैं सबके,
शाम ढले, थकान लिए हम,
फिर भी संतोष,
कुछ और कर दिखाने का मन,
कल फिर होगी नई शुरुआत,
दफ्तर की दुनिया में अपनी पहचान के साथ,
रोज एक नई मंजिल तक पहुंचने की है ठानी,
यही है दफ्तर की कहानी ॥



जब कॉल तुम्हारी आती थी

कविता

श्री जय प्रकाश

सहायक लेखा अधिकारी



तब जीवन प्यारा लगता था,
हर दिन और रात होती न्यारी थी,
हर दिन के झंझावात में भी
जब कॉल तुम्हारी आती थी,



यूं मन जब अलसित होता,
हृदय विहीन सा चित्त होता,
फिर आंखें मूढ़ें-मूढ़ें
सब चिंताएं दूर हो जाती थी
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

यूं कौन सुने जग के किस्से,
ये सोच भी मन इतराता था,
पर तुम घर के पोस्ट बॉक्स
सी
हर किस्से बतलाती थी,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

जब भी हिम्मत, थक-हार
कर,
मंजिल से घबराती थी,
ममता के कुछ चंद शब्द ही,
फिर नई उमंग भर लाती थी,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

जब भी जीवन प्रेम-बंध को
तरसाती, तरपाती थी,
फिर तेरी करुणा ममता से,
हृदय परिपूर्ण हो जाती थी,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

जब बाधा से राह भरे,
चल एक कदम न पाते थे,
तब संबल के चंद शब्द भी,
एक नई स्फूर्ति लाती थी,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

लोगों के विकृत विचार से
जब खुद को मन भरमाता था,
पर तेरा कुछ कहने कर भर से ही,
इक नई चेतना आती थी,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

घोर समस्या हो मन में,
तब भी भृकुटित मुखड़े पर भी
मुस्कान खिल आती थी,
मानो वह रिंग नहीं, रामबाण हो,
जब कॉल तुम्हारी आती थी।

तेरे ममता के कपोलों के,
अब हर इक शाख में झंझोड़ आती है,
विचलित इस हृदय की मानो,
रग-रग तुम्हें बुलाती है,
चेहरा क्या? हृदय भी भिंच जाता है,
माँ, अब जब भी याद तुम्हारी आती है।



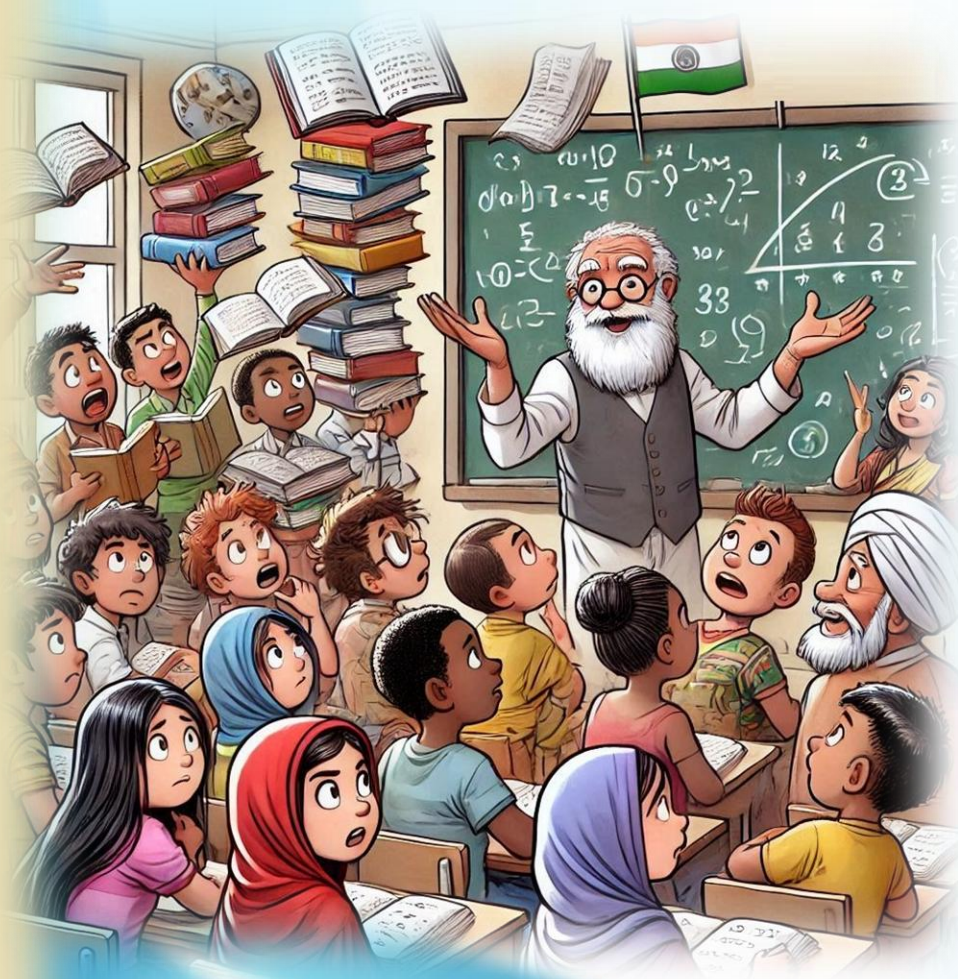
शिक्षा व्यवस्था

व्यंग्य कविता

सुश्री दीप्ती वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक



स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी,
सबका लक्ष्य है बस नौकरी।
पढ़ाई का मतलब सिर्फ डिग्री,
ज्ञान की बातें हैं भूली-बिसरी।



किताबों में भर दिया ज्ञान,
पर जीवन जीने में नहीं है कोई
ध्यान।

नौकरी पाने की होड़ में,
नैतिकता को दिया है कुचला।

टीचर पढ़ाते हैं रटने के लिए,
नहीं सिखाते हैं सोचने के लिए।
परीक्षा में नंबर लाना है सबका
लक्ष्य,
ज्ञान का विकास है भूल चुके
सभ्य।

कोचिंग सेंटरों का बोलबाला,
बच्चों का बचपन हो रहा बर्बाद।
कॉम्पटीशन की दौड़ में भाग रहे हैं,
खुश रहना नहीं है किसी को याद।

शिक्षा व्यवस्था में है गड़बड़,
बच्चे बन रहे हैं रोबोट तड़ातड़ा।
कब तक चलेगा ये खेल,
कब तक होता रहेगा बेबसी का मेल?

हिंदी हमारी शान

कविता

सुश्री नसरीन हनफी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



हिंदी हमारी शान है
हिंदी हमारी पहचान है
हिंदी हमारी आन-बान है
और हिंदी से ही हिन्दुस्तान है

हिंदी हमारे देश के माथे की बिन्दी
और हिंदी में ही बसते प्राण है
हिंदी से ही निराला, बच्चन, पंता
और हिंदी से ही सूर, तुलसी और रसखान है॥

हिंदी सीखो और सिखाओं
क्योंकि हिंदी सरल, सहज और आसान है
हिंदी में कार्य करने की आदत बना लो
क्योंकि हिंदी सभी भाषाओं में प्रधान है

हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा में ही नहीं
प्रतिदिन हिंदी में काम करो
क्योंकि हिंदी सभी भाषाओं में महान है

हिंदी जन-जन का अभिमान है
और हिंदी से ही हमारा स्वाभिमान है
हिंदी हमारी शान है
हिंदी हमारी आन-बान है
और हिंदी से ही हिन्दुस्तान है ॥



प्रभु का अंश

कविता

सुश्री वर्षा कंवर

बहन, श्री गौरव प्रताप सिंह, कल्याण सहायक



कार्य से पूर्ण हो
समय के पाबंद
यथार्थ जीवन जीने योग्य
स्वार्थ से परे हो
प्रकृति के परिभाषक हो
जीवन की प्रेरणा हो
अनंत आकाश हो
अमूल्य रत्न हो
पारस हो
समय के पहिये हो
दृष्टि हो
छोटी सी कली हो
तुम मंदिर की मूरत हो
तुम दर्द हो
तुम ही औषधि हो
तुम अंश हो
तुम समस्त पृथ्वी हो
तुम तिनका हो
तुम समस्त अंतरिक्ष
और तुम ही मैं हूँ
मैं ही तुम हो
मलिनता को त्याग दूँ
तो स्वयं ब्रह्मांड में
मैं प्रभु का अंश हूँ ॥



खेलकूद प्रतिस्पर्धा

श्री गौरव प्रताप सिंह

कल्याण सहायक



अप्रैल 2024 से दिसम्बर 2024 तक खेलकूद संबंधी गतिविधियां

1. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता जोकि दिनांक 11.11.2024 से 13.11.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने विजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।

2. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता जोकि दिनांक 07.10.2024 से 09.10.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें श्री सुजय चतुर्वेदी 40+ पुरुष वर्ग एवं युगल में विजेता रहे तथा सुश्री हिमानी चतुर्वेदी महिला वर्ग में चतुर्थ स्थान पर रही जिन्होंने अंतर क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।



3. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता जोकि दिनांक 22.10.2024 से 25.10.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।

4. कार्यालय की संयुक्त टीम ने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग अंतर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की और कार्यालय

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) असम गुवाहाटी द्वारा दिनांक 19.11.2024 से 23.11.2024 तक आयोजित अंतर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में कार्यालय की संयुक्त टीम ने उप विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।



5. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रतियोगिता जो कि दिनांक 25.10.2024
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
अहमदाबाद द्वारा आयोजित की
40+ आयु वर्ग में श्री सुजय
का गौरव प्राप्त किया।



की अंतर क्षेत्रीय वैंटरन
से 28.10.2024 तक
(लेखापरीक्षा-II) गुजरात,
गई थी जिसमें पुरुष
चतुर्वेदी उपविजेता होने

राष्ट्रीय स्तर वर्ष 2024-25 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम मध्य प्रदेश, ग्वालियर में कार्यरत सुश्री निकिता, जिनका चयन मुख्यालय (सी.ए.जी.) टीम की ओर से हुआ था, ने **86 वरिष्ठ राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप-2024** प्रतियोगिता जोकि दिनांक 05.09.2024 से 08.09.2024 तक हैदराबाद में आयोजित की गई थी, में भाग लिया।
2. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, मध्य प्रदेश, ग्वालियर में कार्यरत श्री गौतम वालिया, जिनका चयन मुख्यालय (सी.ए.जी.) टीम की ओर से हुआ था, ने **86 वरिष्ठ राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप-2024** प्रतियोगिता जोकि दिनांक 20.12.2024 से 24.12.2024 तक बेंगलूर में आयोजित की गई थी में भाग लिया।
3. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, मध्य प्रदेश, ग्वालियर में कार्यरत श्री पार्थिव, जिनका चयन शिमला टीम की ओर से हुआ था, ने **उत्तरी क्षेत्र बैडमिंटन टूर्नामेंट-2024 (North Zone Badminton Tournament-2024)** प्रतियोगिता जोकि दिनांक 04.09.2024 से 08.09.2024 तक चंडीगढ़ में आयोजित की गई थी में भाग लिया।

अखिल भारतीय सिविल सेवा वर्ष 2024-25 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. अखिल भारतीय सिविल सेवा फुटबाल स्पर्धा जो दिनांक 19.12.2024 से 24.12.2024 तक गोवा में आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर एवं भोपाल शाखा में कार्यरत फुटबाल खिलाड़ियों ने आर.एस.बी. इंदौर टीम की ओर से भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस - 2024



स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर प्रधान महालेखाकार ध्वजारोहण एवं वृक्षारोपण करते हुए



सरस्वती पूजन

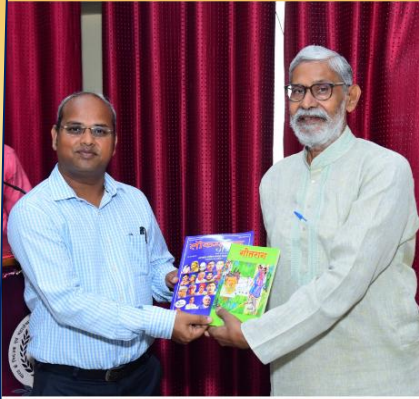


प्रधान महालेखाकार एवं उप-महालेखाकार/प्रशासन का सम्मान करते हुए

स्वतंत्रता दिवस-2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण



हिंदी परबवाड़ा - 2024



हिंदी पखवाड़ा - 2024 के दौरान आयोजित नारा लेखन प्रतियोगिता के विजेता



प्रथम पुरस्कार - श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल

बड़े गर्व से दे रहा, हूँ सबको संदेश ।
भाषा हिंदी सी नहीं, न भारत सा देश ॥

विविधताओं से भरे इस देश में लगी
भाषाओं की फुलवारी है ।
इनमें हमको सबसे प्यारी लगती मातृभाषा
हिंदी हमारी है ॥



द्वितीय पुरस्कार - सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव, आशुलिपिक ग्रेड-॥



तृतीय पुरस्कार - श्री अरब कुमार कौशिक, लिपिक

जिस तरह हर सुहागन के माथे की शान
है उसकी बिंदी ।
वैसे ही हर भारतवासी की जान है हमारी
राजभाषा हिंदी ॥

हिंदी पखवाड़ा - 2024 के दौरान आयोजित अन्य प्रतियोगिताओं के विजेता



प्रथम पुरस्कार - सुश्री सरस्वती आर्य, सहायक पर्यवेक्षक
राष्ट्र भक्ति गीत गायन प्रतियोगिता



द्वितीय पुरस्कार - श्री अवधेश कुमार पाण्डेय, व.ले.अ.
राष्ट्र भक्ति गीत गायन प्रतियोगिता



तृतीय पुरस्कार - श्री बालकृष्ण, लिपिक
राष्ट्र भक्ति गीत गायन प्रतियोगिता



प्रथम पुरस्कार - श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल
निबंध लेखन प्रतियोगिता



द्वितीय पुरस्कार - सुश्री काजल वर्मा, सहायक लेखा अधिकारी
निबंध लेखन प्रतियोगिता



तृतीय पुरस्कार - श्री गौरव गुप्ता, लेखापाल
निबंध लेखन प्रतियोगिता



प्रथम पुरस्कार - सुश्री नसरीन हनफी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता



द्वितीय पुरस्कार - सुश्री दिव्या बंधरिया, लेखापाल
स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता



तृतीय पुरस्कार - सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव, आशुलिपिक ग्रेड-II
स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता



प्रथम पुरस्कार - श्री मनीष कुमार सिंह, सहा. लेखा अधि.
श्रुत-लेखन प्रतियोगिता



द्वितीय पुरस्कार - सुश्री श्रुति वर्मा, लेखापाल
श्रुत-लेखन प्रतियोगिता



तृतीय पुरस्कार - श्री नवीन कौशिक, सहा. लेखा अधि.
श्रुत-लेखन प्रतियोगिता





बाएं से दाएं - श्री हरजिन्दर सिंह, उप-महालेखाकार/प्रशासन, श्री दीनदयाल वर्मा, वरि. उप-महालेखाकार/प्रशासन, श्री भगवान स्वरूप 'चैतन्य'- मुख्य अतिथि, श्री सिद्धार्थ बोन्दाडे, महालेखाकार एवं श्री सर्वोत्तम श्रीवास्तव, उप-महालेखाकार/वी.एल.सी.

ऑडिट समाह - 2024



ऑडिट सप्ताह-2024 उद्घाटन



महालेखाकार श्री सिद्धार्थ बोन्डाडे एवं मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त, ग्वालियर ऑडिट सप्ताह-2024 का उद्घाटन दीप प्रदीपन से करते हुए



ऑडिट सप्ताह-2024 के दौरान बच्चों के लिए आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता



ऑडिट सप्ताह-2024 के दौरान बच्चों के लिए आयोजित नृत्य प्रतियोगिता









ऑडिट सप्ताह-2024 के दौरान आयोजित ऑडिट वॉकथॉन



ऑडिट सप्ताह-2024 के दौरान आयोजित रंगोली प्रतियोगिता



ग्वालियर स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा कार्यालयों के मध्य आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

महालेखाकार एवं श्री अमन वैष्णव, आयुक्त, ग्वालियर नगर निगम



ऑडिट सप्ताह के दौरान स्थानीय शासन लेखापरीक्षा पर चर्चा



ऑडिट सप्ताह के दौरान ग्वालियर स्थित लेखापरीक्षा एवं लेखा कार्यालयों के मध्य आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता

ऑडिट सप्ताह-2024 का समापन समारोह





विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता



क्रिकेट प्रतियोगिता की विजेता टीम, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, ग्वालियर

क्रिकेट प्रतियोगिता की उप-विजेता टीम, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), ग्वालियर





उप-महालेखाकार/प्रशासन (दाएं) राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए नराकास, ग्वालियर में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर, शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए।



राजभाषा परिवार, शील्ड एवं प्रशस्ति प्राप्ति के दौरान

बाएं से: सुश्री दीप्ती वर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल (कनिष्ठ अनुवादक), श्री रवीन्द्र सिंह बिष्ट (वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन), श्री आर. तारक नाथ, उप-महालेखाकार, सचिव/नराकास, ग्वालियर, श्री हरजिन्दर सिंह, उप-महालेखाकार/प्रशासन, श्री अतुल भार्गव (वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन) एवं श्री नीरज कुमार (हिंदी अधिकारी)



सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2023-24 में विभागीय हिंदी पत्रिका का वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालयों में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर को 'वीरांगना' के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु 'प्रथम स्थान' प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक:- 04.12.2024

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,
एवं महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर



सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2023-24 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर को 'द्वितीय स्थान' प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक:- 04.12.2024

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,
एवं महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

